ISSN 2349-6614

सितम्बर 2022

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

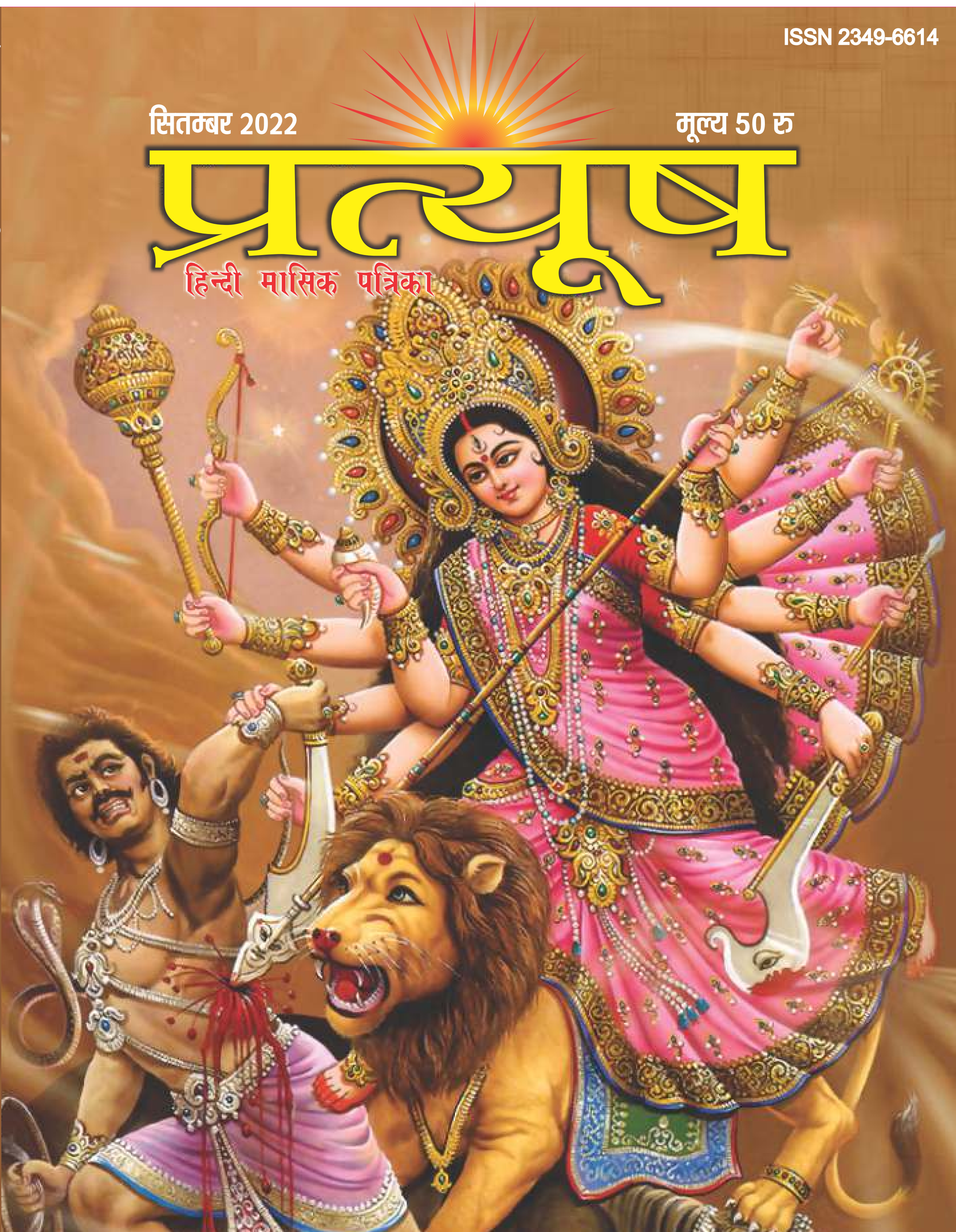

देहि सौभाग्यं-आरोग्यं देहिमे परमं सुखम्।
रूपं देहि जय देहि यशो देहि द्विषोजहि।।

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 20 अंक 5, Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2021-23 Posting Date: 27th-28th of Every Month RNI No. RAJHIN/2003/9297 Posting Office: Chetak Circle, Udaipur

TECHNO INDIA NJR
INSTITUTE OF TECHNOLOGY
Approved by AICTE. Affiliated to RTU
MOST TRUSTED ENGINEERING COLLEGE IN UDAIPUR
NAAC ACCREDITED
Techno NJR Students are working in Global Companies all over the World
Google Akshay Nandwana
amazon Harshvardhan Chittora
QUALCOMM Ritvik Dave
SWIGGY Harsh Rajora
COMPASS Som Nath
Deloitte. Nikunj Parikh
cadence Mukesh Soni
McAfee Divyanshi Chauhan
JUSPAY Nayan Depra
QUALCOMM Hitesh Jain
Deloitte. Arushi Mehta
pwc Harshita Paliwal
ORACLE Vibha Jain
Google Ranjeet Rajpurohit
truecaller Divyanshu Dadheech
CISCO Avni Gupta
HARMAN Vishal Jain
vmware Himani Patwa
KPMG Virendra Singh
NOKIA Anshul Patel
QUALCOMM Jayant Pancholi
IBM Mohammed Faisal
Groww Ananya Bhatnagar
Paytm Sanjay Rajpurohit
Deloitte. Payal Jawaria
pwc Varun Shrivastava
redBus Falguni Gandhi
ORACLE Vidushi Kothari
salesforce Bhavya Jain
Capgemini Dyutee Solanki
Panasonic Hitendra Singh
CRED Nikunj Sharma
ERICSSON Devkaran Singh Rathore
Fidelity Priyamvada Chundawat
SIEMENS Jayant Nahar
SYNOPSYS Deepankshi Chittora
ORACLE Narayan Lal Menariya
Uber Rishit Sondhi
Red Hat M. Sajid Mansoori
Walmart Global Tech Piyush Aswani
More than 1000+ Alumni are working in companies like
tcs Infosys IBM wipro Capgemini Cognizant Mindtree accenture metacube L&T Infotech SIEMENS
And Many More
LIMITED SEATS | ADMISSIONS OPEN
APPLY THROUGH REAP:
REAP Code : 1075
APPLY ONLINE:www.technonjr.org
VISIT CAMPUS:
Monday to Saturday | 9 AM to 5 PM
CONTACT:
Mr. Gaurav Kumawat: 8696932753
Mr. Abhishek Sharma: 8696932730
Dr. Abrar Ahmed: 8619022377
No. of Seats | Branches
Computer Science and Engineering (CSE) | 180 Seats
Civil Engineering (CE) | 30 Seats
Mechanical Engineering (ME) | 30 Seats
Electrical Engineering (EE) | 30 Seats
Electronics and Communication Engineering (ECE) | 30 Seats
www.technonjr.org /technoindianjr /@technoindianjr /@technonjrofficial
Campus Address : Plot-SPL-T, Bhamashah (RIICO) Industrial Area,Kaladwas, Udaipur 313003 (Rajasthan) India

नवरात्रि की हार्दिक शुभकामनाएं

सितम्बर 2022 वर्षः 20, अंकः 5

प्रत्यूष

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

विपणन प्रबंधक नितेश कुमार, नंदकिशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी
कुलदीप इंदौरा, कृष्णकुमार हरितवाल
धीरज गुर्जर, अभय जैन
लालसिंह झाला, ओम शर्मा
अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमंत भागवानी, डॉ. राव कल्याणसिंह
अशोक तम्बोली, सुंदरदेवी सालवी

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग चेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक - संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
"रक्षाबंधन", धानमण्डी, उदयपुर-313 001

अंदर के पृष्ठों पर...

आतंकी का अंत

आतंकी सरगना जवाहिरी हलाक् 16

अर्पण-तर्पण

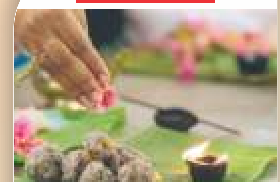

पितरों के सम्मान का पर्वः श्राद्धपक्ष 18

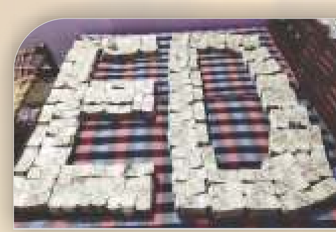

धनशोधन

ईडी को सुप्रीम 'अभयदान' 30

प्रसंगवश

घटती आमदनी, बढ़ती महंगाई 34

राष्ट्रमंडल खेल

दमखम वाले खेलों में लहराया भारत का परचम 38

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. एम.आई.ए., उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी उदयपुर से प्रकाशित।

Happy Independence Day
Jai Shanker Rai
Director
Ganpati
Infravision Pvt. Ltd.
प्रधान मंत्री
आवास योजना-शहरी
मुख्यमंत्री
जन आवास योजना-2015
RERA APPROVED
REG. NO.: RAJ/P/2018/850
GANPATI GREENS
SHREE GANPATI AFFORDABLE HOMES LLP
AFFORDABLE HOUSING AT UDAIPUR
www.ganpatihousing.com
203, 2nd Floor, Doctor's House Complex,
Post & Telegraph street, Madhuban, Udaipur (Rajasthan)
Tel/Fax: 0294-2429118, E-mail: gipl.udaipur@rediffmail.com

बिहार ने की महाराष्ट्र की भरपाई

पिछले दिनों महाराष्ट्र में शिवसेना, कांग्रेस व राष्ट्रवादी कांग्रेस की संयुक्त सरकार को शिवसेना में बगावत के कारण अल्पमत में आने पर इस्तीफा देना पड़ा था और भाजपा ने बगावती गुट का मुख्यमंत्री स्वीकार कर अपने पूर्व मुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणनवीस को उप मुख्यमंत्री बनाकर परोक्ष रूप से सत्ता को फिर से हासिल कर लिया था, लेकिन जिस दिन यानी 9 अगस्त को वहां मत्रिमण्डल शपथ ग्रहण कर रहा था, ठीक उसी वक्त बिहार की सत्ता मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के पाला बदलने से उसके हाथ से निकल गई। नीतीश ने 9 अगस्त की शाम राज्यपाल को इस्तीफा सौंपा और 10 अगस्त को कांग्रेस, राजद व वामदलों के सहयोग से सत्ता का दावा पेश कर आठवीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ले ली। भाजपा से अलग होने के बाद बनी इस नई गठबंधन सरकार में लालू पुत्र तेजस्वी यादव की ताजपोशी भी उपमुख्यमंत्री के रूप में हो गई।

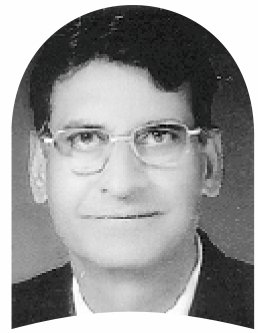

महाराष्ट्र जैसे बड़े प्रदेश की सत्ता की चाबी हासिल करना भाजपा की बड़ी सफलता थी तो बिहार का हाथ से निकलना उतना ही बड़ा झटका भी है। महाराष्ट्र में लोकसभा की 48 सीटें हैं तो बिहार में 40 सीटें। पिछले लोकसभा चुनावों में बिहार की इन 40 में से 33 सीटें जदयू-भाजपा को मिली थीं। जाहिर है, 2024 में महागठबंधन से लोहा लेते हुए इतनी सीटें हासिल करना भाजपा के लिए मुश्किल होगा। इसके अलावा नीतीश कुमार के रूप में विपक्ष को एक प्रभावशाली चेहरा भी मिला है, जिसके अपने फायदे हैं। जाहिर है, इन सबसे विपक्ष का मनोबल बढ़ा है। इसी साल मार्च में पांच राज्यों में हुए चुनावों में भाजपा ने यूपी, गोवा और उत्तराखंड में सत्ता बनाए रखी थी, तब लगा था कि 2024 के लोकसभा चुनाव में भाजपा के सामने शायद ही कोई टिक पाएगा। इस स्थिति में बिहार की सत्ता में महागठबंधन की वापसी के बाद कुछ बदलाव हुआ है। मार्च में पांच राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के बाद विपक्षी खेमे में जो निराशा घर कर गई थी, बिहार में भाजपा के सत्ता से बाहर होने के बाद वह जरूर कम होगी। इसी साल गुजरात और हिमाचल में विधानसभा चुनाव होने हैं। दोनों ही राज्यों में भाजपा सत्ता में है। बिहार के बाद हो सकता है विपक्ष इन राज्यों में अधिक ताकत से उसका मुकाबला करे।

राजनीति में न कोई स्थायी मित्र होता है और न स्थायी शत्रु। इसे भारतीय राजनीति में अगर किसी नेता ने सर्वाधिक चरितार्थ किया तो वह नीतीश ही हैं। उन्होंने एक ऐसा चक्र बनाया है, जिसमें वही सत्ता के शीर्ष पर स्थायी भाव से बने रहे। बस उनके अहं की तुष्टि होती रहे। क्या ऐसे व्यक्ति को बिहार और भारत की जनता भविष्य में भी अपने नेता के रूप में स्वीकार कर सकती है? निष्पक्षता से विचार करें तो ऐसा कोई कारण नहीं दिखेगा, जिससे गठबंधन तोड़ने का फैसला तार्किक लगे।

नीतीश कुमार ने 2015 में भी राजद के साथ गठबंधन कर चुनाव लड़ा और सरकार बनाई। दो वर्ष से कम समय में ही उन्होंने गठबंधन तोड़ दिया। गठबंधन बनाए रखने, बनाने और तोड़ने के रिकार्ड का सेहरा इन्हीं के सिर ही सजा है। इस मायने में वह भारतीय राजनीति में पहले नेता हैं जो गठबंधन बनाते और तोड़ते हुए भी मुख्यमंत्री बने रहे हैं।

नीतीश के भाजपा से अलग होने के फैसले की वजह रिश्तों में खटास तक सीमित मानना वाजिब नहीं होगा, बल्कि इसके गर्भ में देश की भावी सियासत की पृष्ठभूमि भी पल रही है। राजद, कांग्रेस और वाम दलों ने नीतीश के समर्थन में जो गर्मजोशी दिखाई है, उसके निहितार्थ गहरे हैं। कांग्रेस और वाम दलों ने तो दो कदम आगे बढ़कर एक दिन पहले ही बिना शर्त समर्थन का एलान कर दिया। बिहार में जदयू की धरातल कुर्मी, कोइरी, महादलित और अति-पिछड़ी जातियों का समीकरण है, तो राजद का एमवाई यानी मुस्लिम, यादव। कांग्रेस और वाम दलों का सीमित ही सही अपना-अपना जनाधार है। यह गठबंधन बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखंड में भाजपा के सामने बड़ी चुनौती खड़ी कर सकता है। झारखंड में कुर्मी जाति की आबादी 15 प्र.श. और कोइरी छह प्रतिशत है। उत्तर प्रदेश में कुर्मी छह फीसदी हैं। बिहार, यूपी और झारखंड में यादव, मुस्लिम, महादलित, कोइरी-कुर्मी और अति-पिछड़ी जातियों को गोलबंद करने की कोशिश हो सकती है। बिहार में नए समीकरण के आकार लेने की चर्चा के साथ ही यह कयास भी लगने लगे हैं कि नीतीश कुमार राष्ट्रीय राजनीति में विपक्षी राजनीति के एक बड़े किरदार बनकर सामने आएंगे।

भाजपा व जेडीयू के बीच पिछले कुछ समय से मनमुटाव चल रहा था। नीतीश विधानसभा अध्यक्ष से नाराज थे और केन्द्र सरकार की कई नीतियों पर भी उन्हें एतराज था। जब गठबंधन तोड़ने की राजनीति जन्म लेती है तो आरोप-प्रत्यारोप शुरू होने के साथ ही कुछ न कुछ नाराजगी के कारण गिनाए जाते हैं। लेकिन बिहार की सियासत में जो नया खेल शुरू हुआ है उसके पीछे की मुख्य वजह यह मानी जा रही है कि नीतीश कुमार की महत्वाकांक्षा अब राष्ट्रीय राजनीति में उतरने की है। राजनीति के जानकारों का मानना है कि वे प्रधानमंत्री पद के दावेदार बनना चाहते हैं। वे विपक्षी एकता की तरफ से रणनीति बनाएंगे, जिसमें प.बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को फेल माना जा रहा है। महागठबंधन की सरकार संभालने के बाद उन्होंने स्पष्ट संकेत दिया कि वे 2024 के बाद मुख्यमंत्री पद पर नहीं रहेंगे। 2024 में आम चुनाव होने हैं। अब देखना है कि नीतीश राष्ट्रीय राजनीति में उतरने की कैसी रणनीति बनाते हैं और ममता बनर्जी अपने लिए कौनसा रास्ता चुनती हैं? इतना जरूर है कि नीतीश बाबू ने नए सहयोगियों को दबाव में लेकर 2024 तक तो अपनी कुर्सी को सुरक्षित कर ही लिया है।

उपराष्ट्रपति चुनाव में भी ध्वस्त हुई विपक्ष की एकता

भाजपा की रणनीति के अनुकूल धनखड़ की जीत

रमेश जोशी

देश के 14वें उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ वकालत से लेकर राजनीति तक प्रभावशाली चेहरा रहे हैं। राजस्थान के झुंझुनू में जन्मे धनखड़ संसद के उच्च सदन को चलाने वाले प्रदेश के दूसरे नेता होंगे। इससे पहले भैरोंसिंह शेखावत इस पद पर रह चुके हैं।

पश्चिम बंगाल के पूर्व राज्यपाल जगदीप धनखड़ देश के 14वें उपराष्ट्रपति बन गए हैं, उन्होंने 11 अगस्त को द्रोपदी मुर्मू से शपथ ग्रहण की। उपराष्ट्रपति ही राज्यसभा के सभापति होते हैं। नवनिर्वाचित राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू और उपराष्ट्रपति धनखड़ दोनों ही ऐसी उच्च सांवधानिक अधिकृतियां हैं, जिनका देश की आजादी के बाद जन्म हुआ। पूर्ववर्ती उपराष्ट्रपति वैंकया नायडृ का जन्म भी स्वतंत्रता के बाद ही हुआ था। राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार धनखड़ ने 6 अगस्त को संपन्न चुनाव में 528 वोट हासिल करके विपक्ष की साझा उम्मीद्वार मार्गरेट अल्वा को 346 वोट से पराजित किया। अल्वा को 182 वोट ही मिल पाए। कुल 725 सांसदों ने मतदान किया था, जिनमें से 710 वोट वैध पाए गए, 15 मतपत्रों को अवैध घोषित किया गया। वैंकया नायडू का कार्यकाल 10 अगस्त को पूरा हो गया। उनहें 8 अगस्त को राज्यसभा में विदाई दी गई। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा कि नायडू को उन्होंने राष्ट्रसेवा की अलग-अलग भूमिकाओं में देखा है और इसे अपना सौभाग्य मानते हैं कि इनके साथ कंधा से कंधा मिलाकर काम करने के अवसर भी मिले। एक कार्यकर्ता, विधायक, सांसद, पार्टी अध्यक्ष, केबिनेट मंत्री के रूप में तो इनका कार्य देश के लिए हितकारी रहा ही है, उपराष्ट्रपति और सभापति के रूप में भी हमने इन्हें अलग-अलग जिम्मेदारियों में लगन से काम करते देखा है। सदन में विपक्ष के नेता मल्लिकार्जुन खड़गे, टीएमसी सांसद डेरेक ओ ब्रायन व अन्य नेताओं ने उनके कार्य, व्यवहार तथा सदन संचालन के कौशल की प्रशंसा करते हुए उन्हें शुभकामनाएं दी। जगदीप धनखड़ का निर्वाचन भाजपा की भावी रणनीति के लिए भी अनुकूल माना जा रहा है। इससे पार्टी को विभिन्न राज्यों और लोकसभा चुनाव में तो लाभ मिलेगा ही, साथ ही सामाजिक समीकरणों को मजबूत करने में भी सफलता मिलेगी। जाट समुदाय से आने वाले धनखड़ के जरिए भाजपा पं. उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब औद दिल्ली की कुछ लोकसभा सीटों पर अब अपनी दावेदारी मजबूत करेगी। इसके अलावा उनका किसान पुत्र होना भी पार्टी के लिए फायदेमंद होगा। धनखड़ भले ही संघ और भाजपा काडर से नहीं है, लेकिन उसके सर्वथा मुफीद हैं। पिछली बार भाजपा राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति को उत्तर और दक्षिण भारत से लाई थी, इस बार इसे बदलकर पूर्वी और पश्चिमी भारत किया है। इससे पार्टी का सर्वदेशीय चेहरा उभरकर सामने आएगा। उपराष्ट्रपति चुनाव में एनडीए के उम्मीदवार की जीत पहले से ही तय थी, लेकिन बावजूद इसके विपक्ष ने अपना प्रत्याशी मैदान में उतारा। वजह साफ थी कि वह विपक्ष के तौर पर लड़ते हुए दिखाना चाहता था, लेकिन वह इसमें

सियासी सफर

- झुंझुनूं के गांव किठाना में जाट किसान परिवार में 1951 में पैदा हुए जगदीप धनखड़ ने राजस्थान हाईकोर्ट से लेकर सुप्रीम कोर्ट तक वकालत की। हाईकोर्ट में कई हाईप्रोफाइल मुकदमों की पैरवी की। जेपी आंदोलन के दौरान भी धनखड़ सक्रिय रहे थे।
- राजस्थान विश्वविद्यालय से बीएससी, एलएलबी की पढ़ाई, आईआईटी, एनडीए और आईएएस के लिए भी चयन हुआ, लेकिन उन्होंने वकालत चुनी।
- राजस्थान हाईकोर्ट से वकालत शुरू की, राजस्थान बार काउंसिल के चेयरमैन पद पर भी रहे।
- जनता दल से राजनीति की शुरुआत
- वर्ष 1889 में झुंझुनूं से सांसद बने
- 1989 से 1991 तक वीपीसिंह व चन्द्रशेखर सरकार में केन्द्रीय मंत्री रहे
- 1991 में लोकसभा चुनाव में जनता दल ने टिकट नहीं दिया तो कांग्रेस में शामिल हो गए।
- अजमेर के किशनगढ़ से कांग्रेस के टिकट पर 1993 में चुनाव लड़ा और विधायक बने।
- वर्ष 2003 में कांग्रेस को छोड़कर भाजपा में शामिल हो गए।
- 30 जुलाई 2019 को बंगाल का राज्यपाल नियुक्त किया गया।
- राजस्थान में जाटों को आरक्षण दिलवाने में अहम भूमिका निभाई।

सफल नहीं रहा। विपक्ष के पास खुद को मजबूती से पेश करने की कोई ठोस रणनीति नहीं दिखी। नतीजतन उसका प्रदर्शन बेहद खराब रहा। यह स्थिति फिर साबित करती है कि विपक्ष बंटा हुआ है तथा किसी भी चुनाव में उसके लिए एकजुट हो पाना आसान नहीं है। भाजपा को अगले दो साल में कई राज्यों और लोकसभा चुनाव का सामना करना है। इनमें राजस्थान सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, जहां अभी कांग्रेस मजबूती के साथ सत्ता में है। चूंकि धनखड़ राजस्थान से हैं, ऐसे में भाजपा को उनका चुना जाना फायदे का सौदा लग रहा है। राजस्थान के बाद भाजपा लोकसभा चुनाव में उतरेगी। पं. उत्तरप्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, पंजाब और दिल्ली की लगभग 40 सीटे ऐसी हैं, जो जाट बहुल क्षेत्र से हैं। इस चुनाव में तृणमूल कांग्रेस ने इस चुनाव से दूरी बनाए रखी। वह मतदान में शामिल नहीं हुई, हालांकि उसके दो सांसदों ने धनखड़ के पक्ष में मतदान किया। अकाली दल ने भी बिना मांगे एनडीए को समर्थन दिया। शिवसेना के एक बड़े हिस्से (शिंदे गुट) का भी एनडीए को साथ मिला। वाईएसआर कांग्रेस और बीजद ऐसे दल हैं, जो एनडीए का हिस्सा नहीं है। लेकिन कई मौकों की तरह वे इस बार भी एनडीए के साथ खड़े रहे।

नायडू की हाजिर जवाबी का विपक्ष रहा कायल

उपराष्ट्रपति के रूप में एम. वेंकैया नायडू का कार्यकाल कई उपलब्धियों और खट्टे-मीठे अनुभवों के लिए याद किया जाएगा। नायडू की हाजिर जवाबी और तुकबंदी के विपक्षी नेता भी कायल थे। अपने अनुभव से कई बार उन्होंने सदन में उपजे संकट का समाधान निकाला। नायडू के सभापतित्वकाल में शुरुआत में सदन की उत्पादकता बहुत कम रही। कुल 13 पूर्णकालिक सत्रों की उन्होंने अध्यक्षता की। इनमें से पहले पांच सत्रों में कामकाज 6.80 फीसदी से लेकर 58.80 फीसदी तक रहा, लेकिन इसके बाद के आठ सत्रों में से छह की उत्पादकता 76 से 105 फीसदी तक रही। पांच सत्रों में तो यह 100 फीसदी से ज्यादा रही। नायडू के कार्यकाल में 78 फीसदी राज्यसभा सदस्यों ने सदन की बैठक में रोज हिस्सा लिया, लेकिन तीन फीसदी ने ऐसा नहीं किया। 30 फीसदी सदस्यों ने विभिन्न सत्रों में पूर्ण हाजिरी दी।

मैं हृदय से जगदीप धनखड़ जी को देश का 14वां उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने की बधाई देता हूं। देश को आपके व्यापक अनुभव और कानूनी विशेषज्ञता का लाभ प्राप्त होगा।

एम. वेंकैया नायडू,
उपराष्ट्रपति

धनखड़ के उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने पर उन्हें बधाई। मैं विपक्ष के सभी नेताओं-सांसदों का आभार जताती हूं, जिन्होंने मुझे वोट किया।

मार्ग्रेट अल्वा,
विपक्ष की उम्मीदवार

भारत का उपराष्ट्रपति निर्वाचित होने पर जगदीप धनखड़ को बधाई और शुभकामनाएं।

सोनिया गांधी,
कांग्रेस अध्यक्ष

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव
हर घर तिरंगा

AIIMS
BHABHA ATOMIC RESEARCH CENTRE
APSARA NUCLEAR REACTOR
ONGC
IIT
INDUSTRIAL REVOLUTION
IIM
NON-ALIGNED MOVEMENT
BHAKRA NANGAL DAM
ISRO (INCOSPAR)
DRDO

अब तिरंगा फहरा दिया है, ये झुकना नहीं चाहिए

पंडित जवाहरलाल नेहरू
(31 दिसंबर, 1929, रावी नदी के तट पर, कॉंग्रेस के लाहौर अधिवेशन में)

सभी राजस्थानवासियों तथा देशवासियों को

स्वतंत्रता दिवस

की हार्दिक शुभकामनाएं

"तिरंगा हमारे देश के सभी धर्मों, जातियों, वर्गों और क्षेत्रों के सम्मान के साथ सामाजिक समरसता और विभिन्नता में एकता का प्रतीक है और यही हर भारतीय की पहचान होनी चाहिए। आज़ादी के 75 वर्षों में किए अनेक विकास कार्यों में हमारे हाथ से इन मूल्यों का साथ कभी नहीं छूटा। आइए, तिरंगे का सही अर्थों में मान बढ़ाएं, इसके मूल सिद्धांतों को अपनी पहचान बनाएं।"

अशोक गहलोत, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

राजस्थान संवाद

संकीर्ण मानसिकता सबसे बड़ा दुर्भाग्य

वेदव्यास

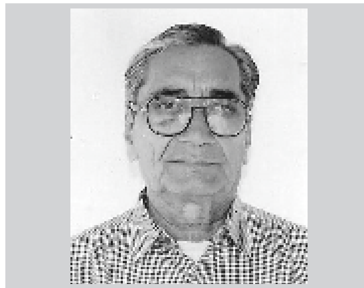

जब पूरी दुनिया ज्ञान और विज्ञान के आविष्कारों से बदल रही है तथा राजनीति भी सामाजिक-आर्थिक असमानताओं की हिंसा से झुलस रही है तब अमेरिका, ब्रिटेन, भारत और अनेक यूरोप के छोटे-छोटे देशों में नस्लभेद, जाति भेद धर्म भेद और वर्ग भेद के नाम पर संकीर्ण राष्ट्रवाद का जन्म भी लोकतंत्र के गर्भ से होना हमारी 21वीं शताब्दी में एक साथ जीवित, तीन पीढ़ियों के लिए, चिंता और अराजकता को लगातार बढ़ा रहा है। स्थिति कुछ ऐसी बताई जाती है कि दुनिया में तीसरे विश्व युद्ध का कारण शायद पानी, तेल ऊर्जा, परमाणु शक्ति का प्रचार, जलवायु परिवर्तन और गैर बराबरी की महाभारत को लेकर ही रचा और लिखा जाएगा।

ऐसे में भला युद्ध और शांति के बीच साहित्य और संस्कृति की क्या भूमिका हो सकती है? मेरे मन में यह प्रश्न बार-बार आता है कि साहित्य और समाज का सेतु यहां कलम का सिपाही किस तरह बन सकता है और वर्तमान समय में एक अकेला शब्द अपनी विश्वसनीयता कैसे स्थापित कर सकता है। भारत की संस्कृति और सभ्यता के इतिहास में जब हम ईमानदारी से विश्व मानवता को खोजते हैं तो हमें पता चलता है कि युद्ध से ही बुद्ध का प्रादुर्भाव होता है और राष्ट्रवाद से ही लोकतंत्र का प्रतिफल पुनर्जन्म लेता है।

इस पृष्ठभूमि में जब हम अपने देश और प्रदेश को पढ़ते हैं तो निष्कर्ष बनता है कि साहित्य और सृजन में, सद्भाव और लोक मंगल का कोई विकल्प नहीं होता तथा इसके लिए साहित्यकार को शब्द और संवेदना के साथ अपने समय के पार जाकर- वसुधैव कुटुम्बकम की आखर जोत जगानी पड़ती है और मनुष्य की मुक्ति को लेकर आजादी की नई मशाल अपनी चेतना में जलानी पड़ती है।

आज जब पूंजी बाजार ने सरकार और समाज को विकास और परिवर्तन की मृगमरीचिका में उलझा दिया है तब हमें लगता है कि हमारे भारत का भविष्य केवल और केवल साहित्य और संस्कृति की महान सृजन परम्पराओं से ही तय हो सकता है तथा जाति-धर्म और कालेधन की सेनाओं के रथ पर सवार राजनीति से कभी नहीं हो सकता। क्योंकि राजनीति के राष्ट्रवाद ने लोकतंत्र की पवित्र गंगा को, अपनी सत्ता-व्यवस्था की मोह माया के पापों से प्रदूषित कर दिया है और मनुष्य को असहिष्णुता के जंगल में धकेल दिया है। लोकतंत्र में किसी हिटलर ने ही युद्ध को जन्म दिया था तो शताब्दियों के शोषण और गुलामी ने ही भारत में महात्मा गांधी का निर्माण किया था। इसी तरह हर देश में अंधेरे और उजाले के संघर्ष में साहित्य ही, समाज की चेतना को जहां वेदों की सूचनाओं से परिष्कृत करता है वहां कभी समाज सुधारक संत-साहित्य से ही सत्य और अहिंसा का नया पथ बनता है।

राजस्थान में भी मीरा बाई, दादूदयाल, सूर्यमल्ल मीसण और विजय सिंह पथिक आदि की साहित्य परम्परा ही यह बताती है कि गढ़, महल और हवेलियों से और बादशाही तथा राजाशाही से कभी जन साहित्य और जन संस्कृति नहीं बनती अपितु त्याग, बलिदान और सहिष्णुता से ही लोकधारा का निर्माण होता है। आप कभी सोचिए कि कोई वैज्ञानिक अपने ज्ञान-विज्ञान से एक परमाणु शक्ति की खोज करता है तो कोई दूसरा राजनेता उसी खोज का पहला प्रयोग मानव जाति के विनाश में कैसे कर लेता है? अमेरिका और जापान का यह उदाहरण हमें सिखाता है कि जहां राजनीति और सत्ता का राष्ट्रवाद किसी लोकतंत्र को अपने स्वार्थ और पाखंड से धोखा दे सकता है वहां साहित्यकार सदैव, लोक मंगल को छल-कपट की तानाशाही से बचाता है। यही कारण है पूरी दुनिया में धर्म की राजनीति से निकली हिंसा ने अधिक नरसंहार किया है वहां बुद्ध, महावीर, ईसा मसीह, हजरत मोहम्मद और गुरु नानक तथा महात्मा गांधी के जीवन-साहित्य ने लोक कल्याण को अधिक सुरक्षित और मानव गरिमा से परिपूर्ण बनाया है।

आज 21वीं शताब्दी के सघन अंधेरे में हिंसा, असमानता, काला धन, भ्रष्टाचार, शोषण और धर्म-जाति की सभी संकीर्णताएं-सत्ताधारी मनुष्य निर्मित ही है। अत: ऐसे समय में राजनीति के आगे चलने वाली मशाल की भूमिका प्रेमचंद के शब्दों में अकेला साहित्यकार लेखक ही निभा रहा है तो कबीरदास से लेकर रविन्द्रनाथ टैगोर तक लेखक की निर्भीक चेतना ही शब्दों पर सवार होकर जनपथ पर लड़ रही है। आज का मुख्य संकट भी यही है कि लोकतंत्र में अधिनायवादी ताकत, धर्म और जातियों की नफरत में जहां तरह-तरह के राष्ट्रवाद की पताकाएं लहरा रही हैं, वहां साहित्य हर दिशा में मनुष्यता का ही गौरव जगा रहा है। क्योंकि साहित्य का उद्देश्य ही सत्य, अहिंसा और समता की तलाश है।

इस तरह आज के भारत में साहित्य की सबसे बड़ी चुनौती-गरीबी और असमानता से फलते-फूलते धर्म-जाति की एकाधिकारवादी तानाशाही ही है, क्योंकि देश के 6 लाख गांवों में कुपोषण, अशिक्षा और सामाजिक-आर्थिक हिंसा का विकल्प कोई डिजिटल इंडिया, स्मार्ट सिटी, बुलैट ट्रेन, कैश लैस बैंक व्यवस्था जैसे स्मार्ट फोन इंटरनेट राज के पास नहीं है। मीडिया, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और भौतिकवादी उपभोक्ता समाज का नया सत्ता गठबंधन, अब धीरे-धीरे मनुष्य के स्वभाव, संस्कार और धर्म-कर्म को भी बदल रहा है। विकास की इस अंधी दौड़ को हम भी मनुष्य समाज की नियति में आ रहे अंधेरे को समझ रहे हैं। जहां विज्ञान ने प्रकृति पर और मनुष्य ने धरती पर विजय प्राप्त कर ली है लेकिन वहां यह संकीर्ण मानसिकता अपने आप में 21वी शताब्दी का सबसे बड़ा दुर्भाग्य है।

जे.के.टायर एण्ड इण्डस्ट्रीज लिमिटेड
जेकेग्राम, कांकरोली (राज.)
स्वाधीनता दिवस
के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं
JK TYRE
& INDUSTRIES LTD.
SELECTED
Superbrand
INDIA 2009-10
CONSUMER VALIDATED

शिक्षक तैयार करने की चुनौतियां

किसी भी देश की शिक्षा नीति की सफलता अध्यापकों की योग्यता, क्षमता और प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। नई शिक्षा नीति में अध्यापकों के प्रशिक्षण व्यवस्था की बात की गई है, पर असली सवाल है कि हिंदी प्रदेश की सरकारें कब शिक्षा को अपनी प्राथमिकता में शामिल करेंगी और बच्चों के अनुपात में प्रशिक्षित शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति तथा स्कूलों में मूलभूत सुविधाओं की कमी दूर करेंगी।

संजयकुमार मिश्र

जब-तब रोंगटे खड़े कर देने वाली हिंसा के समाचारों के बीच उत्तरप्रदेश में रामपुर स्वार क्षेत्र के पसियापुरा स्कूल की यह घटना सामान्य सी लग सकती है। पर गहराई से विवेचन विश्लेषण करने पर आसानी से समझा जा सकता है कि निरंतर हिंसक होते समाज की मूलाधार ऐसी ही घटनाएं हैं। पिछले दिनों उत्तरप्रदेश में रामपुर, सैदनगर विकास खंड स्वार क्षेत्र के गांव पसियापुरा के स्कूल में बच्चों की परीक्षा करवाने प्रधानाध्यापक सुबह स्कूल पहुंचे तो उस समय तक सहायक अध्यापिका स्कूल नहीं पहुंची थी। नियत समय के पांच मिनट बाद शिक्षिका स्कूल आई तो प्रधानाध्यापक भड़क गए। इस दौरान दोनों के बीच जमकर कहा-सुनी, गाली-गलौच और हाथापाई तक हो गई। बात यहीं नहीं रूकी, आगे बढ़ कर प्रधानाध्यापक ने शिक्षक को थप्पड़ मार दिया। स्कूल में दोनों के बीच इस जूतमपैजार को सारे छात्र और गांव के लोग भी दिल थाम कर देखते रहे।

मारपीट का यह मामला पुलिस तक पहुंचता, उसके पहले ही शिक्षा विभाग सक्रिय हो गया। स्वार से कई शिक्षक समझौता कराने के लिए स्कूल में पहुंचे। स्कूल में पंचायत हुई। पंचायत में शिक्षक, ग्राम प्रधान और दर्जनों ग्रामीणों ने हिस्सा लिया। समझौते में तय हुआ कि प्रधानाध्यापक भरी पंचायत में शिक्षिका के पैर पकड़ कर माफी मांगेंगे। फरमान को पूरा करते हुए प्रधानाध्यापक शिक्षिका के पैर पकड़ कर गिड़गिड़ाने लगे। पर शिक्षिका माफ करने को तैयार नहीं थी और वह तभी मानी जब उसे दो थप्पड़ के बदले, दो जूते मारने की इजाजत मिली। शिक्षिका ने खुद को पड़े थप्पड़ का बदला जूता मार कर लिया। किसी की सूचना पर पुलिस ने गांव पहुंचकर छानबीन की, लेकिन पंचायत ने समझौते की बात कह कर पुलिस को लौटा दिया।

इस झगड़े के पीछे के कारणों की गहराई में जाएं तो पता चलेगा कि यह सिर्फ दो शिक्षकों के बीच का सामान्य झगड़ा नहीं, बल्कि सरकार की शिक्षा व्यवस्था संबंधी नीतियों और खामियों का प्रत्यक्ष प्रतिफल है। हिंदी प्रदेश, खासकर यूपी, बिहार, झारखंड के ज्यादातर प्राथमिक से लेकर माध्यमिक विद्यालयों में एक दो ही शिक्षक मिलेंगे। उन पर पूरे स्कूल के पठन-पाठन से लेकर बच्चों के मध्याह्न भोजन की व्यवस्था और वितरण बच्चों की किताब, पोशाक, उनसे जुड़ी अनुदान योजनाओं के वितरण के अलावा सरकार द्वारा थोपे गए मतदाता सूची, चुनाव, पशु गणना से लेकर जनगणना तक कुल मिलाकर तेरह तरह के सरकारी कार्यों की लंबी सूची है, जो उन पर थोपे गए है। इन्हें उन्हें हर हाल में मुश्किल से मिली नौकरी को बचाने के लिए निभाना है। यूनेस्को ने भारत में शिक्षा की स्थिति 2021 ने शिक्षक, न कक्षा, शीर्षक रिपोर्ट में भारत में पढ़ाई-लिखाई के मोर्चे पर काफी चिंताजनक तस्वीर पेश की है। इसके अनुसार देश के स्कूलों में दस लाख शिक्षकों की कमी है। यही नहीं, अभी जितने शिक्षक हैं, उनमें से तीस फीसद

अगले पंद्रह साल में रिटायर हो जाएंगे। भारत में ग्यारह लाख स्कूल ऐसे हैं, जहां सिर्फ एक अध्यापक है। देश के स्कूलों में शिक्षकों के उन्नीस प्रतिशत पद खाली पड़े हैं। इनकी संख्या 11.16 लाख है। ग्रामीण इलाकों में तो हाल और भी बुरा है, जहां उनहत्तर फीसद तक पद खाली हैं। यूनेस्को की रिपोर्ट बताती है कि देश के हिंदी क्षेत्र में सबसे कम शिक्षक हैं। इनमें उत्तरप्रदेश, बिहार और मध्यप्रदेश जैसे राज्य हैं। यहां शिक्षकों की सर्वाधिक रिक्तियां हैं। उत्तरप्रदेश और बिहार में एक लाख से ज्यादा रिक्तियां है, जो देश में सबसे ज्यादा हैं। ग्रामीण इलाकों में साठ फीसदी जगहें खाली हैं। इस मामले में यूपी सबसे ऊपर है। हिंदी प्रदेशों में शिक्षकों की स्थिति देखें, तो ज्यादातर प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में संविदा या ठेके के शिक्षक मिलेंगे। हमारी राज्य सरकारें चुनावों के समय एक तरफ अपने कर्मचारियों को खुश करने के लिए वेतन आयोग की सिफारिशें लागू कर देती हैं और दूसरी तरफ नए शिक्षकों की भर्ती ही नहीं करती। मध्यप्रदेश में मुख्यमंत्री रहते दिग्विजय सिंह ने कई अभिनव प्रयोग किए, पर एक प्रयोग जिसे सभी सरकारों ने हाथोंहाथ लिया, वह था शिक्षा मित्रों या ठेके पर शिक्षकों की नियुक्ति। इन शिक्षकों को न तो नियुक्ति से पहले कई सालों से पढ़ाई-लिखाई से कुछ खास लेना-देना था और न ही इनके उचित प्रशिक्षण की कोई व्यवस्था। सरकारों ने अपने नौनिहालों को भाग्य भरोसे इन ठेके के दस-पन्द्रह हजार के वेतन पर नियुक्त अध्यापकों के हाथों सौंप दिया और सरकारों ने शिक्षकों के वेतन पर होने वाले खर्च से निजात पा ली। नतीजा यह हुआ कि हर कस्बे-शहर से लेकर महानगरों तक निजी स्कूल खुल गए और जो अपने बच्चों को इनमें भेजने के लायक थे वे इनकी शरण में आ गए। गरीब कुपोषित बच्चे खिचड़ी-दलिया से भूख मिटाने और साक्षरता के आंकड़े बढ़ाने भर के लिए सरकारी स्कूल जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक बनने के लिए बीएड के चार वर्षीय पाठ्यक्रम की संस्तुति है। अभी तक यह दो वर्ष का पाठ्यक्रम होता था। अब कक्षा बारह के बाद चार साल का पाठ्यक्रम होगा। दूसरे अध्यापक जिस स्कूल में शिक्षा देते हैं उन्हें वहां के सामाजिक और सांस्कृतिक माहौल से परिचित होना चाहिए। ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों से शिक्षकों की कमी खत्म करने और गांवों के शिक्षित युवाओं को आसपास ही रोजगार मुहैया कराने के लिए गांवों के प्रतिभाशाली छात्रों को शिक्षक बनने की ओर आकर्षित किया जाएगा। उन्हें बारहवीं के बाद चार साल का बीएड कोर्स करने के लिए छात्रवृत्ति भी दी जाएगी। नई शिक्षा नीति में अध्यापकों को समय-समय पर प्रशिक्षण की व्यवस्था की बात की गई है।

किसी भी देश की शिक्षा नीति की सफलता अध्यापकों की योग्यता, क्षमता और प्रशिक्षण पर निर्भर करती है। नई शिक्षा नीति में अध्यापकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था की बात की गई है, पर असली सवाल है कि हिंदी प्रदेश की सरकारें कब शिक्षा को अपनी प्राथमिकता में शामिल करेंगी और बच्चों के अनुपात में प्रशिक्षित शिक्षकों की स्थायी नियुक्ति तथा स्कूल में मूलभूत सुविधाओं की कमी को दूर करेंगी। आज सरकारी स्कूलों में शिक्षकों का काम के दबाव और तनाव में आकर हिंसक आचरण करना गलत होते हुए भी अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता। हिंदी प्रदेश के ज्यादातर सरकारी स्कूल शिक्षा नहीं, सिर्फ साक्षरता दर बढ़ाने में लगे हैं। इस तरह की शिक्षा से गुणवत्तापूर्ण मूल्यपरक शिक्षा की आशा कैसे की जा सकती है। एक योग्य या आदर्श शिक्षक अपने प्रयासों से बच्चों में ऐसी रचनात्मक ऊर्जा का संचार बनते हैं। जिससे वे उन्नत और प्रगतिशील बनते हैं। उस समाज का भविष्य क्या होगा, जिसमें स्कूल का प्रधानाध्यापक और शिक्षिका विद्यार्थियों के सामने एक दूसरे को थप्पड़ और जूतों से वार और प्रतिवार करें और सरेआम मासूम बच्चों के कोमल मस्तिष्क पर क्या असर होगा? आखिर वे शिक्षक किस मुंह से बच्चों को अहिंसा का पाठ पढ़ाएंगे? अगर वे तोतारटंत करवा भी देंगे, तो क्या उसका कुछ भी असर उन बच्चों पर पड़ेगा? आज जब हम हम तरफ हिंसा का नग्न प्रदर्शन देख रहे हैं, उसमें शिक्षकों के ऐसे हिंसक और अशोभन व्यवहारों का भी बहुत बड़ा हाथ है। सरकारों को अब राशन और मध्याह्न भोजन के साथ-साथ गुणवत्तापूर्ण और मूल्यपरक शिक्षा के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए, ताकि पर्याप्त योग्य, शिक्षित, प्रशिक्षित और मेधावी ही शिक्षक बनें, जिससे हमारे नवांकुरों के साथ-साथ देश और समाज का भी भविष्य संवर सके।

('जनसत्ता' से साभार)

उत्कृष्ट शिक्षक

वर्तमान परिदृश्य पर नजर डालें तो हम यह साफ देख सकते हैं कि कुछ समय पहले जहां शिक्षा का प्रचार-प्रसार धर्म समझा जाता था आज वहीं यह शुद्ध व्यवसाय और धन अर्जित करने का बेहतर माध्यम बन गया है। लेकिन भारत जैसे महान देश में शिक्षक ऐसे भी हुए हैं। जिन्होंने ज्ञान का प्रसार केवल पैसा कमाने के लिए ही नहीं बल्कि विद्यार्थियों को सही मार्ग पर चलाने और उन्हें अच्छा नागरिक बनाने के लिए किया। इन्हीं में से एक डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ना सिर्फ उत्कृष्ट अध्यापक थे बल्कि भारतीय संस्कृति के महान ज्ञानी, दार्शनिक, वक्ता और विज्ञानी हिंदू विचारक भी थे। राधाकृष्णन ने जीवन के 40 वर्ष एक शिक्षक के रूप में व्यतीत किए। उनके जन्मदिन को पूरे देश में शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। वे ताउम्र देश में शिक्षा के स्तर को बेहतर बनाने का प्रयास करते रहे। बढ़ती उम्र और बीमारियों के चलते 17 अप्रेल, 1975 को उन्होंने देह त्याग दिया था। स्वतंत्र भारत के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितम्बर 1888 को तमिलनाडु के पवित्र तीर्थ स्थल तिरूतनी ग्राम में हुआ था।

प्रत्यूष
प्रत्यूष पत्रिका में विज्ञापन देने के लिए सम्पर्क करें
75979 11992, 94140 77697

राजस्थान सरकार

R-CAT
राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी

"पूर्व प्रधानमंत्री भारत रत्न स्वर्गीय श्री राजीव गांधी ने आइ.टी. की क्षमता और महत्त्व को समझ कर लगभग तीन दशक पहले देश में आइ.टी. के गौरवशाली युग की नींव रखी। आइ.टी. को मज़बूत करने की इस सोच के साथ उन्हीं की जयंती पर राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी का उद्घाटन करते हुए मुझे बहुत खुशी है। इस सेंटर से राज्य में आइ.टी. आधारित शिक्षा मज़बूत होगी और युवाओं को एडवांस्ड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में विश्व-स्तरीय प्रशिक्षण प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे।
श्री राजीव गांधी को उनकी 78वीं जयंती पर शत् शत् नमन।"

अशोक गहलोत
मुख्यमंत्री, राजस्थान

जयपुर में विश्व-स्तरीय आइ.टी. फ़िनिशिंग स्कूल

राजीव गांधी सेंटर ऑफ एडवांस्ड टेक्नोलॉजी (R-CAT)

का माननीय मुख्यमंत्री के कर कमलों द्वारा
श्री राजीव गांधी की जयंती दि. 20 अगस्त 2022 को शुभारम्भ किया गया

एडवांस्ड तकनीकों की ट्रेनिंग

- आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (AI)
- साइबर सिक्योरिटी
- इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT)
- ऑगमेंटेड रियलिटी/वर्चुअल रियलिटी
- मशीन लर्निंग (ML)
- रोबोटिक्स
- बिग डेटा एनालेटिक्स
- ब्लॉक चेन

विश्व-स्तरीय सुविधाएं व संसाधन

- विश्वविख्यात आइ.टी. कंपनियों द्वारा संचालित व सर्टिफाइड कोर्सेज़
- अत्याधुनिक उपकरणों से युक्त विश्वस्तरीय इंफ्रास्ट्रक्चर
- अनुभवी फ़ैकल्टी व मेंटर्स
- लाइव प्रोजेक्ट्स पर अनुभव हासिल करने का अवसर

दुनिया की अग्रणी आइ.टी. कंपनियों द्वारा ट्रेनिंग व सर्टिफिकेशन

sas ∘ ORACLE ∘ vmware
AUTOFINA ROBOTICS ∘ CISCO ∘ Red Hat

R-CAT, पुराना सूचना केंद्र, SMS अस्पताल के पास, जयपुर

अधिक जानकारी के लिए स्कैन करें

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, राजस्थान

आतंकी सरगना जवाहिरी हलाक्

आतंकी सरगना अयमान अल जवाहिरी को काबुल में अमेरिकी ड्रोन ने ढेर कर दिया। यह वाइडन सरकार की महत्वपूर्ण और बड़ी उपलब्धि है। इससे एक बार फिर साबित हो गया है कि अमेरिका जहां चाहे, जब चाहे अपने लक्ष्यों पर निशाना साध सकता है। जवाहिरी हक्कानी नेटवर्क के एक मकान में रह रहा था, जिसका अफगानिस्तान में तालिबान सरकार पर प्रभावी नियंत्रण है।

राजवीर

अलकायदा प्रमुख अयमान अल-जवाहिरी को मार गिराने से अमेरिका के आतंकवाद-विरोधी अभियान को नई ऊर्जा मिली है। 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले के दो मुख्य सूत्रधारों में एक जवाहिरी भी था। एक अन्य आतंकी ओसामा बिन लादेन को 2011 में पाकिस्तान के एबटाबाद में मार गिराया गया था। इस लिहाज से देखें, तो अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडन का यह बयान स्वाभाविक है कि न्याय की जीत हुई। जिस मकसद से अमेरिकी फौज 2001 में अफगानिस्तान की ओर निकली थी, दोनों आतंकियों की मौत के बाद यह अभियान पूरा हो गया है। अमेरिका ने जवाहिरी को काबुल में 31 जुलाई को ड्रोन हमले में मार गिराया। राष्ट्रपति जो बाइडन ने 13 अगस्त को इसकी घोषणा की। जवाहिरी ने ही ओसामा बिन लादेन के साथ मिलकर अमेरिका पर 9/11 हमलों की साजिश रची थी। तब से वह फरार था। पिछले एक साल से जवाहिरी अफगानिस्तान की राजधानी काबुल में परिवार के साथ छिपकर रह रहा था। जैसे ही अमेरिकी खुफिया एजेंसियों को यह भनक लगी उन्होंने ड्रोन स्ट्राइक में उसे ढेर कर दिया। जवाहिरी ने अलकायदा के संस्थापक ओसामा बिन लादेन के मारे जाने के बाद इस आतंकी संगठन की कमान संभाली थी। लादेन को यूएस नेवी सील्स ने दो मई 2011 को पाकिस्तान के एबटाबाद में हवाई हमले में मार गिराया था। तब से अल

> जवाहिरी के हाथ अमेरिकी नागरिकों के खिलाफ हत्या और हिंसा के खून से रंगे थे। यह मायने नहीं रखता कि अल जवाहिरी को मारने में इतना लम्बा समय लगा। यह भी मायने नहीं रखना कि कोई कहां छिपा है। अमेरिका और यहां के लोगों के लिए जो भी खतरा बनेगा, हम उसे छोड़ेंगे नहीं।
>
> **जो बाइडन**, राष्ट्रपति अमेरिका

जवाहिरी की तलाश चल रही थी। कई बार उसके मारे जाने की खबरें भी आई पर अमेरिकी सरकार ने कभी इनकी पुष्टि नहीं की।जवाहिरी का मारा जाना आतंकवाद के खिलाफ वैश्विक अभियानों के इतिहास में एक बड़ी कामयाबी के तौर पर जाना जाएगा। दरअसल किसी अंतरराष्ट्रीय आतंकी गिरोह के शीर्ष नेताओं तक पहुंचना और दूसरे देश की सीमा में उन्हें मार गिराने के अभियान को अपेक्षित अंजाम तक पहुंचाना आसान काम नहीं रहा है। इससे पहले दुनिया भर में अन्य आतंकवादी संगठनों के मामलों में भी इस तरह की जटिलताओं का अनुभव मौजूद था, इसलिए जवाहिरी के मामले में हर स्तर पर सावधानी बरतना स्वाभाविक ही था। इस अभियान के क्रम में पहले हर पल के लिए कार्ययोजना तैयार की गई, नजदीक से जवाहिरी के ठिकाने और उसकी गतिविधियों पर नजर रखी गई और खास बात यह रही कि हमले के लिए ड्रोन और लेजर जैसी आधुनिकतम तकनीक का सहारा लिया गया। यही वजह रही कि इस अभियान के दौरान किसी भी अन्य व्यक्ति की मौत नहीं हुई और ज्यादा नुकसान नहीं हुआ।

संयुक्त राष्ट्र की एक हालिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि आतंकी संगठन अल-कायदा और इस्लामिक स्टेट (आइएसआइएस) की अफगानिस्तान में मौजूदगी बनी हुई है और ये आतंकी समूह कश्मीर में अपने खतरनाक मंसूबों को अंजाम देने में जुटे हैं। रिपोर्ट में यह भी चिंताजनक खुलासा किया गया था कि इन आतंकी संगठनों के जो लड़ाके अफगानिस्तान के गजनी, हेलमंद, कंधार, निमरूज और जाबुल प्रांतों में आतंकी अड्डे बनाए हुए हैं, इनमें बांग्लादेश, म्यांमार और पाकिस्तान के साथ-साथ भारत के नागरिक भी शामिल हैं। तालिबान ने अंतरराष्ट्रीय नियमों और सिद्धांतों की दुहाई देते हुए अमरीका की इस कार्रवाई पर आपत्ति जताई है। तालिबान को वर्ष 2020 में अमरीका के साथ हुए उस शांति समझौते का जरूर ध्यान रखना चाहिए जिसमें तालिबान ने

दो बार बच निकला था

जवाहिरी को मारने के लिए अमेरिका इससे पहले भी कई बार कोशिश कर चुका था। 2001 में अफगानिस्तान के तोराबोरा की पहाड़ियों में छिपे होने की सूचना मिली थी। मगर, हमला होने से पहले जवाहिरी भाग निकला। वहीं 2006 में उसके पाकिस्तान के दामदोला में छिपे होने की सूचना मिली थी। खुफिया एजेंसियों ने मिसाइल हमला किया लेकिन वह बचकर भाग निकला।

हजारों मौतों का गुनहगार

अलकायदा सरगना अल जवाहिरी का जन्म मिस्र की राजधानी काहिरा के एक संपन्न परिवार में 19 जून 1951 को हुआ था। उसके परिवार में डॉक्टर और स्कॉलर थे। अरबी और फ्रेंच बोलने वाला जवाहिरी पेशे से खुद भी सर्जन था, लेकिन जब वह आतंकियों के संपर्क में आया तो खुद को इस्लामिक जेहादी साबित करने के लिए खून का प्यासा हो गया।

- जवाहिरी 14 साल की उम्र में इस्लामिक संगठन मुस्लिम ब्रदरहुड का सदस्य बन गया।
- 1978 में काहिरा विश्वविद्यालय की दर्शनशास्त्र की छात्रा अजा नोवारी से शादी की।
- काहिरा यूनिवर्सिटी से 1974 में मेडिकल की पढ़ाई की, वहीं से सर्जरी की मास्टर डिग्री ली।
- मिस्र में इस्लामिक हुकूमत कायम करने के लिए उसने इजिप्टियन इस्लामिक जिहाद का गठन किया।
- 1981 में मिस्र के तत्कालीन राष्ट्रपति अनवर सदात की एक सैन्य परेड में हत्या कर दी गई, अल जवाहिरी भी उसमें शामिल बताया गया।
- उसे जेल भेजा गया, प्रताड़ित किया गया, यहां से वह और कट्टर हो गया।
- 1985 में जेल से रिहा होते ही वह सऊदी अरब गया, वहां से पाकिस्तान के पेशावर और फिर अफगानिस्तान में जाकर शरण ली।
- 1992 में फिर मिस्र इस्लामिक जिहाद की कमान अपने हाथों में ले ली, सरकार के मंत्रियों और प्रधानमंत्री अतिफ सिद्धीकी पर हमले करवाए। इसमें 1200 से ज्यादा लोगों की मौत।
- 1990 के दशक में वह फंड के लिए फर्जी पासपोर्ट से कई देशों में गया।
- 1997 में अफगानिस्तान के जलालाबाद गया, यहीं ओसामा बिन लादेन का ठिकाना था।
- छह महीने बाद कीनिया और तंजानिया में अमेरिकी दूतावास पर हमला किया और 223 लोगों की मौत हुई।
- 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका में हमले के पीछे अल-जवाहिरी का ही दिमाग माना जाता है और जब ओसामा मारा गया तब से यह अलकायदा संभाल रहा था।

अफगानिस्तान में किसी भी अतिवादी समूह को पनाह नहीं देने की बात कही थी। तालिबान के इस रवैये को लेकर भारत को भी चिंता करनी ही होगी। तालिबान सरकार की सरपरस्ती में पनपते आतंकी संगठन कब हमारे लिए घातक बन जाएं, इसका अंदाजा नहीं लगाया जा सकता। वह भी तब जब पड़ोसी देश पाकिस्तान पर भी आतंकी संगठनों को पनाह देने के आरोप लगते रहते हैं।

जवाहिरी की मौत काबुल के जिस शेरपुर इलाके में हुई, वह शहर के बीचोंबीच स्थित है। सरकारी संस्थान और कूटनीतिक प्रतिष्ठान इसके एकदम बगल में हैं। प्रश्न उठता हैं कि जवाहिरी को ऐसे इलाके में तालिबान के किस गुट ने रखा और क्यों? क्या वह यह समझता था कि अगर अमेरिका को पता भी चल गया तो वह इस इलाके की संवेदनशीलता को देखते हुए हमला करने से हिचकेगा। जवाहिरी के ठिकाने पर अमेरिकी हमले की सटीकता यह बताती है कि उसकी मारक क्षमता कितनी कारगर और असरदार है। यह भी साफ है कि अमेरिका को अपने तकनीकी माध्यमों के साथ कुछ न कुछ मानवीय खुफिया इनपुट भी अवश्य मिला होगा। ऐसे में यह भी एक बड़ा सवाल है कि अमेरिका को यह जानकारी किसने दी होगी?

यह किसी से छिपा नहीं कि तालिबान में आपसी रंजिश और फूट बहुत ज्यादा है। इस घटनाक्रम के बाद तालिबान के बीच की दरारें और बढ़ेंगी। यह भी संभव है कि पाकिस्तानी सेना ने भी अमेरिकियों की इस मामले में मदद की हो। पाकिस्तान की आर्थिक और राजनयिक स्थिति इस समय बहुत कमजोर है। वह राजनीतिक अस्थिरता के दौर से गुजर रहा है। ऐसी भी खबरें है कि पाकिस्तानी सेना के शीर्ष जनरलों में भी मतभेद हैं। मौजूदा हालात में उसे इसीलिए अमेरिकी मदद चाहिए कि कहीं उसकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह चरमरा न जाए। यह भी हो सकता है कि अमेरिका के हाथों जवाहिरी की मौत के कारण तालिबान और तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान भी पाकिस्तानी सेना को निशाना बनाएं, क्योंकि प्रतिशोध की परम्परा पश्तून कबीलों में कूट-कूटकर भरी है। भारत ने कुछ सप्ताह पहले एक टेक्निकल टीम काबुल में तैनात की। ऐसी टीमों में कुछ राजनयिक भी होते हैं। इसके पहले भारतीय प्रतिनिधि भी काबुल का दौरा कर चुके हैं। तब तालिबान ने आश्वासन दिया था कि वे भारत ने संबंध बढ़ाना चाहते हैं और अगर भारत से फिर से अपना स्थायी ठिकाना बनाया तो वे उसे पूरी सुरक्षा देंगे। भारत ने संकोच के साथ अपनी टीम काबुल भेजी थी। अब सवाल यह है कि क्या जवाहिरी के सफाए के बाद भारत को अपनी अफगान नीति पर पुनर्विचार करना चाहिए? निःसंदेह भारत को स्पष्ट शब्दों में मांग करनी चाहिए कि तालिबान को अंतरराष्ट्रीय आतंकी गुटों, जिनमें पाकिस्तानी गुट भी शामिल हैं, से अपने संबंध पूरी तरह खत्म करने होगें। चूंकि अफगानिस्तान में भारत के हित निहित हैं, इसलिए उसकी टीम को वहां मौजूद रहना चाहिए। ऐसा न होने पर पाकिस्तान और चीन जैसे देशों को अफगानिस्तान में अपने हितों को पोषित करने और भारत के खिलाफ कार्रवाई में खुली छूट मिल जाएगी।

पितरों के सम्मान का पर्व : श्राद्धपक्ष

पं. हीरालाल नागदा

पितृपक्ष यानी श्राद्ध पक्ष पितरों के सम्मान एवं पितृदोष से मुक्ति प्राप्त करने का सर्वोत्तम समय है। इस पखवाड़े में सही समय और शास्त्रानुसार किया गया श्राद्ध कर्म व्यक्ति के जीवन को खुशियों की सौगातों से भर सकता है।

पितृ पक्ष की शुरूआत 10 सितम्बर भाद्रपद पूर्णिमा से हो रही है। पितृ पक्ष में मध्यान्ह व्यापिनी तिथि का महत्व होता है। जिस तिथि में मध्यान्ह प्राप्त होता है, वही तिथि मानी जाती है। शास्त्रानुसार प्रत्येक सनातनधर्मी को इस पक्ष में प्रतिदिन मध्यान्ह व्यापिनी तिथि को ध्यान में रखते हुए अपने पूर्वजों की संतुष्टि के लिए श्राद्ध एवं तर्पण अवश्य करना चाहिए। पृथ्वी लोक में माता –पिता एवं पितृ साक्षात देवता हैं। अत: उनकी आत्मा की शांति के लिए अश्विन कृष्ण पक्ष में श्रद्धा, विश्वास एवं उत्साह के साथ श्राद्ध कर्म करनाचाहिए। जिस दिन अर्थात जिस तिथि पर पूर्वजों की मृत्यु हुई हो उसी तिथि को श्राद्ध कर्म किए जाने का प्रावधान शास्त्रों में है। जिनकी कुंडली में पितृ दोष हो, उनको अवश्य अर्पण–तर्पण करना चाहिए। वैसे तो सभी के लिए अनिवार्य है कि वे श्राद्ध करें। श्राद्ध से पितृ तृप्त होते हैं। इन सोलह दिनों में पूर्वज हमारे घरों पर आते हैं और तर्पण मात्र से ही तृप्त होते हैं।

क्यों कहते हैं कनागत

अश्विन मास के कृष्ण पक्ष के समय सूर्य कन्या राशि में स्थित होता है। सूर्य के कन्यागत होने से ही इन 16 दिनों को कनागत कहते हैं।

कैसे करें श्राद्ध

पहले यम के प्रतीक कौआ, कुत्ते और गाय का अंश निकालें इसमें भोजन की समस्त सामग्री में से कुछ अंश डालें, फिर किसी पात्र में दूध, जल, तिल और पुष्प लें। कुश और काले तिलों के साथ तीन बार तर्पण करें। चऊं पितृदेवताभ्यो नम:ज का उच्चारण करते रहें। बाएं हाथ में जल का पात्र लें और दाएं हाथ के अंगूठे को पृथ्वी की तरफ कर उस पर जल डालते हुए तर्पण करते रहें। वस्त्रादि जो भी आप चाहें पितरों के निमित दान कर सकते हैं।

विकल्प

दूरदराज रहने वाले, सामग्री उपलब्ध नहीं होने, तर्पण की व्यवस्था नहीं हो पाने पर एक सरल उपाय के माध्यम से पितरों को तृप्त कर सकते हैं। दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके खड़े हो जाएं। अपने दाएं हाथ के अंगूठे को पृथ्वी की ओर झुकाएं तथा 11 बार उच्चारित करें ऊं पितृदेवताभ्यो नम:। ऊं मातृ देवताभ्यो नम:।

क्या न करें

तेल और साबुन का प्रयोग न करें जिस दिन श्राद्ध हो। जहां तक संभव हो, नए वस्त्र न पहनें तामसिक भोजन न करें। तामसिक होने के कारण ही इनको निषिद्ध किया गया है।

यह भी ध्यान रखें

- पुरूष का श्राद्ध पुरूष को, महिला का श्राद्ध महिला को दिया जाना चाहिए।
- यदि पंडित उपलब्ध नहीं हैं तो श्राद्ध भोजन मंदिर में या गरीब लोगों को दे सकते हैं।
- यदि कोई विषम परिस्थिति न हो तो श्राद्ध को नहीं छोड़ना चाहिए। हमारे पितृ अपनी मृत्यु तिथि पर श्राद्ध की अपेक्षा करते हैं। इसलिए यथा संभव उस तिथि को श्राद्ध कर देना चाहिए।
- यदि तिथि याद न हो और किन्हीं कारणों से नहीं कर सकें तो पितृ अमावस्या को अवश्य श्राद्ध कर देना चाहिए।

श्राद्ध क्या है

पितरों के प्रति तर्पण अर्थात जलदान–पिंडदान। पिंड के रूप में पितरों को समर्पित किया गया भोजन ही श्राद्ध कहलाता है। देव, ऋषि और पितृगण के निवारण के लिए श्राद्ध कर्म है। अपने पूर्वजों को स्मरण करने और उनके मार्ग पर चलने और सुख–शांति की कामना ही वस्तुत श्राद्ध कर्म है।

स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

उदयपुर सहकारी उपभोक्ता थोक भण्डार लि.

(Retail Revolution)

शुद्धता | विश्वसनीयता | गुणवत्ता

उदयपुर भण्डार को सहकारी क्षेत्र में उत्तरी भारत के सर्वश्रेष्ठ भण्डार का गौरव प्राप्त है

सुपरमार्केट की नियमित स्कीम

1 किलो शक्कर आधी कीमत पर **Rs. 1500** की खरीद पर

या

1 किलो शक्कर मुफ्त **Rs. 2500** की खरीद पर

या

1 लीटर खाद्य तेल आधी कीमत मुफ्त **Rs. 3500** की खरीद पर

एक लीटर खाद्य तेल मुफ्त **Rs. 5000** की खरीद पर

समस्त उत्पाद (M.R.P.) से कम दरों पर, 5 प्रतिशत की छूट

समस्त नहाने के साबुन/कपड़े धोने के साबुन /समस्त डिसवॉश बार/बिस्किट पर

510

रु. जमा करा कर भण्डार के सदस्य बनकर 1 प्रतिशत छूट एवं अनेक स्कीम का लाभ उठाएं

101

रु. का सामान प्रतिमाह जीवनभर मुफ्त

(10 हजार जमा योजना अंतर्गत भण्डार में 10 हजार से 80 हजार तक जमा कराते हुए 101 से 808 रू. तक का सामान प्रतिमाह मुफ्त पाएं)

www.thokbhandar.com वेबसाइट पर ऑनलाईन शॉपिंग सुविधा उपलब्ध है।

राज्य सरकार द्वारा हिस्सा राशि 500 रू. करने से जिन सदस्यों की हिस्सा राशि 100 रू. जमा है वे 400 रू. और जमा कर हिस्सा राशि पूर्ण करें।

(शर्तें लागू)

अश्विनी कुमार वशिष्ठ
प्रशासक

आशुतोष भट्ट
महाप्रबंधक

कब्ज से रहें दूर, नहीं होगी साइनस की समस्या

कुछ बीमारियां ऐसी होती हैं, जिनके लक्षण तो बेहद मामूली होते हैं, किंतु शनैः-शनैः वे हमारी जीवन शैली को पूरी तरह अस्त-व्यस्त कर देती हैं। साइनोसाइटिस यानी साइनस ऐसी ही बीमारी है। थोड़ी सी सावधनी इसे लक्षण पहचानने और इलाज में भरपूर मदद करेगी। आयुर्वेद में क्या-क्या हैं साइनस के इलाज, विशेषज्ञों से बातचीत के आधार पर जानकारी दे रही हैं- चयनिका निगम।

साइनोसाइटिस वह बीमारी है, जो चुपके-चुपके हमारी जिंदगी में घुसती है और जीवनशैली को पूरी तरह से खराब करने में कोई कसर नहीं छोड़ती। एक समय पर साधारण जुकाम से शुरू हुई दिक्कत के बाद सांस लेना भी दूभर हो जाता है। सही समय पर लिए गए इलाज से इस बीमारी से बचा जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले जरूरी है कि इस बीमारी के कारण और लक्षण पहचान लिए जाएं। जरूरत सही इलाज की भी है, जिसके लिए आयुर्वेद को बेहद प्रभावी माना गया है।

क्या है साइनोसाइटिस

हमारे चेहरे में कई जगहें ऐसी होती हैं, जो पूरी तरह से खोखली होती हैं। नाक, मस्तिष्क और आंखों के अंदरूनी हिस्सों में मौजूद इन खोखली जगहों को ही साइनस करते हैं। जब इन खोखली जगहों यानी साइनस में बाधा आती है तो बलगम आसानी से नहीं निकल पाता। इस स्थिति को साइनोसाइटिस कहते हैं।

आयुर्वेद में उपचार

आयुर्वेद में इस बीमारी को प्रतिश्याय कहा जाता है। वात, पित्त और कफ का सही समायोजन हर इंसान को स्वस्थ रखता है, जबकि प्रतिश्याय होने पर वात और कफ बढ़ जाता है। मतलब इनका संतुलन बिगड़ जाता है, जो इस बीमारी का कारण बनता है।

क्या है लक्षण

इससे बीमारी के लक्षण बहुत मामूली और आम से नजर आते हैं। इसमें मरीज अकसर कब्ज का शिकार रहता है। पेट खराब रहना तो आजकल ज्यादातर लोगों की समस्या है। प्राय: लोग गलत

क्या है इलाज

वैसे तो इस बीमारी का इलाज नस्यकर्म नाम की प्रक्रिया में ही है, लेकिन इसे घर पर नहीं किया जा सकता। इसके लिए आयुर्वेद विशेषज्ञ की मदद लेनी पड़ती है। इसके अलावा भी कई इलाज हैं, जिनमें कुछ दवाएं बाहर से लेकर उनका सेवन करना होता है।

दवाएं हैं अनेक

साइनस के इलाज में कुछ दवाएं ऐसी हैं जो बाजार में आसानी से मिल जाती है और काफी असरकारक भी हैं। लेकिन इनका सेवन विशेषज्ञ की सलाह से ही करें। दवाएं हैं– लक्ष्मी विलास रस, त्रिभुवन कीर्ति रस, चित्रकादि वटी, चित्रक हरीतकी अवलेह, सितोपलादि चूर्ण।

बरतें सावधानी

- गुनगुना पानी पिएं
- सिर पर ज्यादा पानी न डालें
- एकदम ठंडे पानी से न नहाएं।
- रात में जागने से वात बनता है, इसलिए अगर पूरी रात जागने की आदत है तो उसे बदलें।
- दिन में सोने से बचें, क्योंकि दिन में सोने से कफ बढ़ता है।
- लहसुन, सोंठ, अदरक का सेवन बढ़ाएं।
- टमाटर न खाएं।

न करें नजरअंदाज

- गालों के ऊपर दर्द
- भौओं के ऊपर दर्द
- आंखों के ऊपर दर्द
- जुकाम
- सिर में दर्द
- शरीर में दर्द
- नाक का बहना या अकसर बंद रहना
- अकसर बुखार आना

खान-पान पर इसका दोष मढ़ कर निश्चित हो जाते हैं, जबकि ये साइनस का संकेत भी हो सकता है। इसके कुछ संकेत चेहरे में अलग-अग जगहों पर दर्द के रूप में भी मिलते हैं।

रस से बनता मर्ज

आयुर्वेद में इस बीमारी को रस प्रदोषज विकार माना गया है। यानी इसमें बीमारी की वजह एक खास रस को माना गया है। आयुर्वेद के अनुसार खाना पचने से एक खास तरह का रस बनता है, जो स्वस्थ शरीर के लिए बेहद जरूरी है। जब कब्ज होता है तो यह रस नहीं बनता और बीमारी बढ़ती है। आयुर्वेद के हिसाब से खाना पचने के बाद पहले यह रस बनता है, फिर रक्त, मांसपेशियां आदि बनते हैं। कब्ज इस सारी प्रक्रिया को खराब कर देता है।

रसोई में इलाज

इसका आसान इलाज हर रसोई से मिलने वाली हल्दी में छिपा है। इसका ज्यादा से ज्यादा सेवन करना सही रहता है। हल्दी को दूध में मिलाकर पीना भी काफी लाभकारी होता है।

काढ़ा है कारगर

काली मिर्च का काढ़ा दिन में दो बार सुबह-शाम लेने से काफी आराम मिलता है। इसे गुनगुनी चाय के तरह धीरे-धीरे पिएं। काढ़े में 5 काली मिर्च, 10 तुलसी की पत्ती, 3 ग्राम कुटा हुआ अदरक और एक कप पानी लें। सारी सामग्री को पानी में डालकर तब तक उबालें, जब तक ये आधा ना रह जाए।

बचपन से होता है शुरू

बच्चों में एक साल की उम्र से ही साइनस की शुरूआत हो सकती है।
बच्चे में अगर कोल्ड बना रहता है तो ये साइनस के संकेत हो सकते हैं।
शुरू में सुधार जरूरी है, क्योंकि ऐसा ना किया गया तो 40 की उम्र तक आते-आते साइनस अस्थमा का रूप ले लेता है।

Harshit Joshi
9992220895

N.D. Joshi

shi
SYMBOL OF QUALITY

SHEETAL HOSE INDUSTRIES

Manufacturers of

All type of High & Medium Pressure Hose Assemblies

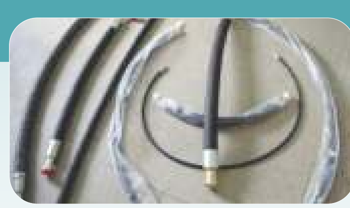

E-90-B, Mewar Industrial Area, Near Pllution Control Board, Office, Madri,
Udaipur - 313 003 (RAJ.) Tel.: 0294-2494056, Mob.: 94141 63056
E-mail: sheetalhose@gmail.com,   Website: www.sheetalhose.com

संस्कृत अध्येता के लिए रोजगार की अपार संभावनाएं

उमाशंकर

संस्कृत भाषा विश्व की प्राचीनतम भाषा है। भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा का अटूट संबंध है। संस्कृत मात्र भाषा न होकर एक संपूर्ण जीवन दर्शन है।इसमें भारतीय संस्कृति के उच्चादर्श, सांस्कृतिक विचार और नैतिक मूल्य समाहित है। संस्कृत की सहजता, आधुनिकता और वैज्ञानिकता को किसी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। संस्कृत केवल एक भाषा नहीं है, यह एक भावना है। हमारा ज्ञान और हमारी बुद्धि ही हमारा धन है सदियों से हमारी सभ्यता को आगे ले जाने और वसुधैव कुटुम्बकम के आदर्शों को प्राप्त करने की जिम्मेदारी हम सभी पर हैं। संस्कृत का अध्येता रोजगार के क्षेत्र में भी अपार संभावनाएं प्राप्त कर सकता है। ये रोजगार के अवसर सरकारी, निजी और सामाजिक सभी क्षेत्रों में उपलब्ध हैं।

प्रशासनिक क्षेत्र

प्रति वर्ष संघ लोक सेवा आयोग और राज्य लोक सेवा आयोग के विभिन्न पदों के लिए संस्कृत स्नातक उत्तीर्ण विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं।

प्रशिक्षित स्नातक अध्यापक

संस्कृत से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण और अध्यापन में प्रशिक्षण (बीएड) प्राप्त विद्यार्थी इसके लिए आवेदन कर सकते हैं।इनका चयन माध्यमिक विद्यालयों में अनिवार्य/ऐच्छिक विषय के रूप में संस्कृत अध्यापन के लिए किया जाता है।

स्नातकोत्तर अध्यापक

संस्कृत से स्नातकोत्तर (एमए) परीक्षा उत्तीर्ण और अध्यापन में प्रशिक्षण (बीएड) प्राप्त विद्यार्थी इसके लिए आवेदन कर सकते हैं। इनका चयन उच्च माध्यमिक विद्यालयों में संस्कृत अध्यापन के लिए किया जाता है।

सेना में धर्म शिक्षक

भारतीय सेना के भर्ती बोर्ड द्वारा समय-समय पर अधिकारी स्तर (जेसीओ) धर्म शिक्षक का पद विज्ञापित किया जाता है। संस्कृत से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण और शारीरिक मानदंड को पूर्ण करने वाले अभ्यर्थी इसके पात्र होते हैं।

अनुसंधान सहायक

सरकारी और गैर सरकारी क्षेत्र के विभिन्न शोध संस्थान शोध कार्य के लिए इनकी नियुक्ति करते हैं। इसके लिए अनिवार्य योग्यता संस्कृत विषय में स्नातकोत्तर (एमए)/पीएचडी है।

सहायक आचार्य

देश के विभिन्न केन्द्रीय विश्वविद्यालयों और राज्य विश्वविद्यालयों में संस्कृत अध्यापन के लिए सहायक आचार्य (असिस्टेंट प्रोफेसर) की नियुक्ति की जाती है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और विभिन्न राजय विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा और जेआरएफ उत्तीर्ण अभ्यर्थी इसके लिए पात्र होते हैं।

ज्योतिष और वास्तु

संस्कृत के वैकल्पिक विषय के रूप में ज्योतिष एवं वास्तु का विशिष्ट स्थान है दिल्ली विश्वविद्यालय सहित देश के अनेक विश्वविद्यालयों में इसका अध्यापन कार्य होता है। गृहवास्तु एवं औद्योगिक वास्तु के रूप में अध्ययन कर इसमें रोजगार की अपार संभावनाएं विद्यमान हैं।

अभिलेखाशास्त्र एवं पुरातत्व विज्ञान

संस्कृत के वैकल्पिक विषय के रूप में अभिलेखशास्त्र एवं पुरातत्वविज्ञान का अध्ययन कर इतिहास के क्षेत्र में भी रोजगार के अवसर प्राप्त किए जा सकते हैं।

पौरोहित्य एवं कर्मकांड

वेदों की रचना यज्ञों के लिए हुई और अमुक यज्ञ किस समय संपादित करना है यानी मुहूर्त के लिए ज्योतिषशास्त्र की जरूरत होती है। संस्कृत की पौरोहित्य एवं कर्मकांड विधा का अध्ययन कर रोजगार के अवसर सरलता से प्राप्त किए जा सकते हैं।

अनुवादक

सामाजिक क्षेत्रों और विभिन्न सरकारी प्रतिष्ठानों में साहित्य

एवं विभिन्न भाषा के पत्रों के अनुवाद के लिए इनकी नियुक्ति की जाती है। संस्कृत से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण और अनुवाद में डिप्लोमा करने वाली अभ्यर्थी इसके पात्र होते है।

योग शिक्षक

योग के माध्यम से किस प्रकार से शरीर को स्वस्थ रखा जा सकता है, इसके लिए सभी निजी और सरकारी संस्थानों में योग शिक्षक की नियुक्ति की जाने लगी है। योग शिक्षा में डिप्लोमा या अन्य उपाधि प्राप्त कर सरलता से देश या विदेश में रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

पत्रकार एवं समाचार वाचक

संस्कृत से स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण व पत्रकारिता में प्रशिक्षण प्राप्त अभ्यर्थी इसके पात्र होते हैं। डीडी न्यूज चैनल पर प्रसारित संस्कृत वार्ता और वार्तावली की लोकप्रियता से युवाओं का इस ओर आकर्षण बढ़ा है।

दार्शनिक एवं समाज सुधारक

संस्कृत भाषा चूंकि जीवन दर्शन है और इसमें निहित संस्कारों की अनुपालना कर एक अच्छे समाज का निर्माण किया जा सकता है। ऐसे दार्शनिक और समाज सुधारक के रूप में भी संस्कृत का विशिष्ट महत्व है।

संगणक भाषा विज्ञान

संस्कृत भाषा कम्प्यूटर के लिए आदर्श भाषा है और विभिन्न सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थानों में इस दिशा में कार्य किया जा रहा है। संस्कृत की इस विधा का अध्ययन कर रोजगार के अवसर भी प्राप्त किए जा सकते हैं। संस्कृत न केवल संस्कृत अध्येता को सुसंस्कृत बनाती है अपितु रोजगार के अनेक बेहतर अवसर प्रदान करती है। (लेखक संस्कृत-विभाग दिल्ली विश्वविद्यालय में शिक्षक हैं)

बुद्धि कौशल

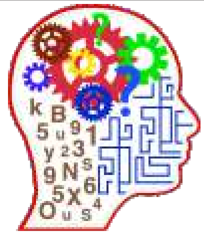

तलाशिए इन शब्दों को

नीचे दिए गए शब्दों को देखकर बताइए नए शब्द, जिनका प्रथम अक्षर ए या ऐ हो।

1. जमा करना/होना,
2. ध्यान मग्न
3. प्रभुत्व
4. ग्यारह
5. अमीबा
6. अभिन्न
7. तुरंत
8. जो बहुत से दलों का सदस्य न हो
8. अधिनायकत्व
10. संगठित रहना,
11. इस प्रकार
12. पक्षपातीय
13. एक तार वाला वाद्य
14. मिलजुल कर
15. गणेशजी का नाम
16. द्रोणाचार्य का भील शिष्य
17. मेवाड़ के कुलदेवता
18. एक बार में पूरा धन देना
19. मानचित्रावली
20. एक ईश्वर को मानना
21. हर एक
22. शरीर के भीतरी अंगों का छायाचित्र
23. और
24. घोषणा
25. ऐसा ही हो (संस्कृत शब्द) ए से शब्द
26. भोगविलास
27. चश्मा
28. इतिहास संबंधित
29. वैभव
30. भौतिक
31. इन्द्र के हाथी का नाम
32. व्यभिचारी

उत्तर अन्य पृष्ठ पर

Happy Independence day

CENTURYPLY

Girish Maheshwari
Mob.: 99280-36105
99280-35658

Century Plyboards (I) Limited

Maheshwari Brothers

Brij Bhawan, 385, I-1 Road, Bhupalpura,
Near Maharashtra Bhawan, Udaipur (Raj.)
E-mail: girishm421@gmail.com

डेंगू डरिए मत सावधान रहिए

बरसात का मौसम जाते-जाते डेंगू के मामलों में इजाफा होने से सांसत बढ़ रही है। खासकर बुजुर्गों के मामले में चिंता और बढ़ जाती है क्योंकि उम्र बढ़ने के साथ रोगों से लड़ने में कारगर इम्युनिटी पहले से कम हो जाती है। ऐसे में बुजुर्गों को डेंगू हो जाए तो उबारने के लिए सेहत में बदलावों पर बारीकी से नजर रखना जरूरी है।

डॉ. विजय गुर्जर

बच्चों की तरह बुजुर्गों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता कमजोर होती है, इस वजह से उन्हें भी डेंगू फैलाने वाला एडीज मच्छर आसानी से बीमार कर सकता है। पिछले कुछ वर्षों में देखा गया है कि डेंगू के शुरुआती दिनों में तीन चौथाई मरीज एसिम्टोमेटिक होते हैं। जब तक डेंगू का अंदेशा सामने आता है, तब तक प्लेटलेट्स गिरने लगते हैं। शरीर में पनपने वाला वायरस किडनी, लिवर, लंग्स, हार्ट और ब्रेन जैसे अंगों पर हमला शुरू कर देता है।

समय पर पहचान से बचेगी जान

बुजुर्गों में बुखार की सभी परेशानियों में लक्षण एक जैसे होते हैं। उम्रजनित कारणों से कुछ अन्य लक्षण भी उभरते हैं। जिनका बीमारी से सीधा संबंध नहीं होता है। ऐसे में स्वत: अनुमान लगाना कठिन होता है कि डेंगू, मलेरिया, इंफ्लुएंजा, टायफाइड है या कोविड तो नहीं। इनमें से हर बीमारी में बुखार के साथ-साथ दूसरे लक्षण भी होते हैं। इसलिए

अलर्ट रहना चाहिए कि बुखार होने पर तुरंत जांच कराएं। समय पर बीमारी की पहचान और जल्दी इलाज शुरू होने से जल्दी ठीक होने की संभावना बढ़ जाती है।

डी टू स्ट्रेन हो तो ज्यादा एहतियात बरतें

डेंगू के चार स्ट्रेन होते हैं। जांच और लक्षण के आधार पर डॉक्टर ही इसके बारे में बता सकते हैं। बुजुर्गों के लिए डी टू स्ट्रेन ज्यादा खतरनाक माना जाता है। इस स्ट्रेन से संक्रमित होने पर तीन दिन बाद बुखार ठीक हो जाता है, लेकिन उसके अगले 48 घंटे ज्यादा खतरनाक होते हैं। हालांकि नियमित चिकित्सकीय सलाह और उचित देखभाल से इस पर काबू पाया जा सकता है।बुजुर्ग मरीजों में डेंगू की वजह से डिहाइड्रेशन की दिक्कत हो सकती हैं। इसके लिए सबसे जरूरी है तरल पदार्थ को लेते रहना। इस मौसम में बुजुर्गों की सेहत में होने वाले बदलावों पर भी बारीकी से नजर रखें।

क्या करें

- युवाओं और बच्चों की अपेक्षा बुजुर्गों में डेंगू होने पर ब्लड प्रेशर अचानक बढ़ने-घटने की समस्या आती है। इसे नियंत्रित करें।
- बुजुर्गों में शरीर को लगातार हाइड्रेट रखना डेंगू नियंत्रित करने का सबसे कारगर तरीका है।
- बुजुर्गों में प्लेटलेट्स तेजी से गिरते हैं इसलिए इसकी नियमित जांच जरूरी है।

क्या न करें

- डेंगू के सीजन में बुजुर्गों को बुखार आए तो चिकित्सकीय सलाह में देरी न करें।
- खुद से इलाज न करें क्योंकि उम्रजनित बीमारियों के कारण बिना जांच दवा देना दूसरी समस्याओं को जन्म दे सकता है।
- प्लेटलेट्स के लिए दबाव न डालें क्योंकि उम्र के अनुसार शरीर में स्वीकार्यता या सुधार कितना होगा, डॉक्टर बेहतर तय कर सकते हैं। सामान्यतया समय पर इलाज शुरू हो जाए तो प्लेटलेट्स की जरूरत नहीं होती।

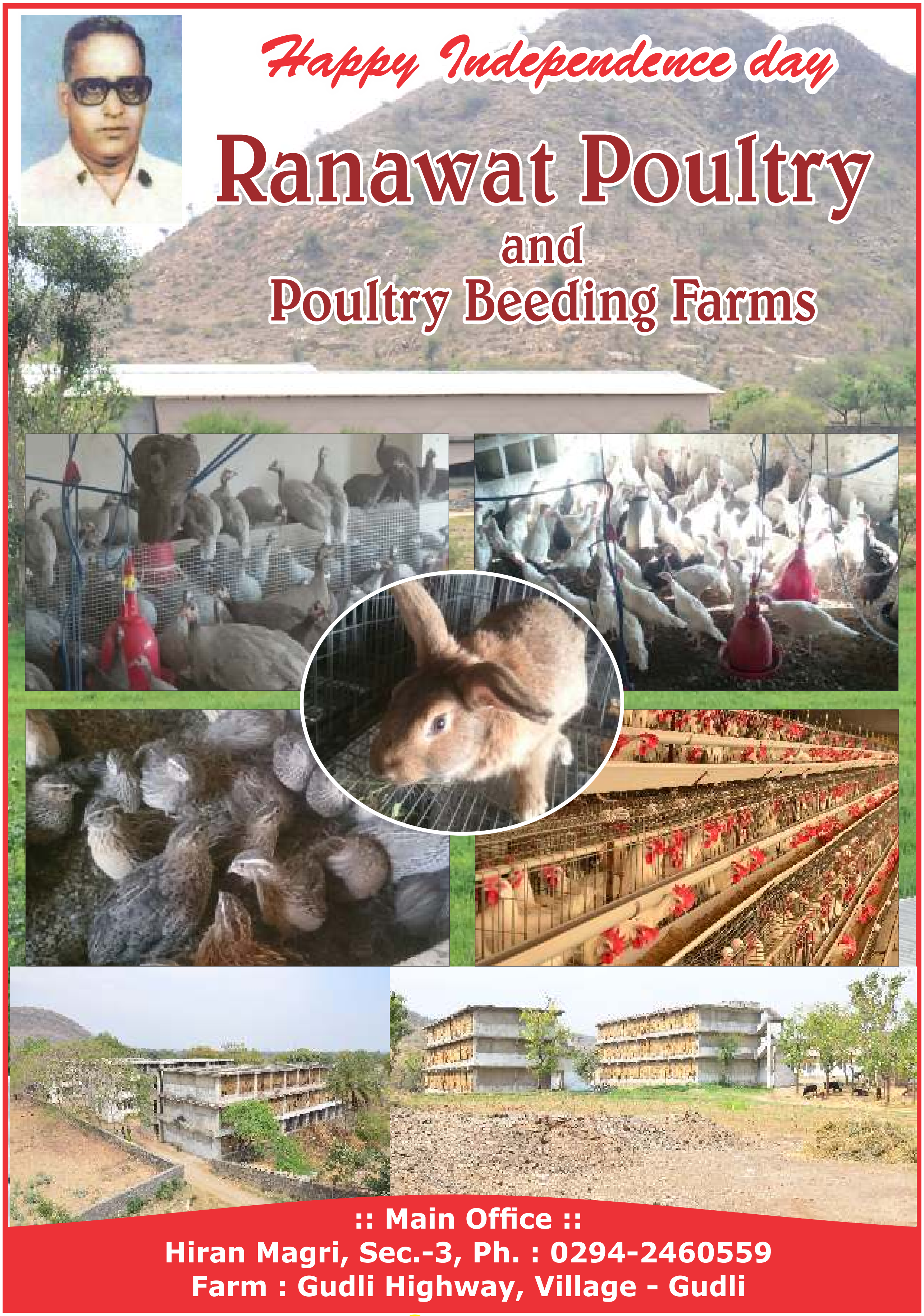
Happy Independence day
Ranawat Poultry
and
Poultry Beeding Farms
:: Main Office ::
Hiran Magri, Sec.-3, Ph. : 0294-2460559
Farm : Gudli Highway, Village - Gudli

नौ दिन–तीन काल

देवी पूजा का एक क्रम बताया गया है, जैसे गुरु, गणपति, शिव, दुर्गा (देवी क्रमों में पहले पार्वती, फिर महाकाली, महासरस्वती और महालक्ष्मी), नारायण भगवान और अंत में नवग्रह शांति।
देवी कवच, अर्गलास्रोत्र व कीलक्रम का खाली पाठ न करें। साथ में दुर्गा सप्तशती का पांचवा, आठवां, सप्तश्लोकी दुर्गा या सिद्ध कुंजिका का पाठ करें। सिर्फ अर्गलास्रोत्र का पाठ कर सकते हैं, पर कवच व कीलक के साथ एक पाठ अतिरिक्त करना होगा।
एक मंत्र ही नौ दिन जप करें। नौ दिन तीन काल–तीन सिद्धकुंजिका स्रोत्र के पाठ से नौ देवियों, दश महाविद्या व षोड्श माताओं की पूजा एक साथ हो जाएगी।

देवी के बीच मंत्रों की ऊर्जा

श्री दुर्गा सप्तशती सौ श्लोकों का ग्रंथ है। यह केवल देवी चरित नहीं है। इसमें चार तत्व शोधन यानी चिकित्सा भी है।
ॐ ऐं आत्मतत्वं शोधयामि
ॐ ह्रीं विद्यातत्वं शोधयामि
ॐ क्लीं शिवतत्वं शोधयामि
ॐ ह्रीं क्लीं सर्वतत्वं शोधयामि
इसके मूल में बीज मंत्र हैं। हर बीज मंत्र की अपार शक्ति है। पूरी दुर्गा सप्तशती में सवा सौ से भी अधिक बीज मंत्र है। प्रसिद्ध बीजमंत्री 'ॐ एं ह्रीं क्लीं ' है। यह बीज मंत्र हमारी शरीर के तीन अवयव मन–बुद्धि–विवेक को नियंत्रित करता है। हर मंत्र की स्तंभन शक्ति है, जो शरीर को स्वस्थ रखने का कार्य करती है।
नवरात्रि में बीज मंत्रों से भी पूजा हो सकती है। यदि विधि–विधान से पूजा करने का अवसर नहीं मिले, तो बीज मंत्रों के माध्यम से देवी की आराधना हो सकती है। ये समस्त बीज मंत्र आत्मबल वृद्धिकारक और शोधन के हैं। कुछ बीज मंत्र इस प्रकार हैं– ॐ दुं दुर्गायै नमः, ॐ श्री क्लीं ह्रीं, ॐ श्रीं श्रीं क्लीं हूं, ॐ ऐं ह्रीं क्ली चामुण्डायै विच्चे, भ्रां, भ्रूं आदि। इनमें से किसी भी एक मंत्र को सामर्थ्य के अनुसार पढ़ा जा सकता है।

नवरात्रि में आत्मबल के लिए आराधना

26 सितम्बर से प्रारंभ शारदीया नवरात्रि आत्मबल को प्रबल करने का अवसर है। नवरात्रि में नौ रूपों में देवी जनमानस के बीच आती हैं और तन–मन के शोधन का महत्व समझाती हैं। उनके नौ रूपों की आराधना का क्रम दरअसल हमारी जीवन की वरीयताएं क्या होनी चाहिए, यह भी समझाता है। सबसे पहले प्रकृति और प्रवृत्ति तथा सबसे अंत में धन।

सूर्यकांत त्रिवेदी

नवरात्रि यानी आत्मचिंतन और प्रकृति से एकाकार होने का एक पावन समय है। इस पर्व के पीछे हमारी सनातन परम्परा, सजगता और ऋतु जनित व्याधियों से लड़ने की तैयारी भी छिपी है। ऋतु परिवर्तन होने पर शरीर का आत्मबल कमजोर पड़ जाता है। ऐसे में नवरात्रि के रूप में हमको यह संदेश दिया जाता है कि नौ दिन तक अपने को ऋतु के मुताबिक तैयार करो। व्याधियों से लड़ने के लिए शारीरिक अनुशासन का पालन करो। इसलिए, हर ऋतुकाल में नवरात्रि के नौ दिन शारीरिक अनुशासन का संदेश लेकर आते हैं। हर प्राणी के कुछ बल कहे गए हैं। मनुष्य के बलों में तीन बल आते हैं–विद्या, बुद्धि और विवेक। जिसके पास ये तीनों हों, उसमें आत्म विश्वास की कमी नहीं होती और न ही उसका आत्मबल कमजोर पड़ता है। इसी प्रकार से तीन शोधन भी हैं। मनुष्य के लिए यह तीन शोधन–वात, पित्त और कफ हैं यानी शरीरिक दृष्टि से अपने को मजबूत करना। धन का स्थान बाद में आता है, पहले तन और मन के प्रकाश की कामना की गई है। और देवी भगवती की आराधना का पहला मूल मंत्र ही यही है बल प्राप्त करना और शरीर का शोधन करना। जिसने इसे प्राप्त कर लिया, उसका जीवन आलोकित हो गया। मन की दो अवस्थाएं होती हैं। वह माया मोह में पड़ता है या फिर नकारात्मक ऊर्जा की और जाता है। देवी कहती भी हैं, मन सबके पास होता है, हर जीव जंतु अपना भला–बुरा सोचता है, लेकिन उसको यह नहीं पता होता कि कब क्या करना है। विवेक की पूंजी तो केवल मनुष्य के पास है और किसी के पास नहीं। यही समझाने के लिए देवी भगवती नवरात्रि में नौ रूपों में आती हैं। प्रकृति के लेकर

अंश–वंश तक का समस्त अर्थशास्त्र समझाती हैं। देवी भगवती, महालक्ष्मी के रूप में सौभाग्य प्रदान करती हैं, काली के रूप में सृष्टि में अनुशासन रखती हैं और सरस्वती के रूप में शब्द सुर संसार का संचालन करती हैं। देवी का पहला स्वरूप शैलपुत्री है और दूसरा स्वरूप ब्रह्मचारिणी का। नवां स्वरूप सिद्धिदात्री यानी लक्ष्मी है। यह क्रम बदल भी सकता था, लेकिन देवी ने सबसे पहले अपना स्वरूप प्रकृति और प्रवृत्ति रखा। धन का स्थान अंत में है। नवरात्रि भी प्रकृति का ही उत्सव है। संकेत साफ है कि प्रकृति बिगड़ी तो आपदा या महामारी निश्चित है। देवी भले ही एक स्त्री के रूप में परिभाषित हों, लेकिन वह आत्मबल हैं, वह आद्या है। देवी शास्त्रों में उनके तीन बल कहे गए हैं–सतोगुण, रजोगुण और तमोगुण। देवी वस्तुतः आपदा की देवी हैं। जब सृष्टि में महामारी फैली, आपदा आई तो देवी भगवती ने जन्म लिया। फिर चाहे वह शाकुंभरी बनकर आई हों या शताक्षी बनकर या पिताबंरा के रूप में। ऐसे में तमाम महामारी और व्याधियों को जीतने का एक ही मंत्र है–आत्मबल। देवी आराधना आत्मबल की प्रतीक है। श्री दुर्गा सप्तशती का प्रारंभ ही कवच से होता है। यह तन–मन का संदेशात्मक कचव है। विभिन्न देवियां शारीरिक अंगों की शक्ति है। समग्र रूप से यह शक्तियां दुर्गा या भवानी का रूप लेती हैं, जिसे शरीर कहा जाता है। शरीर के समस्त अवयवोंकी शक्तियां ही ऋतु–व्याधियों से लड़ती हैं। अर्गलास्रोत्र में, देवी काली से प्रार्थना होती है कि वह जगत का कल्याण करें। इसमें भी आरोग्यता प्रथम है। कीलकम गुप्त है। यह मानसिक तप है। जप है।

श्राद्धपक्ष में 'सांझी' मंडन

प्रिशा शर्मा

श्राद्धपक्ष में कुमारी बालिकाओं का धार्मिक अनुष्ठान सांझी शुरू हो जाता है। इन दिनों प्रतिदिन संध्या को वे अपने घर के बाहर गोबर से भांति–भांति के चितरावण कर उन्हें रंग–बिरंगे फूलों से सजाती हैं। सांझी पूर्ण होने पर उसकी आरती करती हैं, गीत गाती हैं और प्रसाद–स्वरूप गुड़–धनिया बांटती हैं। तिथि के अनुसार एकम से एक तारा, एक पछेटा, बीज को बाज–दूने, तीज को तिबारी जैसी समानधर्मी आकृतियां विस्तार पाती हुई द्वादशी को एक बड़े कोट का रूपाकार लेती हैं। इस कोट को किलाकोट भी कहते हैं। किले से तात्पर्य दुर्ग और कोट से उसकी सुरक्षा दीवार से है। इस कोट में पिछली तिथियों को बनाये गए अंकन के साथ सर्वाधिक मुख्य रूप में बैल गाड़ी को दिखाया जाता है। जिसमें संझ्या बैठी हुई दिखाई देती है। यह उसकी विदाई का दृश्य होता है। कोट के बाहर नीचे की ओर खापरिया चोर, ढोल वादक, दूध–दही लिए गुजरी, कचरा, बुहारती महिला, जशोदा एवं पतली फ्रेम के अंकन दिखाए जाते हैं जो अपने मिथक लिए हैं। कोट के चित्रण से यह स्पष्ट है कि सांझी का संबंध राजपरिवार से रहा है। श्राद्ध में उसका स्मरण निश्चय ही जनजीवन में उसकी लोकप्रियता और राजपरिवार के प्रति लोगों की सहानुभूति का सूचक है। बालिकाएं सांझी को एक व्रत और अनुष्ठान की तरह लेती हैं। प्रतिदिन संध्या को उसका चित्रांकन कर रात्रि होते–होते अनुष्ठान के रूप में उसकी पूजा करती हैं। राजस्थान की यह सांझी बृज में जाकर कृष्ण की विविध छवियों की प्रतीक बन गई और अन्य प्रांतों में भी वहां की स्थानीयता का रंग उसने ग्रहण कर लिया किंतु गोबर के अंकनों और उन्हें सजाने के तौर तरीकों में आंचलिक परिवेश और उससे जुड़ी वनस्पतियां, अन्न–कण, धातुपरक विन्यास एवं अन्य उपयोगी सजावटी वस्तुएं सांझी को अधिकाधिक आकर्षक बनाने का माध्यम बनीं। इन्हीं दिनों गोबर की सांझी के अलावा मंदिरों में भगवान के सम्मुख जल की सांझी बनाई जाती है। पानी के बर्तन में कृष्णलीला परक स्टेंसिल रखकर विविध रंगों की भुरकी देकर जो सांझी चितेरी जाती है वह बड़ी ही अद्भुत और चित्त को हर लेने वाली होती है। नाथद्वारा के श्रीनाथ मंदिर के विशाल कमल चौक में कदली पत्तों की कटिंग कर कृष्णलीला से संबंधित जो छवियां दिखाई जाती हैं वे यहां की विशेषता है। सांझी का उत्सव अजमेर के राजा बीसलदेव के राज परिवार से जुड़ा मिलता है। बगड़ावत लोकगाथा में इसका जिक्र है। उसके अनुसार सांझी की परंपरा करीब एक हजार वर्ष पुरानी है। बालिकाओं में जीवनधर्मी कला सौंदर्य की चेतना का सांझी श्रेष्ठ आदर्श है। इसके माध्यम से प्रकृति के विभिन्न परिवेश के पेड़–पौधों, फूल–पत्तियों, ग्रह–नक्षत्रों तथा गृहस्थ जीवन में प्रतिदिन के सहयोगी उपादानों एवं जीवनपयोगी संस्कारों की जानकारी मिलती है साथ ही सौंदर्य बोध के प्रति बालिकाओं की चेतना विकसित होती है, जो आगे जाकर उनके सफल विवाहित जीवन को साकार करती हैं। सांझी राजस्थान और प्रमुखतः मेवाड़ अंचल में सर्वाधिक व्याप्त है। यहां से इसकी धारा गुजरात, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, हिमाचल,पंजाब, महाराष्ट्र और ठेठ नेपाल तक देखने को मिलती है। लोकदेवी सांझी पर कई दृष्टियों से अध्ययन के आयाम विस्तार लिए हैं। सांझी मंडन अब शहरों में कम और गांवों–कस्बों में ही देखने को मिलता है। शहरों में रस्मीतौर पर बाजार से कागज पर बनी बनाई सांझी लाकर यह अनुष्ठान पूरा किया जाता है।

10 सितम्बर से श्राद्धपक्ष आरंभ हो रहा है। इसके साथ ही कुंवारी बालिकाओं का धार्मिक अनुष्ठान 'सांझी' भी शुरू हो जाएगा। जिसका समापन भी श्राद्धपक्ष के साथ ही होगा। इन दिनों रोजाना संध्या काल में बालिकाएं अपने घर के बाहर दीवार पर गोबर से भांति–भांति के चितरावण कर उन्हें विविध किस्मों व रंगों के पुष्पों से सजाती हैं।

जे.के. टायर का करियर परामर्श सत्र

कांकरोली। जे.के. ग्राम स्थित लक्ष्मीपत सिंघानिया विद्यालय में कक्षा दसवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों के लिए करियर परामर्श सत्र का आयोजन 25-26 जुलाई को किया गया। यह कार्यक्रम जे.के. टायर के सीएसआर पहल के अंतर्गत दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर तथा शिक्षा क्षेत्र में अग्रणी गैर सरकारी संगठन 'आगाज' के तत्वावधान में हुआ। शुभारंभ विधायक दीप्ति माहेश्वरी, जे.के. टायर प्रबंधन आर.केडिया, अनिल मिश्रा एवं राकेश श्रीवास्तव ने दीप प्रज्वलित कर किया। प्रोफेसर डॉ. चंद्रकांत माथुर ने कक्षा दसवीं और बारहवी के विद्यार्थियों को वर्तमान परिस्थिति के आधार पर परंपरा से हट कर करियर निर्माण के विशाल दायरे से परिचित करवाया, प्रोफेसर एस.एस.पाल सिंह ने कक्षा दसवीं और बारहवीं के विद्यार्थियों को नई शिक्षा नीति से अवगत करवाते हुए विषय के चयन में सतर्कता का बोध करवाया। विद्यालय के प्रबंधक अनिल मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने बताया कि आज के दौर में प्रतियोगिता के साथ करियर निर्धारण के क्षेत्र भी काफी विस्तृत हो गए हैं अत: विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को सतर्कता के साथ भविष्य निर्धारित करना चाहिए। इस कार्यक्रम से कुल 600 विद्यार्थी लाभान्वित हुए। 'आगाज' के साथ इन विद्यार्थियों का निरंतर संपर्क रहेगा तथा भविष्य में भी ये करियर निर्धारण के सम्बंध में मार्गदर्शन लेते रहेंगे। ज्ञातव्य हो कि इसी प्रकार का कार्यक्रम राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, एमड़ी में भी जे.के. टायर द्वारा आयोजित किया गया जिसमें विद्याथियों ने बढ़ चढ़ कर अपनी रूचि दिखाई।

किरण-सोनल बनी बैंक अध्यक्ष

उदयपुर। उदयपुर महिला अरबन को-ऑपरेटिव बैंक के चुनाव में अध्यक्ष व उपाध्यक्ष निर्विरोध निर्वाचित हुए। दी उदयपुर महिला समृद्धि अरबन बैंक में निर्वाचित संचालक सदस्यों ने डॉ. किरण जैन को अध्यक्ष एवं विमला मूंदड़ा को उपाध्यक्ष निर्विरोध चुना। इस दौरान ग्रामीण विधायक, फूलसिंह मीणा, निवर्तमान अध्यक्ष विद्याकिरण अग्रवाल, निवर्तमान उपाध्यक्ष सुनीता मांडावत, भाजपा नेता प्रमोद सामर, उप महापौर पारस सिंघवी, पार्षद लोकेश कोठारी आदि उपस्थित थे। किरण जैन तीसरी बार उपाध्यक्ष बनी हैं। इसी प्रकार दी उदयपुर महिला अरबन को-ऑपरेटिव बैंक की अध्यक्ष सोनल अजमेरा व उपाध्यक्ष राधिका सिंह निर्विरोध चुनी गई। इस अवसर पर निर्वतमान अध्यक्ष पुष्पा सिंह, पूर्व अध्यक्षा सविता अजमेरा आदि मौजूद थीं।

आशीष वया को पीएचडी

उदयपुर। जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विवि ने एज्यूकेशन संकाय में आशीष वया को भावनात्मक बुदिध और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षणिक और सामाजिक तनाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य करने पर पीएचडी की उपाधि प्रदान की। डॉ. वया ने अपना शोध कार्य प्रो. शशि चित्तौड़ा के निर्देशन में किया।

खमेसरा व सुराणा पुन: निर्विरोध निर्वाचित

उदयपुर। उदयपुर मार्बल प्रोसेसर समिति के वार्षिक चुनाव हुए। इसमें अध्यक्ष राजेश खमेसरा, महासचिव कपिल सुराणा सहित पूरी कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित हुई। समिति के चुनाव अधिकारी महेंद्र टाया ने बताया कि चुनाव में अध्यक्ष राजेश खमेसरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष डॉ. हितेश पटेल, उपाध्यक्ष रेवत सिंह राठौड़, संयुक्त सचिव कलित भंडारी, कोषाध्यक्ष संजय कोठारी के साथ मंगलेश शाह, आनंद पटवा, रमेश जैन, सुनील लुणावत, कपिल पोद्दार, विकास पोरवाल कार्यकारिणी सदस्य निर्वाचित किए गए। नव निर्वाचित अध्यक्ष राजेश खमेसरा ने अपने संबोधन में कहा कि उदयपुर की मार्बल मंडी वर्तमान में एशिया की सबसे बड़ी निर्यात मंडी है। इसे विश्व स्तरीय बनाना एवं उस स्तर की सुविधा मुहैया कराना हमारा पहला लक्ष्य होगा। बैठक में प्रमुख उद्योगपति मांगीलाल लुणावत,शरत कटारिया, विजय गोधा, मुकेश मोदी, ओम प्रकाश, अग्रवाल, बसंत काबरा, प्रदीप बाबेल आदि उपस्थित रहे।

संदीप गर्ग को पी.एच.डी उपाधि

उदयपुर। टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर द्वारा उदयपुर निवासी संदीप गर्ग को पी.एच.डी की उपाधि प्रदान की गई है। मेवाड़ बीएससी नर्सिंग कॉलेज, उदयपुर में कार्यरत गर्ग ने डॉक्टर एस.आर.गजेन्द्र सिंह के निर्देशन में राजस्थान में उदयपुर जिले के चयनित अस्पतालों में भर्ती श्वसन संबंधित बीमार बच्चों में चेस्ट फिजियोथेरेपी के साथ नेबुलाइजेशन के प्रभाव का आंकलन करने के संदर्भ में शोधकार्य किया।

विभूतियों को 'भास्कर-सम्मान'

जयपुर। समाज के विभिन्न क्षेत्रों में योगदान व बदलाव के लिए अहम भूमिका निभाने वाले 70 कर्मवीरों को पिछले दिनों जयपुर में दैनिक भास्कर की ओर से सम्मानित किया गया। मौका था 'प्राइड ऑफ राजस्थान' कार्यक्रम का। सीएम अशोक गहलोत ने इन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में सीएम के साथ भास्कर समूह के डिप्टी एमडी पवन अग्रवाल व स्टेट एडिटर मुकेश माथुर भी मौजूद थे। सम्मानित होने वालों में उदयपुर के अर्थ ग्रुप के सीईओ डॉ. अरविंदर सिंह (कॉस्मेटिक डर्मेटोलॉजी) डॉ भूपेन्द्र श्रीमाली प्रबंध निदेशक, महाराणा प्रताप संग्रहालय, हल्दीघाटी, प्रवीण सुथार प्रोपराईटर, लोटस हाई-टेक इण्डस्ट्रीज व उद्धव पौद्दार, एमडी भूमिका एन्टर प्राइजेज प्रा.लि. शामिल हैं।

सीपीएस में एरोबे लेब का उद्घाटन

उदयपुर। पिछले दिनों सेंट्रल पब्लिक सी. सैकंडरी स्कूल में राजस्थान की पहली एरोबे लेब का उद्घाटन स्कूल की चेयरपर्सन अलका शर्मा ने किया। इस अवसर पर प्रणव (13) व निहाल (11) ने एयर मॉडल्स का प्रदर्शन किया। शर्मा ने बताया कि यह लेब एक्सपेरिमेंट लर्निंग, थियोरेटिकल और प्रेक्टिकल लर्निंग के बीच सेतु का काम करती है।

विद्यालय तो गली-गली में हैं, पर बात तो परिणाम एवं संस्कारों की है।

NOBLE INTERNATIONAL SCHOOL

An English Medium School

2, Sagar Darshan, Rani Road, Udaipur (Raj.)

Contact : 0294-2430930, 94135-31043

मान्यवर अभिभावक जी, 'सादर वन्दे' मानव संतति भगवान की एक सबसे सुन्दर कृति एवं एक अमूल्य निधि है। इसका पालन पोषण, रक्षा एवं सुशिक्षा मनुष्य का परम पावन कर्त्तव्य होता है। आपके ऐसे शिशु जो चलने फिरने योग्य हो गये हैं जो 3 से 4 वर्ष के होने जा रहे हैं या विद्यालय तो जा रहे हैं पर जिनके शैक्षिक स्तर से आप संतुष्ट नहीं हैं। उन्हें नोबल इन्टरनेशनल स्कूल अपने वात्सल्यमयी वातावरण में सादर आमंत्रित करता है।

ADMISSION OPEN FOR PLAY GROUP TO X FOR 2022-23

Sailent Features : ● No pressure of home work, complete work is done in school ● No Burden of heavy school bag. ● Only once a week school bag is sent at home ● After and before the school child will be free from home work and home tution ● The school takes responsibility even up to his/her home for etiquettes and behavior ● Complete English Medium School English speaking is compulsory for stduents & teachers from class II on words ● Teacher students ratio is as
● Nur.- 1:12, K.G.-1:24, Prep to VII- 1:30 ● Free computer education
● Daily different competitions & Co-curricular activities.

कक्षा 10 एवं 12 का सतत् शत-प्रतिशत गुणवत्तापूर्ण परीक्षा परिणाम

Study through stress relief and playway method.
Small class size of 25 strudents only for better individual attention.
Class 6th onwards separate spoken English and personality development classes.

उदयपुर के अन्य विद्यालयों में 3 से 5 वर्ष तक के शिशु को कक्षा नर्सरी से K.G. में जितना दो सत्रों में सिखाया जाता है, उतना नोबल स्कूल में एक सत्र में ही सिखाया जाता है।

Administrator

ईडी को सुप्रीम 'अभयदान'

गौरव शर्मा

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद ईडी (प्रवर्तन निदेशालय) देश की सबसे शक्तिशाली जांच एजेंसी बन गई है, जिस पर आपराधिक न्याय प्रक्रिया संहिता (सीआरपीसी) के प्रावधान लागू नहीं होते। वह किसी को भी गिरफ्तार कर सकती है। उसकी संपत्ति जब्त कर सकती है और छापेमारी कर सकती है। ईडी मामलों में यह जिम्मेदारी भी अभियुक्त की ही है कि वह बताए कि उनके पास कथित धन कहां से आया।

सबसे ज्यादा चर्चा में इन दिनों कोई संगठन है, तो वह प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) है। हालांकि यह चर्चा ज्यादातर उन राजनीतिक लोगों से संबंधित मामलों को लेकर है, जिनकी निदेशालय जांच कर रहा है। निदेशालय मुख्य रूप से धन शोधन निवारण कानून के तहत मनी लॉन्ड्रिंगके मामलों की जांच करता है, यानी मोटे तौर पर उस काले धन की जांच करता है, जिसका इस्तेमाल तमाम गलत धंधों के अलावा तस्करी या आतंकवाद तक में होता है।

ईडी की तेज होती गतिविधियों से भ्रष्टाचार में लिप्त, खासकर विपक्षी दलों के नेता खासे आहत थे। इसे लेकर उन्होंने अलग-अलग अदालतों में चुनौती दी थी। सर्वोच्च न्यायालय ने उन सभी दो सौ बयालीस याचिकाओं पर एक जगह सुनवाई करते हुए आदेश दिया कि प्रवर्तन निदेशालय को गिरफ्तार, कुर्की और जब्ती जैसे दिए गए अधिकार वाजिब हैं। दरअसल, बीस साल पहले बने कानून में प्रवर्तन निदेशालय को गिरफ्तारी, कुर्की और जब्ती आदि का अधिकार तब तक हासिल नहीं था, जब तक वह इसका औचित्य साबित न कर दे। वर्तमान केन्द्र सरकार ने उस कानून को बदल कर और कड़ा बना दिया, जिसके तहत उसे अदालत में अपना पक्ष साबित किए बगैर भी गिरफ्तारी और संबंधित व्यक्ति की संपत्ति जब्त करने का अधिकार दे दिया गया था। इसी संशोधन को अदालत में चुनौती दी गई थी।

याचिका में कहा गया था कि एक तो यह कानून मूल अधिकारों का उल्लंघन करता है, इसलिए असांविधानिक है। दूसरे, निदेशालय कोई पुलिस बल नहीं है, लेकिन उसे छापा मारने, कुर्की और गिरफ्तार करने जैसे वे अधिकार दिए गए हैं, जो पुलिस के पास होते हैं। कुछ अधिकार तो पुलिस से भी ज्यादा हैं। मसलन, पुलिस के सामने दिए गए इकबालिया बयान को अदालत में पेश नहीं किया जा सकता, जबकि निदेशालय के समय दिए गए बयान को पेश किया जा सकता है। याचिका में निदेशालय के इन्हीं अधिकारों पर आपत्ति उठाई गई थी। वैसे यह कोई पहला मामला नहीं है, जब 2002 में बने इस कानून को अदालत में चुनौती दी गई हो। 2017 में तो सुप्रीम कोर्ट ने इस कानून पर रोक ही लगा दी थी। अगले ही साल संसद में पेश किए गए वित्त विधेयक के जरिये इसमें संशोधन कर इसे फिर लागू कर दिया गया। इस बार वित्त विधोयक के जरिये इसे संशोधित करने का मुद्दा भी याचिका में उठाया गया था। सुप्रीम कोर्ट की तीन सदस्यीय पीठ ने 27 जुलाई को धन शोधन कानून और निदेशालय के अधिकारों पर की गई सारी आपत्तियों को खारिज कर दिया, यानी इस कानून के तहत छापा मारने,

लोगों को गिरफ्तार करने वगैरह के निदेशालय के अधिकार बरकरार रहेंगे।

अब जब सर्वोच्च न्यायालय ने प्रवर्तन निदेशालय के अधिकारों को संवैधानिक करार दे दिया है, तो इसे लेकर न सिर्फ विवाद की गुंजाइश खत्म हो गई, बल्कि ईडी के लिए धनशोधन से जुड़े मामलों की जांच, गिरफ्तारी आदि को लेकर मनोबल बढ़ा है। दरअसल विवाद कानून में संशोधन को लेकर उतना नहीं है, जितना सरकार के इशारे पर ईडी के छापों को लेकर है।

प्रवर्तन निदेशालय ने 2011 के बाद से अब तक सत्रह सौ छापे मारे, जिनमें से करीब पन्द्रह सौ सत्तर की गहन जांच की गई, मगर उनमें से केवल नौ को दोषी पाया गया। इससे जाहिर है कि इतनी बड़ी संख्या में बाकी लोगों को नाहक परेशानी और बदनामी झेलनी पड़ी। इनमें से कई लोगों की संपत्ति भी जब्त की गई। फिर पिछले आठ सालों में यह भी स्पष्ट देखा गया कि विपक्षी नेताओं पर ही ईडी ने शिकंजा कसा, जबकि जो लोग दूसरे दलों से सत्तापक्ष में शामिल हो गए, उनके खिलाफ आज तक कोई कार्रवाई नहीं हुई, हालांकि उनके धनशोधन संबंधी अपराध जग जाहिर हैं। धनशोधन का मामला देश की सुरक्षा से भी जुड़ा है। इसके जरिये बहुत सारे आतंकी संगठनों और नशीले पदार्थों के कारोबार को भी वित्तीय मदद पहुंचाई जाती है। अदालत ने माना है कि यह किसी आतंकवाद से कम नहीं है। इससे केवल देश और समाज को वित्तीय नुकसान नहीं पहुंचता, बल्कि देश की संप्रभुता और अखंडता को भी खतरा पैदा होता है। इसलिए इस कानून को दी गई चुनौती पर स्वाभाविक ही अदालत ने विपरीत फैसला देने से परहेज किया।

ईडी को पुलिस नहीं माना

ईडी अधिकारियों को पूछताछ में दिया गया बयान धारा 50 के तहत कोर्ट में स्वीकार्य है, क्योंकि ईडी को पुलिस नहीं माना गया है। वहीं सामान्य अपराधों में पुलिस को दिया गया बयान साक्ष्य अधिनियम की धारा 25 (पुलिस के समक्ष इबालिया बयान को सिद्ध नहीं करना) के तहत कोर्ट में स्वीकार्य नहीं माना जाता है।

ईसीआईआर प्राथमिकी नहीं

ईडी की ईसीआईआर को प्राथमिकी नहीं माना गया है और इसलिए इनकी जानकारी अभियुक्त को देना अनिवार्य नहीं है। न ही इसे 24 घंटे के अंदर न्यायिक मजिस्ट्रेट को भेजना आवश्यक है। सीआरपीसी की धारा 154 के तहत यह अनिवार्य है, जबकि डीके बसु केस (1997) में सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि यदि किसी को गिरफ्तार किया जाता है तो इसकी सूचना उसे या उसके परिजनों को दी जाएगी। एफआईआर की प्रति भी उसे उपलब्ध करवाई जाएगी। ईडी जांच पर कोर्ट ने कहा कि यह एक इंक्वायरी यानी जांचभर है, इंवेस्टीगेशन यानी अन्वेषण नहीं है।

क्यों मिले यह अधिकार

आपराधिक कानून के जानकारों के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट का फैसला आर्थिक अपराधों, ड्रग्स तस्करी से अर्जित धन, अंतरराष्ट्रीय और समुद्रपारीय, इलेक्ट्रोनिक लेनदेन हवाला, आतंकवाद और रंगदारी जैसे उच्च तकनीकी अपराधों के आलोक में है। ये अपराध कम्प्यूटर के एक माउस क्लिक पर हो जाते हैं, जिन्हें पकड़ना काफी दुरूह कार्य है। इसके अलावा इनके सबूत माइक्रो सैकंड में मिटाए जा सकते हैं या गायब किए जा सकते हैं। ऐसे में भारी मात्रा में पैसे की जब्ती होने पर यदि उसे सिद्ध करने का काम ईडी पर आया तो यह ईडी कभी सिद्ध नहीं कर पाएगी। वहीं हवाला की रकम का कोई रिकॉर्ड नहीं होता है और न ही उसके कोई दस्तावेज होते हैं।

जांच एजेंसी के बारे जानें

1956 में गठन

प्रवर्तन निदेशालय का गठन आर्थिक अपराधों और विदेशी मुद्रा कानूनों के उल्लंघन की जांच के लिए किया गया है। यह भारत सरकार की आर्थिक खुफिया एजेंसी की तरह काम करता है। मई 1956 में इसका गठन हुआ और 1957 में इसका नाम ईडी पड़ा। वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग के अंतर्गत यह काम करता है।

पांच कानूनों के तहत जांच

ईडी के दफ्तर मुंबई, चेन्नई, कोलकाता, दिल्ली और चंडीगढ़ में हैं। यह मुख्यतः पांच कानूनों के तहत काम करता है। इसमें धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए), विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम (फेमा), भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम (एफईओए), निरस्त विदेशी मुद्रा विनियमन अधिनियम और विदेश मुद्रा संरक्षण और तस्करी अधिनियम शामिल हैं।

ईडी की शक्तियां

कुर्की से गिरफ्तारी तक का अधिकार

साल 2002 में धनशोधन निवारण अधिनियम (पीएमएलए) पारित किया गया और एक जुलाई 2005 से यह लागू। पीएमएलए के तहत ईडी धनशोधन में शामिल व्यक्ति की संपत्तियां जब्त या कुर्क कर सकता है। ईडी द्वारा गिरफ्तार शख्स को जमानत मिलने में मुश्किल होती है, क्योंकि शर्तें काफी कड़ी हैं। जांच अधिकारी के सामने रिकॉर्ड बयान कोर्ट में सबूत के रूप में मान्य हैं।

सात साल सजा

पीएमएलए के तहत दोषी पाए जाने पर कम से कम तीन वर्ष के कठोर कारावास का प्रावधान है जिसे सात वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। अगर इसके साथ मादक पदार्थों से जुड़ा मामला हो तो सजा 10 साल तक हो सकती है और जुर्माना भी। विदेश में किसी तरह की कोई भी संपत्ति खरीदने पर ईडी उसकी भी जांच करता है।

प्रत्यूष

त्रिदिवसीय आवासीय प्रशिक्षण

गांधी दर्शन : सार्वभौमिक और सार्वकालिक

उदयपुर में 1 से 3 अगस्त तक सम्पन्न संभाग स्तरीय गांधी दर्शन आवासीय प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन संभागियों को सम्बोधित करते हुये पूर्व केन्द्रीय मंत्री डॉ. गिरिजा व्यास ने कहा कि गांधी दर्शन सार्वभौमिक और सार्वकालिक है। इस शिविर का आयोजन शांति एवं अहिंसा निदेशालय, राजस्थान सरकार के तत्वावधान में राजस्थान कृषि महाविद्यालय के सभागार में हुआ। इस अवसर पर पूर्व सांसद रघुवीर सिंह मीणा, वल्लभनगर विधायक प्रीति शक्तावत, संभागीय आयुक्त राजेन्द्र भट्ट, जिला कलेक्टर ताराचन्द मीणा, निगम आयुक्त हिम्मत सिंह बारहठ, आयोजक निदेशालय के निदेशक मनीष शर्मा व जिला स्तरीय गांधी दर्शन जीवन समिति के संयोजक पंकज कुमार शर्मा मंचासीन थे।

उल्लेखनीय है कि इस निदेशालय की स्थापना मुख्यमंत्री अशोक गहलोत की पहल पर हुई है। मुख्यमंत्री स्वयं गांधीवादी विचारों के प्रबल पोषक एवं प्रचारक हैं।

इस त्रिदिवसीय आयोजन में गांधी प्रतिमा गुलाबबाग से शहर में प्रभातफेरी, सर्वधर्म प्रार्थना सभा, देशभक्ति परक, सांस्कृतिक संध्या, सफाई अभियान, वृक्षारोपण, पर्यावरण संरक्षण, योग-व्यायाम, श्रमदान आदि कार्यक्रम भी सम्पन्न हुए। इसमें उदयपुर संभाग के सभी जिलों से करीब 400 प्रतिभागियों ने भाग लिया। गांधी दर्शन का प्रशिक्षण देने वालों में मनीष शर्मा, मनोज ठाकरे, सतीश राय, संदीप दिवाकर, अजमत खां, बी.एम.शर्मा, कुमार प्रशान्त, आदि मुख्य थे। शिविर को अनुसूचित जाति वित्त एवं विकास आयोग राजस्थान के अध्यक्ष (राज्यमंत्री) शंकर यादव का लगातार मार्गदर्शन मिला। कार्यक्रम में जिला परिषद सी.ई.ओ. मनीष मयंक, गांधी दर्शन समिति बांसवाड़ा के संयोजक रमेश पण्ड्या, राजसमंद संयोजक नारायण सिंह भाटी, चित्तौड़गढ़ संयोजक दिलीप नेभनानी, प्रतापगढ़ संयोजक प्रवीण जैन, उदयपुर के सह संयोजक सुधीर जोशी, गोपाल जाट सहित बड़ी संख्या में गांधीवादी विचारक एवं कार्यकर्ता मौजूद थे।

प्रस्तुतिः भगवान सोनी

भाषा विमर्श

सौहार्दवर्धक भाषा प्राकृत

दिलीप धींग

राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने अपनी शपथ में जोहार शब्द बोलकर अभिवादन किया। यह प्राकृत भाषा का शब्द है, जो आज भी कुछ भाषाओं में प्रचलित है। प्राकृत शब्दकोश में 'जोहार' शब्द मिलता है, जिसका अर्थ नमस्कार है। राजस्थानी भाषा में भी नमस्कार के अर्थ में 'जुहार' (जोहार का रूप) का प्रयोग विद्यमान है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 13 फरवरी 2019 को 16वीं लोकसभा के आखिरी भाषण में सदन के नेता के रूप में सदस्यों की ओर से किसी भी प्रकार की गलती के लिए जैन आगम साहित्य में प्रयुक्त प्राकृत भाषा में मिच्छामि दुक्कड़म शब्द का प्रयोग करके माफी मांगी थी। भगवान महावीर के युग में प्राकृत लोकभाषा और जनबोली के रूप में समादृत थी। लेकिन कतिपय संस्कृतविज्ञ प्राकृत भाषा और प्राकृत बोलने वालों की उपेक्षा करते थे। वह उपेक्षा उसी तरह थी, जिस प्रकार वर्तमान में कुछ अंग्रेजी जानने वाले अपने अंग्रेजी ज्ञान पर गर्व करते हैं और हिन्दी या अन्य भारतीय भाषा बोलने वालों को कमतर आंकते हैं। तीर्थंकर महावीर और गौतम बुद्ध ने अपने उपदेश प्राकृत भाषा में प्रदान करके साधारण आदमी को भी असाधारण तत्वज्ञान का खजाना दे दिया था। प्राकृत का आशय किसी जाति, धर्म या परंपरा विशेष की भाषा से नहीं, अपितु विशाल भारतवर्ष के प्राणों में स्पन्दित होने वाली बोलियों के उस समूह से है, जो ईस्वी पूर्व लगभग छठी शताब्दी से लेकर ईसा की चौदहवीं तक यानी लगभग दो हजार वर्षों तक भाषा के रूप में प्रतिष्ठित रहीं। आज भी प्राकृत के शब्द और प्रवृत्तियां भारतीय भाषाओं में व्याप्त हैं। प्राकृत के अध्ययन, अनुशीलन व अनुसंधान से भाषाई एकता और सांस्कृतिक सौहार्द के नवीन द्वार उद्घाटित किये जा सकते हैं।

भाषा वही, जिसमें हो संवेदनाः मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर में पिछले दिनों 'जैन विद्या एवं प्राकृत की समसामयिकता' विषयक राष्ट्रीय व्याख्यान माला सम्पन्न हुई। जिसमें मुख्य वक्ता प्रो. अनेकांत कुमार जैन, नई दिल्ली ने कहा कि प्राकृत भाषा सादगी और अहिंसा की ओर संकेत देती है। इस भाषा का प्रयोग व्यक्ति के जीवन में सद्विचारों को विकसित करता है। कुलपति प्रो. आई.वी त्रिवेदी ने अध्यक्षता की। मुख्य अतिथि सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो.सी.आर सुथार थे। सारस्वत अतिथि डॉ. नीरज शर्मा ने कहा कि ज्ञान का सार आचार है, प्राकृत का अध्ययन नैतिकता का आधार है। आयोजन समन्वयक डॉ. ज्योति बाबू जैन ने कहा कि वर्तमान परिपेक्ष में शांति और समृद्धि की स्थापना एवं समाज में सह अस्तित्व की भावना जागृत करने के लिए प्राकृत विद्या का प्रसार आवश्यक है। भाषा वही है, जिसमें संवेदना हो।

JKcement
JK SUPER
CEMENT
BUILD SAFE
15th AUGUST Happy
Indipendence day
JK SUPER
CEMENT
BUILD SAFE
JK SUPER
STRONG
BUILD SAFE
JK SUPER CEMENT
JK SUPER STRONG
JK SUPER STRONG Weather Shield
ShieldMaxX
TileMaxX
PriMaxX

रिजर्व बैंक भी है खौफज़दा

घटती आमदनी बढ़ती महंगाई

कर ढांचे में सुधार से ही बढ़ेगी, गरीब की क्रय क्षमता

उमेश शर्मा

आसमान छूती महंगाई ने आम आदमी का जीना दुश्वार कर दिया है। घरेलू जरूरतों का हर सामान जिस तरह से लगातार महंगा होता जा रहा है उससे गरीब आदमी का पेट भरना भी मुश्किल हो गया है। ईंधन की कीमतों ने पहले से ही उसकी सांसें फुला रखी थीं, अब खाद्य सामग्री और सब्जियों के भावों में लगी आग ने उसकी गृहस्थी को झुलसा दिया है। आपूर्ति की तुलना में मांग का लगातार बढ़ना ही सब्जियों के दामों में अप्रत्याशित बढ़ोतरी का कारण माना जा रहा है। लेकिन सबसे अहम सवाल यह है कि सरकार क्या कर रही है! खाद्य सामग्री को जीएसटी के दायरे में लाने के दुष्परिणाम सामने आने लगे हैं, इसे लेकर विपक्षी दलों ने संसद के पिछले सत्र की कार्यवाही को ठप कर रखा था। दो हफ्ते तक चले - हंगामे के बाद आखिरकार सरकार ने विपक्ष की मांग मानते हुए लोकसभा में महंगाई पर चर्चा तो करा दी लेकिन उसका नतीजा सिफर ही रहा। जो विपक्ष महंगाई के मुद्दे पर चर्चा के लिए इतना हंगामा कर रहा था, उसी ने वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण के जवाब से असंतुष्ट होकर सदन से ही वॉकआउट कर दिया। इसलिए सवाल ये भी उठता है कि क्या विपक्ष इस मुद्दे पर सिर्फ राजनीति ही कर रहा था! अगर नहीं, तो फिर उसे सरकार को घेरने के लिए सदन से वॉक आऊट करना तो नहीं चाहिए था। सदन छोड़ने के बजाए आम आदमी की आवाज को बुलंद करने के लिए सरकार को जवाब देने पर मजबूर करना चाहिए था। हालांकि संसदीय परंपरा में इसे भी सरकार के खिलाफ विरोध का ही एक तरीका माना जाता है।

रिजर्व बैंक की मौद्रिक नीति समिति (एमपीसी) ने भी रेपो दर आधा फीसद और बढ़ा कर यही संदेश दिया है कि उसकी प्राथमिकता महंगाई पर काबू पाना है। चालू वित्त वर्ष (2022-23) में यह तीसरा मौका है जब रेपो दर बढ़ाई गई है। पिछले तीन महीनों में रेपो दर में 1.4 फीसद का इजाफा हो चुका है और अब यह 5.4 फीसद पर आ गई है। रिज़र्व बैंक के इस कदम पर हैरानी इसलिए भी नहीं होनी चाहिए कि वह लगातार संकेत देता रहा है कि नीतिगत दरों को लेकर उदार रुख लंबे समय तक संभव नहीं होगा। गौरतलब है कि कोरोना महामारी के कारण जो आर्थिक हालात बन गए थे, उनसे निपटने के लिए मई 2020 में रिज़र्व बैंक ने रेपो दर 10.75 फीसद घटा दी थी। जाहिर है, नीतिगत दरों में वृद्धि को और टाल पाना मौद्रिक नीति समिति के लिए संभव नहीं रह गया था, इसलिए मई में एमपीसी ने नीतिगत दरें बढ़ाने की दिशा में कदम बढ़ा दिया था । मुद्रास्फीति थामने के लिए मौद्रिक उपाय के तौर पर बड़ा हथियार नीतिगत दरों में बदलाव ही है।

लंबे समय से खुदरा महंगाई का जो रुख बना हुआ है, उससे रिजर्व बैंक की भी नींद उड़ी हुई है। मौजूदा वित्त वर्ष के लिए एमपीसी ने मुद्रास्फीति 6.7 फीसद रहने का जो अनुमान अपनी जून की बैठक में रखा था, वही अभी भी रखा है। मतलब साफ है कि आने वाले दिनों में भी महंगाई दर कम होने को लेकर ज्यादा उम्मीदें दिख नहीं रहीं।

आम आदमी के लिए दोतरफा परेशानी है, क्योंकि रेपो रेट में वृद्धि से कर्ज महंगा होना तय है। होम लोन, ऑटो लोन, पर्सनल लोन की किस्तों में और इजाफा होगा। आंकड़ों में समझें,

तो अगर किसी की किस्त 24,168 रुपये है, तो बढ़कर 25,093 रुपये पर पहुंच जाएगी। रिज़र्व बैंक गवर्नर ने माना है कि देश की अर्थव्यवस्था ऊंची मुद्रास्फीति से जूझ रही है, लेकिन अभी जो वैश्विक हालात हैं, राहत का ठोस अनुमान कोई नहीं लगा सकता। कई देश हैं, जहां महंगाई दर भारत से बहुत ज्यादा है, पर जो अमीर देश हैं, वहां सरकार आम आदमी के पीछे खड़ी है, जबकि अन्य देशों में यह मुमकिन नहीं है। चुनौतियों के बावजूद देश की विकास दर 7.2 पर बरकरार है। वैसे वैश्विक हालात को देखते हुए भारत को अपना मुद्रा भंडार बचाकर रखना होगा। खजाना ज्यादा खोलने के अपने खतरे हैं, पर यह प्रबंध किया ही जा सकता है कि यह जब भी और जितना भी खुले. लाभ आम लोगों तक पहुंचे। नीतिगत दरों में वृद्धि से साफ है कि कर्ज और महंगा होगा। बैंक भी ब्याज दरों में इजाफा किए बिना नहीं रह पाएंगे। उपभोक्ता बाजार और संपत्ति बाजार पर इसका असर पड़ना तय है। अगर कर्ज महंगा होगा तो मकानों की खरीद-फरोख्त पर असर पड़ेगा। इससे जुड़े सीमेंट, इस्पात जैसे क्षेत्र भी प्रभावित हुए बिना नहीं रहेंगे। वाहनों की बिक्री भी घटेगी। त्योहारी मौसम भी शुरू हो गया है। ऐसे में बैंकों के सामने यह चुनौती होगी कि कर्ज कितना महंगा करें जिससे मांग-आपूर्ति का संतुलन न गड़बड़ाए। हालांकि ब्याज दरों में बढ़ोतरी का फायदा उन लोगों को मिल सकता है जो आकर्षक ब्याज दरों के लिए अपना पैसा बैंकों में सावधि जमा के रूप में रखते आए हैं। लेकिन खुदरा महंगाई को थामने का रिजर्व बैंक का यह उपाय कितना कारगर रह पाता है, यह आने वाले दिनों में पता चल जाएगा।

महंगाई का संबंध बेरोजगारी से भी है। जब तक रोजगार सृजन पर गंभीरता और व्यावहारिक ढंग से ध्यान नहीं दिया जाएगा, तब तक तदर्थ उपायों से महंगाई पर अंकुश लगाना कठिन रहेगा। फिर महंगाई और ऊंची विकास दर एक साथ संभव भी नहीं है।

शोध

तोते की लंबी उम्र का राज 'बुद्धिमानी'

जानवरों की लम्बी उम्र को अक्सर बड़े शरीर से जोड़कर देखा जाता है, लेकिन तोते अक्सर बड़े पक्षियों की तरह ही लंबा जीवन जीते हैं और अपने आकार के बाकी पक्षियों की तुलना में इनकी उम्र ज्यादा होती है। तोतों की उम्र 70 साल के करीब बताई जाती है। कभी-कभी तो ये 80 साल से भी ज्यादा जीते हैं। हाल ही में हुए एक अध्ययन से पता चलता है कि तोतों का लंबा जीवन, उनके एक खास गुण की वजह से हो सकता है और वह गुण है उनकी 'बुद्धिमानी'। हाल ही में प्रोसीडिंग्स ऑफ द रॉयल सोसायटी बी: बायोलॉजिकल साइंसेज जर्नल में प्रकाशित शोध में यह दावा किया गया है। जर्मनी के रैडॉल्फजेल में मैक्स प्लैंक इंस्टीट्यूट ऑफ एनिमल बिहेवियर के शोधकर्ताओं ने यह अध्ययन किया। शोध की प्रमुख लेखक शिमोन स्मीले का कहना है कि पिछले अध्ययनों से पता चला है कि जानवरों में लंबी उम्र उनके मस्तिष्क के आकार से जुड़ी होती है। शोधकर्ताओं ने वाइल्ड लाइफ कंजर्वेशन ग्रुप स्पीशीज 360 के साथ मिलकर दुनियाभर के एक हजार से ज्यादा चिड़ियाघरों में 1.3 लाख से ज्यादा तोतों का डाटा इकट्ठा किया। शिमोन स्मीले ने कहा, शोध में एक और वैकल्पिक संभावना के बारे में बताया गया है। शोध में कहा गया कि बड़े दिमाग को विकसित होने में ज्यादा समय लगता है और इसके लिए लंबे जीवनकाल की जरूरत होती है। हालांकि शोधकर्ताओं को लम्बी उम्र और विकास के समय के बीच कोई संबंध नहीं मिला।

पाठक पीठ

'प्रत्यूष' का अगस्त-22 का अंक देखने को मिला। यह जानकर और भी ज्यादा प्रसन्नता हुई कि उदयपुर से इस स्तरीय पत्रिका का पिछले 20 वर्ष से नियमित प्रकाशन हो रहा है। सामग्री भी श्रेष्ठ और विविध रूचियों को लेकर है।

दीप्ति अग्रवाल,
एचआर हैड हि.जि.लि.

स्वतंत्र भारत की पहली आदिवासी महिला श्रीमती द्रोपदी मुर्मूजी का राष्ट्रपति निर्वाचित होना समस्त भारतीयों को गौरवान्वित करने वाला है। इस सम्बंध में उनके संघर्ष और समाज कल्याण में योगदान को लेकर 'प्रत्यूष' के अगस्त अंक में प्रकाशित आलेख सराहनीय है।

अजीत मीणा,
ग्राम विकास अधिकारी, ऋषभदेव

प्रत्यूष एक अच्छी और पारिवारिक पत्रिका है, जो हर आयु वर्ग और क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। एक तरफ यह समाज की समस्याओं को फोकस करती है तो दूसरी और राष्ट्रीय विकास में योगदान देने वाली संस्थाओं, उद्योगों और व्यक्तियों के प्रयासों को सराहती भी है।

लोकेश चौधरी,
डायरेक्टर, सत्यनाम रोड लाइन्स

प्रत्यूष के जुलाई-अगस्त-22 के अंक सामग्री की दृष्टि से काफी उपयोगी थे। जुलाई के अंक में वनों के धधकने से पर्यावरण को होने वाले नुकसान व अगस्त अंक में वागीश कुमार झा का अगस्त - 1942 की क्रान्ति पर आधारित आलेख काफी ज्ञानवर्धक थे।

डी.एल. पाटीदार,
सीईओ, वत्स एकेडमी

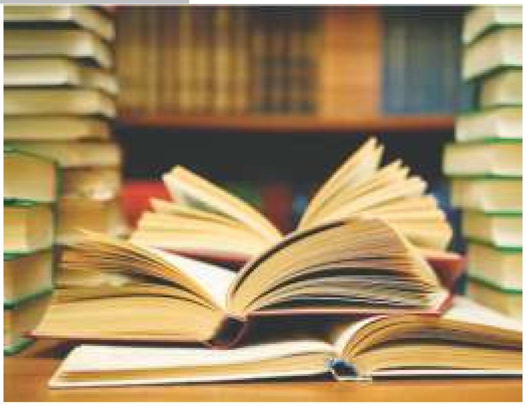

साहित्य संसार में हिन्दी की गूंज

विभूति नारायण राय

हिन्दी दिवस: 14 सितम्बर

हिन्दी में गद्य और पद्य, दोनों में कुछ ऐसा लिखा गया है, जिसे अंग्रेजी, फ्रेंच जैसी भाषाओं में अनुवाद किया जाना चाहिए, ताकि उन्हें विश्व साहित्य में प्रतिष्ठित स्थान मिल सके।

पिछले दिनों दो ऐसी घटनाएं घटीं, जिनकी अनुगूंज हिंदी भाषा और साहित्य की दुनिया में देर तक सुनाई देगी। यह हिंदी के अधिक आत्मविश्वास से भरपूर होते जाने और दुनिया भर में उसकी रचनात्मकता के शिनाख्त का समय है। याद रहे, आज जिसे हम हिंदी के नाम से जानते हैं, नागर लिपि में लिखी जाने वाली उस खड़ी बोली का साहित्य मुश्किल से सवा सौ साल पुराना है। इतने कम समय में न तो सौ करोड़ से अधिक लोगों के बीच संपर्क भाषा बनने की क्षमता हासिल करना आसान था और न ही रचनात्मकता के उस शिखर तक पहुंचना संभव था, जहां देश-दुनिया की समृद्धतम भाषाएं उसमें रचे गए को नजरंदाज न कर सकें। इसीलिए इन दोनों घटनाओं को गौर से देखा जाना चाहिए।

महात्मा गांधी ने पहली बार हिंदी को राष्ट्रभाषा की पदवी दी और आजादी की लड़ाई के एक महत्वपूर्ण औजार के रूप में उसका महत्व स्वीकार किया था। देश की संविधान सभा ने अनुच्छेद-8 में उल्लिखित सभी भाषाओं को राष्ट्रभाषा का दर्जा देते हुए हिंदी को अंग्रेजी के साथ संघ की राजभाषा बनाया। इस एक परिवर्तन से हिंदीप्रेमियों का आत्मविश्वास कितना डिग गया था, इसका पता सिर्फ इसी से लगता है कि संविधान में अकेली राजभाषा के रूप में हिंदी को लागू करने की तिथि 26 जनवरी, 1965 के निकट आने पर जब तत्कालीन मद्रास प्रांत में हिंसा भड़क उठी, तो सेठ गोविंददास जैसे उत्साही हिंदीप्रेमियों ने सेना भेजकर वहां हिंदी लागू करने की बात की थी। यह अलग बात है कि भाषा आंदोलनों से निपटने के लिए सरकार को ऐसा कानून बनाना पड़ा कि अब अंग्रेजी अनिश्चित समय तक हिंदी के साथ संघ की राजभाषा बनी रहेगी। ऐसा ही एक दिलचस्प स्थिति है कि ज्यादातर हिंदी प्रेमी मानते हैं कि हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है। कई बार तो वे इसे लेकर विरोधियों से लड़ने के लिए भी तैयार हो जाते हैं। इसीलिए गाहे-बगाहे उच्च न्यायालयों को स्पष्ट करना पड़ा है कि संविधान के अनुसार, हिंदी राष्ट्रभाषा नहीं, राजभाषा है।

पिछले कुछ दशकों में, जब यह लगभग मान लिया गया कि राष्ट्रभाषा बनने की जिद निरर्थक है और सरकारों के लिए हिंदी का मतलब हर साल मनाया जाने वाला राजभाषा पखवाड़ा मात्र है, कुछ अद्‌भुत चीजें हुईं। आर्थिक तरक्की और भारी पैमाने पर औद्योगिकरण के चलते बड़ी बसावटें बनीं, जिनमें उत्तर, दक्षिण, पूरब, पश्चिम से आकर लोग बसे और फिर हिंदी ने यह भूमिका निभानी शुरू की, जिसके लिए वह सर्वथा उपयुक्त थी, अर्थात वह तमिल, गुजराती, उड़िया नगा जैसे समाजों के बीच संपर्क भाषा का काम करने लगी। आज मुंबई, बेंगलुरू, पुणे, कोयंबतूर, गुवाहाटी या तिरूवनंतपुर में हिंदी बोलकर आप मजे से अपना काम चला सकते हैं। इस भूमिका के लिए उसका समावेशी होना सबसे अधिक मददगार सिद्ध हुआ। किसी भी भाषा का शब्द उसका अपना है। तभी तो एक शताब्दी की उम्र वाली खड़ी बोली ने अपभ्रंश, ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली और बहुत-सी बोलियों की साहित्यिक और शब्द संपदा को अपनाकर अपना इतिहास लिखा। सरकार भले न बनाए, जनता ने उसे राष्ट्रभाषा बना दिया है। बाजार ने सरकार की कमी पूरी कर दी है।

इस बदली हुई हैसियत ने हिंदी का आत्मविश्वास बढ़ाया है। इसी का परिणाम था कि नई शिक्षा नीति में हर छात्र के लिए मातृभाषा के अतिरिक्त एक अन्य भारतीय भाषा पढ़ना जरूरी किए जाने पर जब दक्षिण के कुछ नेताओं ने विवाद खड़े करने शुरू

किए, तो हिंदी पट्टी ने वैसी उत्तेजना नहीं दिखाई, जो आजादी के शुरूआती सालों में दिखती थी। यह स्पष्ट हो गया है कि इस बहुभाषिक समाज में संपर्क भाषा तो हिंदी ही रहेगी और हर छात्र बिना दबाव दूसरी भाषा के तौर पर हिंदी ही पढ़ेगा। इसी बढ़े आत्मविश्वास का नतीजा था, जब दक्षिण के कुछ कलाकारों ने हिंदी के खिलाफ विषवमन करना शुरू किया, तो छिटपुट प्रतिक्रियाओं को छोड़कर कहीं से गुस्से भरे बयान नहीं आए।

दूसरी बड़ी घटना एक हिंदी रचना को बुकर सम्मान मिलना है। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' को इस वर्ष के बुकर सम्मान से नवाजे जाने के निहितार्थ बहुत बड़े हैं। इस बड़बोले समय में, जब हमारे बहुत से लेखक खूब बोलते हैं और सिर्फ अपने बारे में बालते हैं, किसी ऐसे रचनाकार को दुनिया के बड़े पुरस्कारों में से एक मिलना, जिसे हम अपनी रचना के बाहर विरले ही बोलते देखते हैं, किसी चमत्कार से कम नहीं है। वाद विवादों या आत्म प्रचार से दूर गीतांजलि श्री हिंदी के वृहत्तर पाठक समुदाय के लिए काफी हद तक अपरिचित नाम था, लेकिन साहित्य के गंभीर अध्येता मानते हैं कि भाषा के रचनात्मक उपयोग की जो क्षमता उन्होंने विकसित की है, वह उनके समकालीनों के लिए स्पृहा की वस्तु हो सकती है। यह अलग बात है कि गीतांजलि ने जो मुहावरे रचे हैं, उन तक पहुंचने के लिए पाठक को भी कुछ अतिरिक्त कदम चलने पड़ेंगे। यहां सिर्फ लेखकीय तैयारी से काम नहीं चलेगा, पाठकीय तैयारी की भी उतनी ही जरूरत पड़ेगी। शायद इसी तैयारी की कमी थी कि सोशल मीडिया पर कई लोगों ने स्वीकार किया कि उन्होंने गीतांजलि श्री का नाम ही बुकर सम्मान के लिए शॉर्ट लिस्टिंग के बाद सुना। अपने एक इंटरव्यू में गीतांजलि ने सही ही कहा है कि इस एक पुरस्कार से विश्व का ध्यान हिंदी या दूसरी भारतीय भाषाओं में हुए महत्वपूर्ण लेखन पर जाएगा। अभी तक, खास तौर से पश्चिम का ध्यान भारतीय लेखकों द्वारा सिर्फ अंग्रेजी में रचे पर जाता रहा है। इसके लिए डेजी राकवेल जैसी अनुवादिका की भी जरूरत पड़ेगी। जो गीतांजलि को मिलीं। अनुवादक का महत्व इसी से समझा जा सकता है कि अपने कालजयी उपन्यास *वन हंडरेड इयर्स आफ सोलिट्यूड* का स्पैनिश भाषा से अंग्रेजी में अनुवाद कराने के लिए मारखेज ने अनुवादक ग्रेगरी रबासा के खाली होने का वर्षों इंतजार किया। अनुवाद के बाद इस उपन्यास के लिए उन्हें नोबेल पुरस्कार मिला। हिंदी में गद्य और पद्य, दोनों में पिछले सौ वर्षों में बहुत कुछ ऐसा लिखा गया है, जिसे अंग्रेजी, फ्रेंच या स्पैनिश जैसी भाषाओं में अनुवाद किया जाना चाहिए, जिससे उन्हें विश्व-साहित्य में वह स्थान मिल सके, जिसके वे हकदार हैं। 'रेत समाधि' को बुकर सम्मान मिलने से इसकी संभावना और उम्मीद बनती है।

(लेखक -पूर्व कुलपति व प्रबुद्ध साहित्यकार हैं)

पृष्ठ 23 का उत्तर

उत्तर: बुद्धि कौशल

1. एकत्र 2. एकाग्र 3. एकछत्र 4. एकादश 5. एक कोषीय 6. एकजान 7. एकदम 8. एकदलीय 9. एकतंत्र 10. एकजुटता 11. ऐसा 12. एकतरफा 13. एकतारा 14. एकता 15. एकदंत 16. एकलव्य 17. एकलिंग 18. एकमुश्त 19. एटलस 20. एकेश्वरवाद 21. एकैक 22. एक्सरे 23. एवं 24. ऐलान 25. एवमस्तु 26. ऐश 27. ऐनक 28. ऐतिहासिक 29. ऐश्वर्य 30. ऐहिक 31. ऐरावत 32. ऐयाश

Happy Independence day

Ganpat Khicha

KHICHA PHOSCHEM LTD.

204, Vinayak Business Centre, Fatehpura, Pulla Road, Udaipur - 313001 (Raj.)
Phone : 0294-2452151 (O) 6451366, 6451377, 2451332 (R)
(W) Madri : 0294-2490829, 6451257 Fax : 0294-2452149
E-mail : khichaphoschem@rediffmail.com, Website : www.khichaphoschem.com

दमखम वाले खेलों में

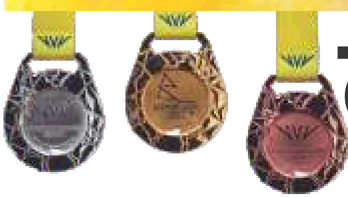

लहराया भारत का परचम

जगदीश सालवी

राष्ट्रमंडल खेल 2022 में भारत ने कुल 61 पदक जीते हैं। इनमें 22 स्वर्ण हैं। मुक्केबाजी, कुश्ती, जूडो और भारोत्तोलन में 33 पदक हासिल हुए। महिला एकल में बैडमिंटन में पीवी सिंधु ने स्वर्ण पदक जीता। क्रिकेट में रजत और हॉकी में भारत को कांस्य पदक देकर इन खेलों में अपनी मजबूत दावेदारी का परिचय दिया। अगले राष्ट्रमंडल खेल 2026 विक्टोरिया में होंगे।

राष्ट्रमंडल खेलों के आखिरी दिन पीवी सिंधु, लक्ष्य सेन और चिराग सात्विक की जोड़ी ने बैडमिंटन में और शरत ने टेबल टेनिस में भारत की झोली में चार और स्वर्ण पदक डालकर खेल प्रेमियों को उत्साह से भर दिया। कुश्ती और भारोत्तोलन में भारत के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन किया। पदक तालिक में हम चौथे स्थान पर ठहरे। क्या इस प्रदर्शन को संतोषजनक माना जा सकता है ? पिछले राष्ट्रमंडल खेलों में 26 स्वर्ण जीतकर हम तीसरे स्थान पर आए थे। इस बार एक पायदान नीचे खिसकना यही संकेत देता है कि खेल की दुनिया में भारत को अभी बहुत कुछ करना है।

ओलंपिक और विश्व कप स्पर्द्धाओं की बात तो दूर, एशियाई अथवा राष्ट्रमंडल खेलों में भी हम कभी सिरमौर नहीं बन पाते। देश आजादी के 75 वर्ष पूरे करने जा रहा है। इस अवधि में हमने आर्थिक और सैन्य क्षेत्र में कई उपलब्धियां हासिल

चानू की चमक

मीराबाई चानू की अगुआई में वेटलिफ्टरों ने गोल्डन हैट्रिक सहित 10 पदक बटोरे। पहलवानों के बाद वेटलिफ्टर सर्वाधिक पदक जीतने में दूसरे नंबर पर रहे। हालांकि पिछली बार से इस बार स्वर्ण दो कम रहे पर कुल पदक एक ज्यादा रहा। जेरेमी लालरिननुंगा और अंचिता शेउली ने भी स्वर्ण जीता। तीनों खेलों में रिकॉर्ड के साथ चैंपियन बने।

बर्मिंघम में खिला कमल

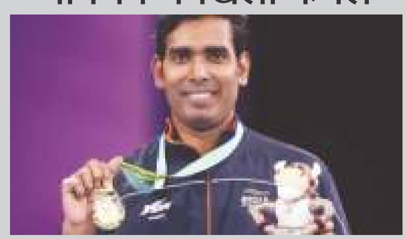

40 साल के शरत कमल भारत के सबसे सफल खिलाड़ी रहे। इस टेबल टेनिस खिलाड़ी ने तीन स्वर्ण सहित कुल चार अपने नाम करने में कामयाब रहे। स्वर्ण पदक जीतने के मामले में वे पाकिस्तान समेत 56 देशों से आगे रहे। राष्ट्रमंडल खेलों में हिस्सा लेने वाले 72 देशों में से सिर्फ 16 ही तीन या इससे ज्यादा स्वण हासिल करने में सफल रहे हैं। खेलों में 56 देशों ने दो या इससे कम स्वर्ण पदक जीते हैं, जिनमें पाकिस्तान भी शामिल है।

नीतू रिंग की नई मलिका

विश्व चैंपियन निकहत जरीन और 21 साल की नीतू के गोल्डन पंच के दम पर मुक्केबाजी ने तीन स्वर्ण सहित कुल सात पदक जीते। मैरीकॉम के भार वर्ग में खेलने वाली नीतू रिंग की नई मलिका बनी। पंघाल भी रिंग के किंग बने। पहली बार किसी टूर्नामेंट में खेलने वाले हरियाणा के सागर की चांदी भी सोने से कम नहीं रही।

की हैं, पर खेल जगत में खास पहचान नहीं बना पाए। संतोष की बात यह जरूर है कि इन खेलों में कई ऐसी प्रतिभाएं भी सामने आई हैं, जिन्होंने प्रतिकूल हालातों में भी पदक हासिल किए। निशानेबाजी को बाहर किए जाने के बावजूद भारत ने पावर स्पोर्ट्स (दमखम वाले खेल) के दम पर राष्ट्रमंडल खेलों में परचम लहराया। कुश्ती, मुक्केबाजी, वेटलिफ्टिंग और जूडो जैसे खेलों में न सिर्फ भारतीय खिलाड़ियों ने डंका बजाया बल्कि पदक तालिका में भी देश को शीर्ष चार में पहुंचाने में पहुंचाने में अहम भूमिका निभाई। भारत ने 22 स्वर्ण सहित कुल 61 पदक जीते। बर्मिंघम में 12 पहलवानों का दल गया और कोई भी खाली नहीं लौटा। चार साल पहले भी पहलवानों ने 12 पदक जीते थे, लकिन इस बार स्वर्ण पदक पिछले बार से एक ज्यादा है। जूडो में सुशीला के रजत सहित तीन तो पैरा पॉवरलिफ्टिंग में सुधीर ने स्वर्ण जीत परचम फहराया। पिछली बार जूडो में कोई पदक नहीं था।

भारत के पदक विजेता

22 स्वर्णः मीराबाई चानू, जेरेमी लालरिनुंगा, अंचिता शेउली, महिला बॉल टीम, टीटी पुरुष टीम, सुधीर, बजरंग पूनिया, साक्षी महलक, दीपक पूनिया, रवि दहिया, विनेश, नवीन, भाविना, जीतू, अमित पंघाल, एल्डहॉस पॉवर, निकहत जरीन, शरत–श्रीजा, पीवी सिंधू, लक्ष्य सेन, सात्विक–चिराग, शरत।

16 रजतः संकेत सरगर, बिंदियारानी देवी, सुशीला देवी, विकास ठाकुर, भारतीय बैडमिंटन टीम, तूलिका मान, मुरली श्रीशंकर, अंशु मलिक, प्रियंका, अविनाश साबले, पुरुष लॉन बॉल टीम, अब्दुल्ला अबोबैकर, शरथ–साथियान, महिला क्रिकेट टीम, सागर, पुरुष हॉकी टीम।

23 कांस्यः गुरुराजा, विजयकुमार यादव, हरजिंदर कौर, लवप्रीतसिंह, सौरव घोषाल, गुरदीपसिंह, तेजस्विन शंकर, दिव्या काकरन, मोहित ग्रेवाल, जेस्मिन, पूजा गहलोत, पूजा सिहाग, मोहम्मद हुसामुद्दीन, दीपक नेहरा, रोहित टोकस, महिला हॉकी टीम, संदीप कुमार, अन्नू रानी, सौरव–दीपिका, किदांबी, श्रीकांत, त्रिषा–गायत्री, साथियान।

पदक तालिका

क्र.सं.	देश	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
1.	ऑस्ट्रेलिया	67	57	54	178
2.	इंग्लैंड	57	66	53	176
3.	कनाडा	26	32	34	92
4.	**भारत**	**22**	**16**	**23**	**61**
5.	न्यूजीलैंड	20	12	17	49
6.	स्कॉटलैंड	13	11	27	51
7.	नाइजीरिया	12	9	14	35
8.	वेल्स	8	6	14	28
9.	दक्षिण अफ्रीका	7	9	11	17
10.	मलेशिया	7	8	8	23

किस खेल में कितने पदक

खेल	स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल
कुश्ती	6	1	5	12
वेटलिफ्टिंग	3	3	4	10
मुक्केबाजी	3	1	2	6
टेबल टेनिस	4	1	2	7
बैडमिंटन	3	1	2	6
एथलेटिक्स	1	4	3	8
लॉन बॉल्स	1	1	8	2
पावरलिफ्टिंग	1	0	0	1
जूडो	0	2	1	3
हॉकी	0	1	0	1
क्रिकेट	0	1	0	1
स्क्वॉश	0	0	2	2
कुल	**22**	**16**	**23**	**61**

भारत के अब तक के पांच सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन

स्वर्ण	रजत	कांस्य	कुल	वर्ष	स्थान
38	27	36	101	2010	नई दिल्ली
30	22	17	69	2002	मैनचेस्टर
26	20	20	46	2018	गोल्ड कोस्ट
22	17	11	50	2006	मेलबर्न
22	16	23	61	2022	बर्मिंघम

सिंधू ने नहीं की कोई गलती

दो बार की ओलंपिक पदक विजेता सिंधू ने इस बार फाइनल में कोई चूक नहीं की और कनाड़ा की मिशेल ली को 2–0 से हराकर पहली बार महिला एकल का राष्ट्रमंडल स्वर्ण पदक अपने नाम किया। भारतीय शटलर ने ग्लास्गो 2014 खेलों की स्वर्ण पदक विजेता मिशेल को 21–15, 21–13 से मात दी। सिंधू जब कोर्ट पर आई तो उनके बाएं पैर में बैंडेज बंधी हुई थी, लेकिन यह उनके खेल को जरा भी प्रभावित नहीं कर पाया। इससे पहले सिंधु ने 2014 खेलों में कांस्य और 2018 खेलों में रजत जीता था, और सिंधू ने पदकों का सेट पूरा कर लिया।

साक्षी की शानदार वापसी

ओलंपिक की कांस्य पदक विजेता साक्षी मलिक और विनेश फोगाट ने गोल्डन दांव लगाकर बता दिया कि उनमें अभी भी दम है। विनेश लगातार तीन स्वर्ण पदक जीतने वाली पहली भारतीय महिला पहलवान बनीं। बजरंग पूनिया, दीपक पूनिया, रवि कुमार दहिया और नवीन दहिया ने भी स्वर्ण पदक जीते।

चीन और ताइवान के बीच तनाव चरम पर पहुंच गया है। अमेरिकी प्रतिनिधि सभा की अध्यक्ष नैंसी पेलोसी की यात्रा के तुरन्त बाद ताइवान सीमा के समीप चीन ने युद्धाभ्यास किया। इस दौरान लक्ष्यों पर सटीक हमले किए गए। ताइवान के उत्तर-पूर्व और दक्षिणी-पश्चिमी तट के पास शक्तिशाली डोंगफेंग बैलेस्टिक मिसाइलें दागी गईं।

चीन से टक्कर लेता ताइवान

डॉ. संदीप गर्ग

चीनी साम्राज्यवाद वैश्विक राजनीति में लगातार तनाव बढ़ा रहा है। वह जिन इलाकों को कागज पर ही सही, अपना हिस्सा मानता है, उनके प्रति उसकी आक्रामकता सरासर अनुचित है। उसकी अशालीन प्रवृत्ति सिर्फ दावे तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसके आगे बढ़कर वह बयान देता है और अपनी हरकतों से नाराजगी दर्शाता है। अमेरिकी नेता नैन्सी पेलोसी की ताइवान यात्रा पर चीन ने जो तनाव पैदा किया है, उसकी प्रशंसा कोई भी लोकतंत्र या अमनपसंद देश नहीं करेगा। चीन अमेरिकी स्पीकर पेलोसी के ताइवान दौरे को अगर चुनौती के रूप में देख रहा है, तो उस तक संदेश साफ शब्दों में पहुंचना चाहिए। पेलोसी की यात्रा के जरिये अमेरिका ने चीन को ताइवान के मुद्दे पर ललकार कर एक तरह से ठीक ही किया है। ताइवान का स्वतंत्र वजूद नया नहीं है। वह एक संप्रभु राष्ट्र है, लेकिन चीनी साम्यवादी सत्ता ने अपने उत्थान के दिनों में जो आक्रामक सपने संजोए थे, उन्हें साकार कर लेना चाहता है। यह एक तरह से दुनिया में बढ़ती चीनी ताकत का दुष्परिणाम है। वह रणनीति के तहत ऐसे तनाव पैदा कर रहा है कि आसानी से उसका साम्राज्यवादी सपना साकार हो जाए।

गौरतलब है कि द्वीपों, समुद्री और जमीनी सीमाओं का लेकर चीन के कई देशों के साथ विवाद है। कहने को तो ताइवान पर लंबे समय

तक जापान का भी कब्जा रहा। लेकिन आज ताइवान स्वतंत्र देश है। यों भी दुनिया में तमाम देश ऐसे हैं जो कभी न कभी किसी देश का हिस्सा रहे, पर कालातंर में इन देशों ने स्वतंत्र अस्तित्व हासिल कर लिया। इसलिए छोटे-छोटे द्वीपों और देशों पर अधिकार और कब्जे की मंशा रखने वाले महाबली देश अशांति का कहीं न कहीं बड़ा कारण बनते जा रहे हैं। इसी से इन्होंने दुनिया में हथियारों का बड़ा बाजार भी खड़ा कर लिया। यह समझना होगा कि ताइवान के नाम पर सिर्फ खेमेबाजी बढ़ेगी। इस मुद्दे पर पाकिस्तान और रूस तो पहले से चीन के साथ खड़े हैं ही। पश्चिमी देश अमेरिका के दबाव में रहेंगे। ऐसे में खतरा यही है कि कहीं एशिया में भी एक और यूक्रेन न देखने को मिल जाए!

बीजिंग के लिए परेशानी की एक वजह ताइवान का लोकतंत्र भी है। ताइवान में सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक प्रोग्रेसिव पार्टी (डीपीपी) का संविधान खुदमुख्तारी का हिमायती है। हालांकि, उसकी सरकार ने इस मुद्दे को तवज्जो नहीं दी है, क्योंकि एक तथ्य यह भी है कि ताइवान की 58 फीसदी आबादी यथास्थिति के पक्ष में है। यानी, वह न चीन के साथ जाना चाहती है और न आजाद होना चाहती है। ताइवान की आजादी को लेकर अमेरिका भी मुंह छिपाता है, क्योंकि उसे डर है कि कहीं इससे उसकी हिंद-प्रशांत नीति प्रभावित न हो जाए। चूंकि ताइवान की यथास्थिति को चीन अपने लिए खतरा मानता है, इसलिए पेलोसी की यात्रा उसके लिए मौका था कि वह इस बहाने अपना आक्रामक रुख दिखाए। ड्रेगन के साम्राज्यवादी ख्वाबों का कोई इलाज संयुक्त राष्ट्र के पास भी नहीं है। संयुक्त राष्ट्र नव-साम्राज्यवाद के समक्ष नाकाम है। उससे ज्यादा उम्मीद भी नहीं की जा सकती। सामने है। रूस-यूक्रेन मामले में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका विश्व के सामने है। संयुक्त राष्ट में रूस और चीन, दोनों ही देशों की मंजूरी जरूरी है। दोनों अगर मिल जाएं, तो संयुक्त राष्ट्र के प्रयासों को निष्प्रभावी बना सकते हैं। ऐसे में, ताइवान का भविष्य क्या होगा? क्या चीन सैन्य कार्रवाई करेगा? क्या अफगानिस्तान से हाल ही में भागा अमेरिका ताइवान में अपनी सेना उतारेगा? अब चीन ने ताइवान के भयादोहन के लिए कहा है कि वह ताइवान के पास युद्धाभ्यास करता रहेगा। हालांकि, ताइवान ने भी पूरी मजबूती का परिचय

दिया है। अगर दुनिया ताइवान के साथ खड़ी नहीं होगी, तो दुनिया मध्ययुग की तरह ही कब्जे की लड़ाई में लिप्त हो जाएगी। जो देश आज चुप रह जाएंगे, उन्हें शायद भविष्य में कोई न कोई कीमत चुकानी पड़ेगी।

क्या है विवाद

- चीन ताइवान को अपना ही हिस्सा मानता है, जबकि ताइवान खुद को स्वतंत्र राष्ट्र मानता है।
- दुनिया के सिर्फ 15 देश ही ताइवान को एक स्वतंत्र राष्ट्र मानते हैं। अधिकांश देशों ने चीन को मान्यता दी है।

ताइवान दुनिया के लिए क्यों जरूरी

- कंप्यूटर से लेकर लैपटॉप और घड़ी से लेकर कंसोल में इस्तेमाल होती हैं ताइवान की चिप
- कंप्यूटर चिप बनाने में अकेले ताइवान की हिस्सेदारी 65 प्रतिशत के करीब है
- अगर ताइवान चीन के कब्जे में जाता है तो 100 बिलियन डॉलर का यह उद्योग चीन के नियंत्रण में आ जाएगा।

ताइवान अमेरिका के लिए हथियार बाजार

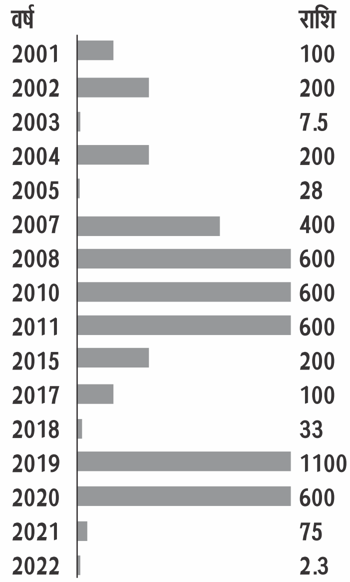

स्त्रोतः कॉउंसिल ऑन फॉरेन रिलेशन्स

(नोटः राशि करोड़ डॉलर में)

किसमें–कितना दम

	चीन	ताइवान
आबादी	139 करोड़	2.36 करोड़
सक्रिय सैनिक	20 लाख	1.70 लाख
रिजर्व सैनिक	5.10 लाख	15 लाख
टैंक	5250	110
तोपखाना	5854	1667
लड़ाकू विमान	3285	741
समुद्री जहाज	777	117

अमेरिका की मजबूरी

अगर ताइवान पर चीनी कब्जा हो जाता है तो गुआम और हवाई जैसे अमेरिकी सैन्य बेस के लिए खतरा पैदा हो जाएगा। विशेषज्ञों का मानना है कि इसलिए चीन पर दबाव बनाने में अमेरिका कोई कसर नहीं छोड़ रहा।

Happy Independence day

UDAIPUR HOTEL

(APPROVED BY GOVT. OF RAJASTHAN)

SPECIALITY & FACILITIES

- Parking
- A/C & Cooler Rooms
- Situated in Heart of City
- T.V. With Cable Connection
- Homely Atmosphere
- Near to bus & Railway Station
- Rooms Connected with Telephone

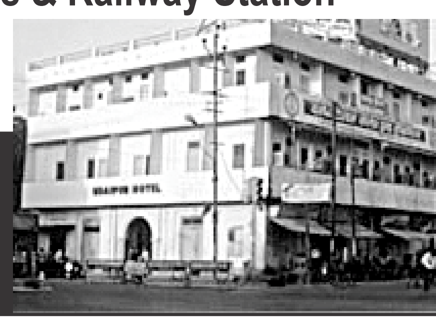

Surajpole, Udaipur-313001 (Raj.)

Telephone Number :- 0294-2417115-116

प्रत्यूष

दक्षिण भारतीय चटनी

आशा माथुर

भोजन में चटनियों की खास अहमियत है। ये भोजन का स्वाद बढ़ाने वाली हैं। चटनियां कई किस्म की होती हैं। दक्षिण भारतीय व्यंजनों के साथ परोसे जानी वाली चटनियों का तो कहना ही क्या? ये बनाने में जितनी आसान होती हैं, उतनी ही पौष्टिक भी।

टमाटर चटनी

सामग्री– मध्यम आकार के टमाटर–4, लहसुन की कलियां 2 से 3, भुनी चना दाल– एक बड़ा चम्मच, भुनी मूंगफली दाना एक बड़ा चम्मच, साबुत लाल मिर्च– 3 से 4, अदरक कद्दूकस किया एक छोटा चम्मच, लौंग–2, कालीमिर्च 3 से 4, नमक स्वादानुसार, गुड़ कद्दूकस किया। एक बड़ा चम्मच।

तड़के के लिए: तेल– 2 बड़े चम्मच, काली सरसों–एक छोटा चम्मच, ताजा करीपत्ता–10–12, उड़द दाल एक छोटा चम्मच, चना दाल– एक छोटा चम्मच, मेथी दाना 1/4 छोटा चम्मच।

यूं बनाएं– पेन में एक बड़ा चम्मच तेल गरम करें। इसमें 1/2 छोटा चम्मच राई, 5–6 करी पत्ते, लौंग, काली मिर्च, आधा छोटा चम्मच उड़द दाल, चना दाल, मेथी दाना व दो लालमिर्च डालकर हल्का गुलाबी करें। भुनी चना दाल व मूंगफली दाना डालकर एक मिनट चलाएं। आंच मंदी ही रखें। अब अदरक, लहसुन डालकर भूनें। फिर कटे टमाटर डालकर दो से तीन मिनट भूनते रहें। नमक डालकर ढक दें व पकने दें। टमाटर पक जाए तो मिश्रण ठंडा करें व गुड़ डालकर बारीक पीस लें। तड़के की शेष सामग्री से मिश्रण पर तड़का लगा दें।

अदरक चटनी

सामग्री– ताजा अदरक कद्दूकस किया हुआ 2 बड़े चम्मच, भुनी चना दाल–2 बड़े चम्मच, ताजा नारियल कद्दूकस 2 बड़ा चम्मच, भुनी मूंगफली छिलका रहित– 2 बड़ा चम्मच, जीरा–1/2 छोटा चम्मच, हरीमिर्च–एक, इमली का पेस्ट–2 बड़े चम्मच, गुड़–एक बड़ा चम्मच, उबला कॉर्न–2 से 3 बड़ा चम्मच, नमक–स्वादानुसार।

यूं बनाएं: एक चम्मच तेल में अदरक को गुलाबी भूनकर ठंडा कर लें। चटनी के लिए कॉर्न के अलावा सारी सामग्री मिलाकर बारीक पीस लें। इसमें उबला कार्न मिला दें (यह ऐच्छिक है)। अब तड़के के लिए बचा तेल गरम करें। सरसों, करी पत्ता डालकर चटकाएं। सूखी लाल मिर्च व हींग डालकर चटनी में मिलाएं।

तड़के के लिए: तेल– डेढ़ चम्मच, काली सरसों एक छोटा चम्मच, सूखी लालमिर्च 2 से 3, करी पत्ता– 8 से 10, हींग–एक चुटकी।

करी पत्ता चटनी

सामग्री– ताजा करी पत्ता– एक प्याला ताजा नारियल कद्दूकस किया–2 बड़े चम्मच, भुनी चना दाल एक बड़ा चम्मच, हरी मिर्च– 1 से 2, जीरा– 1/2 छोटा चम्मच, अदरक– 1/2 इंच का टुकड़ा, इमली का पेस्ट एक बड़ा चम्मच, सरसों–1/2 छोटा चम्मच, तेल–एक छोटा चम्मच।

यूं बनाएं: तेल गरम करें, इसमें राई, जीरा डालकर चटकाएं। अदरक व हरीमिर्च डालकर थोड़ा भूनें। करी पत्ता डालकर चलाते रहें। यह पत्ते हल्के कुरकुरे ही जाने चाहिए। मगर ज्यादा भी न भुन जाएं। अब भुने चने व नारियल डालकर दो मिनट चलाकर उतार लें। नमक व इमली का पेस्ट डालकर बारीक पीस लें।

नारियल चटनी

तड़के के लिए: तेल– एक बड़ा चम्मच काली सरसों या राई–1/2 छोटा चम्मच, साबुत लाल मिर्च 2. करीपत्ता– 10 से 12।

सामग्री–ताजा नारियल कद्दूकस किया हुआ–एक प्याला, भुनी चना दाल–2 बड़े चम्मच,हरी मिर्च–एक, नमक–स्वादानुसार, जीरा–डेढ़ छोटा चम्मच, ताजा दही–2 बड़े चम्मच।

यूं बनाएं: चटनी की सारी सामग्री को मिक्सी में पीस लें। पेन में तेल गरम करके राई–करी पत्ता और लाल मिर्च डालकर तड़का लगा दें।

नारियल की मीठी चटनी

सामग्री– ताजा नारियल छिलका रहित व कद्दूकस किया हुआ एक प्याला, काजू–4 से 5, चीनी– 2 बड़े चम्मच नमक –एक चुटकी, हरी इलायची–2

यूं बनाएं: सारी सामग्री को मिलाकर मिक्सी में दरदरा पीस लें। इसे इलायची के बगैर भी बनाया जाता है।

तुअर दाल चटनी

सामग्री– तुअर (अरहर)की दाल – 1/2 प्याला, साबुत लाल मिर्च– 3 से 4, जीरा एक छोटा चम्मच, मेथी दाना – 1/4 छोटा चम्मच, साबुत धनिया–एक बड़ा चम्मच, कालीमिर्च के दाने–3 से 4, हींग–एक चुटकी, काली सरसों–एक छोटा चम्मच, धुली उड़द दाल एक छोटा चम्मच, करी पत्ता 10 से 12, इमली का पेस्ट–2 बड़े चम्मच, गुड़ एक बड़ा चम्मच, नमक– स्वादानुसार, तेल–डेढ़ बड़ा चम्मच।

यूं बनाएं: पेन में तेल गरम करें। इसमें जीरा, राई, कालीमिर्च, करीपत्ता, मेथी, धनिया व उड़द दाल डालकर जरा देर भूनें। अब – लाल मिर्च व तुअर दाल डालकर मंदी आंच पर गुलाबी होने तक भूनते रहें। इसी बीच हींग भी डाल दें। भुन जाने पर उतारकर ठंडा करें। इसमें नमक, गुड़ व इमली का पेस्ट व थोड़ा पानी डालकर बारीक पीस लें। आवश्यकतानुसार गाढ़ा या पतला करें। इसे सूखा भी बनाकर रखा जा सकता है। जरूरत के समय इमली, गुड़ व पानी मिलाकर तैयार कर लें।

CBSPD

O1E NATION NORCET BOOK

TARGET HIGH

6th Colored Hybrid *Edition* (Book + Digital)

Revise Reprint- 2022

the **Best Seller** for Nursing Competitive Exams in Year 2020-21 the only book with amazon Flipkart

An Exclusive & Complete Coverage of

All National & State Level Exams

Including AIIMS NORCET 2021 (In App), AIIMS Raipur (Lecturer) 2021, CNCI (NO) 2021, AIIMS NORCET 2020, AIIMS Combined (NO) 2020, AIIMS Nagpur (NO) 2020, AIIMS Patna (NO) 2020, JIPMER (NO) 2020, NIMHANS (NO) 2020, AIIMS New Delhi (NO) 2020, BFUHS (NO) 2020, BHU (NO) 2019, GMCH (NO) 2019, RRB (NO) 2019, Safdarjung (NO) 2019, ESIC (NO) 2019, AIIMS Raipur (NO) 2019, AIIMS Bhubaneshwar (SNO) 2019, State PSCs and many more...

6 *Strong* **Reasons** to refer to **TARGET HIGH** Digital Lite

- **Assess Yourself › Read & Practice**
- **Golden Points › Listen & Recall**
- **High Yield Topics ›Revise on the Go**
- **Add ONs › Dil Mange More Content**
- **Be in SPOTLIGHT**
- **Any Doubt Ask AMLI**

Target CHO (2nd, Hybrid Edition,)

- A comprehensive guide for MSc Nursing entrance of AIIMS Institutions and Other Universities
- Comprehensive guide for PhD Entrance examination & Nursing Faculty Entrance exams
- Special focus on Nursing Research, Nursing Administration and Nursing Education Subjects
- Synopsis of all the subjects for comprehensive preparation
- 3000+ bullet points for last minute revision
- 10000+ MCQs (7000+ Subject wise questions & 10+ previous year papers of MSc Entrance exam)

Target High Hindi (3rd Hybrid Edition)

- A thoroughly Revised & Updated Ed. (up to April 2022) with all Recent Papers, Topics & Current Affairs.
- Includes 10K New Qs (Book +App) & 200 Pages of New Content
- Covers about 21K Qs. (Book +App
- 3000 Golden Points for Last Minute Revision in Book & Podcast Form
- 100+ Previous Year (2021-2010) Papers covering 25+ Exams of National & State Levels (Book+App)
- 73+ Appendices (Book+App) on Most Recent Topics
- Special and updated Section on COVID-19 management
- 600+ Pages of Synopses covering all Subjects
- 1000+ Important Tables, Illustrations & Images for clarity of concepts.
- Strong Digital Support with plenty of ADD-ON Content

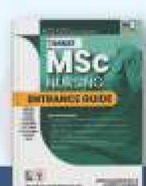

Target Msc (The Hybrid Edition)

- A thoroughly revised and updated edition
- Reviewed by Various State CHO Toppers
- 5000+ MCQs (With/Without Explanations)
- 300+ Pages Synopses
- 17 Previous Years' Paper (All States) up to June 2022
- GK & Program & Policies covered up to June 2022
- 5000+ Important Golden points
- Special emphasis on Community Health Nursing (100+ Pages & 1000+ MCQs)
- 150+ IBQs (All Nursing Subjects)
- Important Color Plates Included

इस माह आपके सितारे

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह लाभप्रद रहेगा, कोई काम कुछ समय से रूका हुआ था तो वह जल्द ही शुरू हो जाएगा, आर्थिक रूप से मजबूती मिलेगी, परिवार के बीच मेलजोल और बढ़ेगा। वैचारिक क्षमता में भी वृद्धि होगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह माह लाभदायक रहेगा, सकारात्मक रहें।

वृषभ

पारिवारिक दृष्टि से यह माह शुभ है। माता–पिता के स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को अच्छे परिणाम मिलेंगे। राजकीय सेवा क्षेत्र के जातकों को अपने सहयोगियों का अच्छा साथ मिलेगा। पदोन्नति संभव, माह के तीसरे सप्ताह में दुर्घटना की संभावना रहेगी, सचेत रहें।

मिथुन

परिवार में प्रतिष्ठा होगी और सुखद समाचार मिलेंगे। व्यापार वृद्धि संभव, खर्चों पर नियंत्रण रखें, शत्रु पक्ष हानि पहुंचा सकता है, सरकारी परीक्षा प्रतियोगिता की तैयारी कर रहे जातकों को सफलता मिलेगी, जीवन साथी का भरपूर सहयोग प्राप्त होगा। मनोविचारों को नियंत्रण में रखें। स्वास्थ्य सामान्य।

कर्क

यह माह सुखदायी सिद्ध होगा। रूका धन प्राप्त हो सकता है, लेकिन खर्चे भी बढ़ जाएंगे। कर्ज में वृद्धि में भी हो सकती है। करियर में बदलाव के लिए विचार करेंगे और नए क्षेत्र के लोगों से मेल–मुलाकात को बढ़ावा देंगे। उदर रोग संबंधी परेशानी हो सकती है और निरंतर परामर्श लें। वरिष्ठों का सम्मान करे।

सिंह

माह का पूर्वार्द्ध सुकुन भरा है, ऊर्जा और आत्मविश्वास से भरपूर रहेंगे, प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, नौकरी में पदोन्नति के संकेत मिलेंगे, विद्यार्थी वर्ग को अच्छे परिणाम मिलेंगे। आपका कोई अपनी घर की बात का फायदा उठाकर परिवार के बीच द्वेष पैदा करने की कोशिश करेगा, व्यापार में नए समझौते होंगे।

कन्या

गलत संगति से बचने का प्रयास करें। घर में खुशी का माहौल रहेगा। परिवार के साथ यात्रा एवं सैर सपाटे के योग बनेंगे। व्यापार में गलत निवेश दुविधा में डाल सकता है। सरकारी कामगारों की अपने से वरिष्ठ अधिकारियों से अनबन एवं तनातनी संभव। मधुमेह एवं रक्तचाप से पीड़ित जातकों को आराम मिलेगा। औषधि लेते रहें।

तुला

अर्थ संबंधित निर्णय अपने वरिष्ठजनों के परामर्श से ही करें। शुभ एवं लाभप्रद समाचार मिलेंगे। प्रचंड पुरुषार्थ की आवश्यकता रहेगी। स्वास्थ्य की दृष्टि से माह उत्तम रहेगा। ऊर्जावान रहेंगे। मन में रचनात्मक विचार पैदा होंगे एवं क्रियान्वयन भी करेंगे। परिवार को आपसे काफी अपेक्षाएं रहेंगी।

इस माह के पर्व/त्योहार

4 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला अष्टमी	दधिची जयंती
5 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला नवमी/दशमी	शिक्षक दिवस/तेजा दशमी
6 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला एकादशी	जलझूलनी एकादशी
9 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला चतुर्दशी	अनंत चतुर्दशी/ गणेश प्रतिमा विसर्जन
10 सितम्बर	भाद्रपद शुक्ला पूर्णिमा	महालय श्राद्ध प्रारंभ
14 सितम्बर	अश्विन कृष्णा चतुर्थी	हिन्दी दिवस
25 सितम्बर	अश्विन अमावस्या	देव पितृ कार्य अमावस्या/ श्राद्ध समापन
26 सितम्बर	अश्विन शुक्ल प्रथमा	नवरात्रि घट स्थापना/ म. अग्रसेन जयंती

वृश्चिक

उग्र व्यवहार कष्टकारी हो सकता है, स्वास्थ्य में नरमी, परिवार में मनमुटाव की संभावना रहेगी। व्यापार के क्षेत्र में कोई बड़ा समझौता करने से बचे, भूमि संबंधित निवेश में लाभ मिलेगा। राजनीति से जुड़े लोग विरोधियों से बचे एवं अपनी वाणी पर नियंत्रण रखें, कोई पुरानी बीमारी उभर सकती है।

धनु

व्यापारिक निवेश एवं समझौते को टालने में ही आपका भला है। राजनीतिज्ञ नए आयाम स्थापित करेंगे व महत्वपूर्ण निर्णय ले सकेंगे। शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रहेगा, वरिष्ठजनों के सहयोग से कार्य करे। माह के अंत में मानसिक रूप से किसी तनाव के शिकार हो सकते है, बैचेनी का भाव रहेगा।

मकर

स्वभाव में चिड़चिड़ापन रहेगा, अपना गुस्सा दूसरों पर उतारने के व्यर्थ प्रयास न करें, व्यापारिक दृष्टि से माह शुभ है। नए स्त्रोतों से धन की प्राप्ति होगी। आपकी किसी से दुश्मनी भी हो सकती है, जिससे नकारात्मक भाव बनेगा, राजकीय एवं राजनीतिक कार्यों में चुनौतियों से सामना होगा।

कुम्भ

इस माह कई शुभ अवसर प्राप्त होंगे, कल्पनाशीलता बढ़ेगी जो आपको नए क्षेत्रों में काम करने को उत्साहित करेगी, आप अपनी बुद्धि के अनुसार निर्णय लेने एवं वाणी को मधुर रखे, माह के दूसरे सप्ताह में कोई शारीरिक समस्या उभर सकती है। अनजान व्यक्ति के प्रति आकर्षण का भाव पैदा होगा।

मीन

इस माह किंकर्तव्यविमूढ की स्थिति रहेगी, अपने से बड़ों की राय लेकर कार्य करें। माह के मध्य में भ्रमित करने का प्रयास किया जा सकता है। खर्चों में बढ़ोतरी होगी, राजनीति से जुड़े जातकों को सफलता मिल सकती है। कार्यों की प्रशंसा मिलेगी।

माईनिंग इंजीनियर्स एसोसिएशन : मधुसूदन पालीवाल बनें अध्यक्ष

उदयपुर। माईनिंग इंजिनियर्स ऐसोसिएशन ऑफ इण्डिया, राजस्थान चेप्टर, उदयपुर की वर्ष 2021-22 साधारण सभा की वार्षिक बैठक गत दिनों हुई। जिसमें चेप्टर के सदस्य व परिजन सम्मिलित हुए। चैप्टर सचिव मधूसूदन पालीवाल ने सभी का स्वागत किया व वर्ष पर्यन्त गतिविधियों की जानकारी दी। कोषाध्यक्ष एम के मेहता ने वर्ष 2020-21 का अंकेक्षित लेखा-जोखा प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एसएस राठौड़ ने की। मुख्य अतिथि हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के निदेशक अखिलेश जोशी थे। इस अवसर पर वर्ष 2022-24 के लिये एसोसिएशन के चुनाव भी सम्पन्न हुए। जिसमें सर्वसम्मति से अध्यक्ष के रूप में मधुसूदन पालीवाल, उपाध्यक्ष प्रवीण शर्मा, सचिव आसिफ अंसारी, संयुक्त सचिव डॉ. एस.के.वशिष्ठ, कोषाध्यक्ष एम.के.मेहता, कार्यकारिणी सदस्य के रूप में डी.पी. गौड़, आर.सी.पुरोहित, एस. सी. सुधीर, एस. एन. माली व हितांशु कौशल चुने गए। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आर पी गुप्ता ने नई कार्यकारिणी को शपथ दिलाई।

नेशनल व्हीलचेयर क्रिकेट उदयपुर में

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान और डिफरेंटली एबल्ड क्रिकेट काउंसिल ऑफ इंडिया (डीसीसीआई) के संयुक्त तत्वाधान में 27 नवम्बर से 3 दिसम्बर 2022 तक उदयपुर में तीसरी नेशनल व्हीलचेयर क्रिकेट चैम्पियनशिप होगी। इस संबंध में डीसीसीआई के सचिव रविकांत चौहान, संयुक्त सचिव अभय प्रताप सिंह, पैरा ऑलम्पियन कोच महावीर प्रसाद सैनी व संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल के मध्य बैठक के बाद सप्त दिवसीय आयोजन की रूपरेखा को अंतिम रूप दिया गया। बैठक में विष्णु शर्मा हितैषी, भगवान प्रसाद गौड़, रोहित तिवारी, रविश कावड़िया व रजत गौड़ भी उपस्थित थे। डीसीसीआई सचिव ने बताया कि भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड एवं पैरालम्पिक कमेटी ऑफ इंडिया (पीसीसीआई) से मान्य यह विश्व की सबसे बड़ी व्हीलचेयर क्रिकेट स्पर्धा है। इसमें 16 टीमों के 300 से अधिक क्रिकेटर, अधिकारी, कोच व निर्णायक भाग लेंगे। बैठक में नेशनल व्हीलचेयर क्रिकेट, चैम्पियनशिप-2022 के पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

स्वैच्छिक रक्तदाताओं का सम्मान

उदयपुर। सरल ब्लड बैंक में स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव पर अतिरिक्त आयकर आयुक्त भेराराम चौधरी व लायंस के पूर्व बहु प्रांतीय अध्यक्ष अरविंद शर्मा व गणेश लाल जैन के अतिथ्य में स्वैच्छिक रक्तदान में उल्लेखनीय योगदान करने वाले रक्तदाताओं व रक्तदाता संस्थाओं का सम्मान किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से अनीस मियाँजी, सीए अंशुल मोगरा, लायन राजेश शर्मा, विवेक लसोड, अंकित सोनी, प्रभात सिंह थे। इसके साथ ही ब्लड बैंक में विगत 12 वर्षों से सेवारत डॉ ओ पी महात्मा को उनकी विशिष्ट सेवाओं हेतु सम्मानित किया गया। अतिथियों का स्वागत सरल ब्लड बैंक के संस्थापक श्याम एस सिंघवी ने किया। मुख्य अतिथि ने ब्लड बैंक द्वारा रक्त सेवा के अतिरिक्त शिक्षा, चिकित्सा, पेयजल इत्यादि सेवाओं की प्रशंसा की। विशिष्ट अतिथि शर्मा ने कहा कि रक्तदान प्रासंगिक दान है। इस अवसर पर शहर के शताधिक गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। संचालन संयम सिंघवी ने किया।

एमडीएस में शपथ समारोह

उदयपुर। एमडीएस सीनियर सेकेंडरी स्कूल में अलंकरण व शपथ ग्रहण समारोह हुआ। मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर गौरव जैन, कर्नल रजनीश नथावत थे। कार्यक्रम में विद्यार्थी परिषद को शपथ दिलाई गई। हैड बॉय के लिए संयम अरोड़ा, हेड गर्ल के लिए लक्षिका असुरिया, स्पोर्ट्स कैप्टन के लिए पृथ्वीराज चौहान, वाइस कैप्टन के लिए हर्षित चौधरी का चयन किया गया। कार्यक्रम में शैलेंद्र सोमानी, पुष्पा सोमानी व रमेश चन्द्र सोमानी आदि मौजूद रहे। संचालन पूर्णिमा जैन व सोनू पाल ने किया।

रॉकवुड्स में राइज एंड साइन कैंप

उदयपुर। रॉकवुड्स स्कूल में दो दिवसीय कैंप लगा। परेड की सलामी मुख्य अतिथि संस्था संरक्षिका अलका शर्मा ने ली। कक्षा 12वीं के विद्यार्थियों के लिए आयोजित कैंप में जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के साथ ही सभी के प्रति कृतज्ञता का भाव सिखाया गया। 5 दलों के कैम्प में प्रतियोगिताएं हुई। टेलेंट शो, ग्रुप परिचय, फ्लेम लेस कुकिंग, नुक्कड़ नाटिका, ट्रेजर हंट मुख्य है। प्रतियोगिता में विजेता प्रतिभागियों को मेडल दिए गए। शिविर में रानी लक्ष्मी बाई विजेता दल रहा। निदेशक दीपक शर्मा मौजूद रहे।

जेके लक्ष्मी सीमेंट की बिक्री में 26 प्रतिशत की वृद्धि

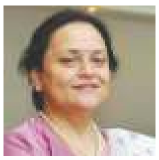

उदयपुर। जेके लक्ष्मी सीमेंट लिमिटेड ने अप्रैल-जून 2022 की तिमाही मे अपनी शुद्ध बिक्री में लगभग 26 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की है। इस तिमाही में शुद्ध बिक्री 1551 करोड़ रूपए हुई, जो अप्रैल-जून 2021 की तिमाही में 1231.51 करोड़ रूपए थी। यह जानकारी देते हुए वाइस चेयरपर्सन व एमडी विनीता सिंघानिया ने बताया कि वैश्विक ईंधन की कीमतों में असामान्य वृद्धि की वजह से लागत पर आए दबाव के बावजूद कंपनी का अप्रैल-जून 2022 में पररिचालन लाभ 217 करोड़ रूपये हो गया, जो पिछले वर्ष इसी तिमाही में 216 करोड़ रूपए से थोड़ा ज्यादा था। हालांकि लागत बढ़ने की वजह से परिचालन लाभ मार्जिन अप्रैल-जून 22 में घटकर 14 प्रतिशत रह गया, जो एक साल पहले इसी तिमाही में 18 प्रतिशत था। ब्याज और मूल्यहास प्रदान करने के बाद अप्रैल-जून22 में 152.37 करोड़ रूपए रहा जो गत वर्ष इसी तिमाही में 161.28 करोड़ रूपए था। करों और अन्य व्यापक आय प्रदान करने के बाद अप्रैल-जून 22 में जेके लक्ष्मी सीमेंट का लाभ कम होकर 101.59 करोड़ रूपए रहा, जो पिछले वर्ष की इसी तिमाही मे 119.32 करोड़ रूपए था।

शर्मा का अभिनंदन

उदयपुर। उदयपुर क्रिकेट एकेडमी में आरसीए सचिव महेंद्र शर्मा के सान्निध्य में पौधरोपण किया गया। डायरेक्टर विवेक शर्मा ने बताया कि शर्मा के साथ यूडीसीए प्रेसिडेंट मनोज भटनागर, यूडीसीए उपाध्यक्ष यशवंत पालीवाल एवं अनीश इकबाल, पूर्व अंडर-19 क्रिकेटर अनूप दवे, पूर्व सह सचिव फील्ड क्लब पंकज कनेरिया, जीमी छाबड़ा एकेडमी कोचेस विक्रम सिंह चौहान, कल्पेन्द्र झा, अनिल सोंधी, हेमेंद्र सिंह चौहान एवं जसवंत सिंह राठौड़ उपस्थित थे। पदाधिकारियों ने शर्मा का अभिनंदन किया।

सीडलिंग स्कूल को खिताब

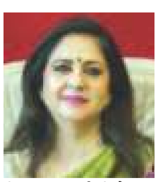

उदयपुर। सीडलिंग द वर्ल्ड स्कूल ने एक प्रतिष्ठित शैक्षिणिक पत्रिका के-12 एकेडमिक इनसाइट के तत्वाधान में देश के सर्वश्रेष्ठ10 अंतरराष्ट्रीय दैनिक विद्यालयों में अपना स्थान बनाया। यह जानकारी निदेशक हरदीप बक्शी ने दी। विद्यालय के आधार स्तंभों में से एक तथा सबसे परिश्रमी तथा निष्ठावान व्यक्तित्व विद्यालय की निदेशक मोनिता बक्षी का योगदान उन्नति के प्रथम पायदान पर है।

वंडर साथी मिलन समारोह

मदनगंज-किशनगढ़। वंडर सीमेंट को सबसे खास उसकी सर्वोत्तम और उच्च स्तरीय क्वालिटी ही बनाती है। वंडर सीमेंट के प्रति आमजन के दिनों-दिन बढ़ते विश्वास के चलते कम्पनी का ध्येय क्वालिटी को उच्चतर बनाए रखना ही है। ये बात वंडर सीमेंट द्वारा गत दिनों साथी मिलन समारोह के दौरान कम्पनी के अधिकारियों ने कहीं। अलवर मोटेल एंड रिसॉर्ट्स में आयोजित साथी मिलन समारोह में कंपनी द्वारा राजमिस्त्री व ठेकेदारों को उपहार वितरित किए गए। अध्यक्षता जोनल हेड मुकेश शर्मा ने की। मुख्य अतिथि संजय जोशी थे। विशिष्ट अतिथि मोगरा राजस्थान टेक्निकल सर्विसेज हेड मेनीष चौधरी थे। योजनाओं की जानकारी तकनीकी अधिकारी ललित भारद्वाज ने दी। अतिथियों का स्वागत कंपनी के बिजनेस पार्टनर राजकुमार गुप्ता ने किया। कंपनी के सेल्स अधिकारी मयंक व दिनेश कुमार ने आभार जताया।

भंडारी अध्यक्ष, बक्शी सचिव

उदयपुर। भंडारी दर्शक मंडप में उदयपुर बैडमिंटन संघ के चुनाव राजस्थान बैडमिंटन संघ के सचिव केके शर्मा, राजस्थान राजय क्रीड़ा परिषद के पर्यवेक्षक डॉ. हिमांशु राजौरा एवं उदयपुर ओलंपिक संघ के पर्यवेक्षक डॉ. दीपांकर चक्रवर्ती की मौजूदगी में हुए। सभी पदों पर चुनाव निर्विरोध हुए। कमल भंडारी अध्यक्ष व सुधीर बक्शी सचिव बने। इसके अलावा वीनू हिरानी कोषाध्यक्ष, राजेन्द्र गलुंडिया, सुरेन्द्र नाहर, योगेश पोखरना, हिम्मतसिंह पोरवाल, विनय जोशी, भगवान स्वरूप वैष्णव उपाध्यक्ष, चांद चावत संयुक्त सचिव, विप्लव माथुर, अमरकांत खुराना, सुखराम दलाल, हेमंत पंडा, विक्रमादित्य चावला, महिपाल सिंह झाला, जितेन्द्र जैन, माया चावत, नीलम इस्सर, कुशाग्र मेहता, उत्कर्ष बक्शी कार्यकारिणी सदस्य चुने गए।

गोलछा की पुण्यतिथि पर रक्तदान

उदयपुर। राजेन्द्र कुमार गोलछा की 31वीं पुण्यतिथि पर गत दिनों 31 रक्तदाताओं ने रक्तदान किया। शिविर प्रभारी यशवंत पालीवाल ने बताया कि शिविर में रक्तदाताओं ने स्वैच्छिक रक्तदान किया। शुरुआत में गोलछा एसोसिएटेड के वरिष्ठ महाप्रबंधक राजेन्द्र पारीक, महाप्रबंधक माइंस मोहन पालीवाल ने शिविर का शुभारंभ किया।

आरडी माइन को सिल्वर अवार्ड

उदयपुर। हिन्दुस्तान जिंक के दरीबा स्मेल्टिंग कॉम्प्लैक्स के राजपुरा दरीबा माइन के प्रोजेक्टर आरडी पेस्ट फिल उंड ड्राइ टेलिंग प्रोजेक्ट को स्वास्थ्य और सुरक्षा प्रदर्शन के लिए रॉयल सोसायटी फोर द प्रिवेंशन ऑफ एक्सीडेंट्स द्वारा सिल्वर अवार्ड 2022 से पुरस्कृत किया गया है। आरडी माइन में प्रोजेक्ट के दौरान 2 मिलियन सुरक्षित कार्य कर शून्य रिकॉर्ड करने योग्य दुर्घटना दर्ज की गई।

इनरव्हील क्लब पदस्थापना

उदयपुर। इनरव्हील क्लब का पदस्थापना समारोह पिछले दिनों हुआ। प्रेसीडेंट रश्मि पगारिया ने बताया कि पदस्थापना समारोह की मुख्य अतिथि निवृत्तिकुमारी मेवाड़ ने कहा कि बच्चों पर अपनी इच्छाएं थोपने के बजाय उनकी इच्छानुसार उन्हें आगे बढ़ाना चाहिए। पदस्थापना अधिकारी पूर्व इनरव्हील डिस्ट्रिक्ट चेयरमैन चन्द्रप्रभा मोदी ने अध्यक्ष रश्मि पगारिया, सचिव सीमा चंपावत को शपथ दिलाई।

अजा आयोग के उपाध्यक्ष का स्वागत

उदयपुर। जिला परिषद में अनुसूचित जाति वर्ग की समस्याओं एवं एनजीओ प्रतिनिधियों की बैठक में राष्ट्रीय अनुसूचित जाति आयोग के उपाध्यक्ष अरुण हलदार का नारायण सेवा संस्थान की ओर से स्वागत किया गया। संस्थान के मीडिया प्रभारी विष्णु शर्मा हितैषी ने कमजोर वर्ग एवं दिव्यांगजन की बेहतरी के लिए चलाए जा रहे नि:शुल्क प्रकल्पों की विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता विभाग के उपनिदेशक मानधाता सिंह, दिलीप सिंह भी मौजूद थे।

डॉ. पंड्या सम्मानित

उदयपुर। बाल अधिकार विशेषज्ञ डॉ. शैलेन्द्र पंड्या को बाल संरक्षण के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्तर पर योगदान के लिए लीडरशिप अवार्ड से सम्मानित किया गया। यह सम्मान बॉलीवुड अभिनेत्री एवं बालिका शिक्षा में सहयोगी दीया मिर्जा ने जयपुर में प्रदान किया।

भूपेंद्र मिस्टर और मिस बनी विशाखा

उदयपुर। मेवाड़ बीएससी नर्सिंग कॉलेज में फ्रेशर पार्टी व फेयरवेल कार्यक्रम हुआ। 2017 से 2022 बेच को फेयरवेल दिया गया। नया बेच 2021 को फ्रेशर पार्टी दी। इसमें मिस्टर फ्रेशर भूपेंद्र कुमार और मिस फ्रेशर विशाखा बनी। इस मौके पर कॉलेज डायरेक्टर अब्दुल सलाम खान, दिनेश राजपुरोहित, कैलाश सालवी व पंकज कुमार शर्मा मौजूद रहे।

यूसीए : चुघ वित्त कमेटी सदस्य

उदयपुर। उदयपुर डिस्ट्रिक्ट क्रिकेट एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज भटनागर, उपाध्यक्ष अनीस शेख व सचिव महेंद्र शर्मा द्वारा उदयपुर क्रिकेट एसोसिएशन में राजेश चुघ को वित्त कमेटी का सदस्य नियुक्त किया गया है।

मो. आसिफ विभागाध्यक्ष नियुक्त

उदयपुर। आरएनटी मेडिकल कॉलेज द्वारा संचालित बाल चिकित्सालय के विभागाध्यक्ष पद पर मोहम्मद आसिफ ने कार्यभार संभाला। यह नियुक्ति उन्हें दो वर्ष के लिए प्रदान की गई है। आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. लाखन पोसवाल ने बताया कि डॉ. आसिफ अस्थमा एवं एलर्जी स्पेशलिस्ट हैं।

मुस्तफा सलाहकार नियुक्त

उदयपुर। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग ने गिर्वा में एडवोकेट मुस्तफा शेख, अजित मीणा व गीता सुहालका को तहसील स्तरीय उचित मूल्य दुकान आवंटन सलाहकार समिति का सदस्य मनोनीत किया है।

हुसैन राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। एनएसयूआई सोशल मीडिया के राष्ट्रीय अध्यक्ष आदित्य भगत ने उदयपुर के इजहार हुसैन को एनएसयूआई सोशन मीडिया के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर नियुक्त किया है।

सबसे छोटी डायरी

उदयपुर। चन्द्रप्रकाश चित्तौड़ा ने सूक्ष्मदर्शी लेंस की मदद से ही देखे जाने वाली सबसे छोटी मात्र 0.02 मिलीमीटर व 42 पृष्ठ की डायरी बनाकर गिनीज बुक में अपना दावा प्रस्तुत किया। चित्तौड़ा के अनुसार गिनीज बुक में दर्ज विश्व की सबसे छोटी डायरी 0.75 मिलीमीटर की है। यह सुई के छेद से भी निकाली जा सकती है।

वया संभागीय संयोजक मनोनीत

उदयपुर। भाजपा राजस्थान प्रदेश निकाय प्रकोष्ठ प्रदेश संयोजक धर्मेन्द्र गहलोत ने नानालाल वया को उदयपुर संभाग का संयोजक मनोनीत किया।

डॉ. मधुबाला सम्मानित

उदयपुर। राजकीय पन्नाधाय महिला चिकित्सालय उदयपुर में कार्यरत एवं आरएनटी मेडिकल कॉलेज में वरिष्ठ प्राध्यापक डॉं मधुबाला चौहान को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं के लिए स्वतंत्रता दिवस समारोह में सम्मानित किया गया। उन्हें राज्य के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री प्रताप सिंह खाचरियावास ने सम्मानित किया।

शोक समाचार

उदयपुर। श्री प्रमोद जी गर्ग, निवासी तीज का चौक का 10 जुलाई को निधन हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त धर्मपत्नी श्रीमती राजकुमारी, पुत्र गोपाल, गजेन्द्र, पुरूषोत्तम व भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री शोभालाल जी शर्मा निवासी नाईयों की तलाई का 11 जुलाई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र लोकेश, जयनारायण व दुर्गाशंकर तथा पुत्रियां श्रीमती भानु व दुर्गा सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री वीरेन्द्र कुमार जी गोधा का 12 जुलाई को आकस्मिक देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती गुणमाला देवी, पुत्र अतुल गोधा व पुत्रियां श्रीमती भारती जोशी, मोनिका शुक्ला व आभा मेहता तथा उनका समृद्ध-सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्री गोप कुमार जी मेहता, अशोक नगर का 16 जुलाई को स्वर्गवास हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल माता श्रीमती सुशीला देवी, धर्म पत्नी श्रीमती सरोज, पुत्र प्रियश, पुत्री गोल्डी जांगड़ा व उनका भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

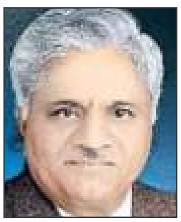

उदयपुर। बार एसोसिएशन, उदयपुर के पूर्व अध्यक्ष एवं वरिष्ठ अधिवक्ता श्री प्रकाश जी पानेरी का 16 जुलाई को पानेरियों की मादड़ी स्थित आवास पर देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोकसन्तप्त धर्मपत्नी श्रीमती अनुसूया देवी, पुत्र एडवोकेट राकेश, पुत्रियां श्रीमती पार्वती, चेतना व मुक्ति तथा पौत्र, दोहित्र- दोहित्रियों का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। श्रीमती धापू बाई जी शर्मा धर्मपत्नी स्व. श्री भंवरलाल जी शर्मा (पूर्व सरपंच भुवाणा) का 18 जुलाई को देहान्त हो गया। वे अपने पीछे शोक संतप्त पुत्र प्रभुलाल, सुरेश कुमार व ललित कुमार तथा पुत्रियां श्रीमती मोहिनी देवी, पुष्पादेवी, गीतादेवी, उषादेवी व तनूजा देवी तथा पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

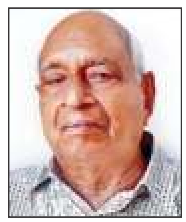

उदयपुर। श्री महेशचन्द्र जी दीक्षित का उनके चाणक्यपुरी सेक्टर-3 स्थित आवास पर 24 जुलाई को देहान्त हो गया। वे कृषि विश्वविद्यालय से सेवा निवृत्त थे। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती पुष्पा देवी, पुत्र गोविंद दीक्षित, पुत्री श्रीमती तेजेश्वरी मोड़ व पौत्र-पौत्री, दोहित्र-दोहित्री का भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

किशनगढ़। श्रीमती अचरज देवी जी भंडारी (धर्म पत्नी स्व. वीरेन्द्र बहादुर जी भंडारी, स्वतंत्रता सेनानी) का 20 जुलाई को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे शोक विह्वल पुत्र निर्मल कुमार, डॉ. राकेश, पुत्र वधू लीला भंडारी, पुत्री श्रीमती राजलक्ष्मी देवी व पौत्र-पौत्रियों, दोहित्र-दोहित्रियों सहित वृहद परिवार छोड़ गई हैं।

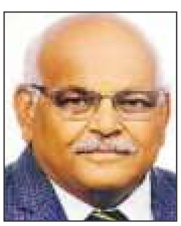

उदयपुर। श्री सुरेन्द्र कुमार जी दलावत निवासी पायड़ा का 1अगस्त को देह परिवर्तन हो गया। वे अपने पीछे शोक सन्तप्त धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी, पुत्र जम्बू कुमार, पुत्रियां श्रीमती सीमा भादावत, हेमलता वक्तावत व नीता जेकणावत सहित पौत्र-पौत्रियों , दोहित्र-दोहित्रियों व भाई-भतीजों का वृहद परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक से सेवानिवृत्ति श्री हीरालाल जी नागदा निवासी लखावली की धर्मपत्नी श्रीमती विमला जी नागदा का 18 अगस्त को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल पति, पुत्र सुरेश व अशोक, पुत्रियां प्रभा, पुष्पा व सीमा, पौत्र लोकेश, उमेश व मनीष, पौत्रियां कोमल व हिमानी सहित भाई-भतीजों का वृहद व संपन्न परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। स्व. मनोहर लाल जी सहलोत आकोला वाला की धर्मपत्नी श्रीमती अजब बाई का 2 अगस्त को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र मिट्ठालाल, ओम प्रकाश, ललित कुमार, अनिल कुमार, सुनील कुमार तथा पड़पौत्र-पड़पौत्रियों एवं भाई-भतीजों का भरापूरा परिवार छोड़ गई हैं।

उदयपुर। इतिहासकार एवं भारतीय इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. के.एस गुप्ता (92) का 7 अगस्त को देहावसान हो गया। उनके निर्देशन में 40 शोधार्थियों ने पीएचडी की उपाधि हासिल की। सुखाड़िया विश्वविद्यालय में इतिहास विभाग के अध्यक्ष रहे गुप्ता का जन्म भीलवाड़ा के बनेड़ा गांव में 27 अप्रेल 1932 को हुआ था। उनका प्रत्यूष के जून-22 अंक में स्वतंत्रता में महाराणा प्रताप के योगदान सम्बंधी आलेख छपा था। उनके निधन पर विभिन्न राजनैतिक दलों, विद्वानों व इतिहासज्ञों ने गहरा शोक प्रकट किया है। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्म पत्नी श्रीमती शांता जी गुप्ता, पुत्र अरविंद व अशोक गुप्ता तथा पुत्री श्रीमती अनिता मालू सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं।

SANDAL JEWELLERS

We are deal only hallmark Jewellery | **Gold purity 91.6 22/22K**

Exclusive light weight Gold Jewellery

1. Government Approved Jewellery
2. Gold purity testing by carat machine.
3. Swarn yojana deposit scheme starting at 1000 rupees. Pay 11 installment and get 1 installment free & pay 21 installment and get 3 installment free free free

INTERNATIONAL GEMOLOGICAL INSTITUTE

Exclusive light weight Diamond Jewellery

1. All Diamonds are tested international Gemological Institute tested (IGI).
2. Exclusive design Jewellery, High category Diamond Purity vvs, vs (Super deluxe, deluxe) & colour F, G, H (white & offwhite)

Head Office:
Sandal Jewellers
677-678 Chetak Marg, Udaipur-313001
Phone: 0294-2423533, 2425712, Mobile: 9414168712
Email: sandal.udaipur2009@gmail.com

Branch Office:
62-Moti Chohatta, Clock Tower
Udaipur (Raj).
Phone: 0294-2421012,
Mobile: 7737792247

जी बी एच जनरल एवं मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

AIIMS.UDR

सस्ता इलाज-अच्छा इलाज सभी के लिए

सभी तरह के इलाज की सुविधा एक ही छत के नीचे

नियमित ओ.पी.डी. प्रातः 9:00 से 3:00 बजे (रविवार अवकाश)

उपलब्ध सुविधाएं

- कार्डियोलॉजी
- न्यूरोलॉजी
- न्यूरो सर्जरी
- गेस्ट्रोएंट्रोलॉजी
- यूरोलॉजी
- नेफ्रोलॉजी
- पिडियाट्रिक न्यूरोलॉजी
- कैंसर रोग
- हड्डी एवं जोड रोग
- जनरल मेडिसिन
- बाल एवं शिशु रोग
- नाक, कान, गला रोग
- लेप्रोस्कोपिक एवं जनरल सर्जरी
- नेत्र रोग
- मनोचिकित्सा विभाग
- प्रसूति एवं स्त्री रोग
- श्वास एवं अस्थमा रोग

चिरंजीवी | जननी सुरक्षा योजना | TPA एवं Insurance से कैशलेस इलाज की सुविधा | RGHS, ESI, ECHS से कर्मचारियों हेतु उपचार सुविधा।

जी बी एच जनरल एवं मेमोरियल कैंसर हॉस्पीटल

AIIMS.UDR

प्रताप नगर, बेड़वास, उदयपुर

0294-3536000

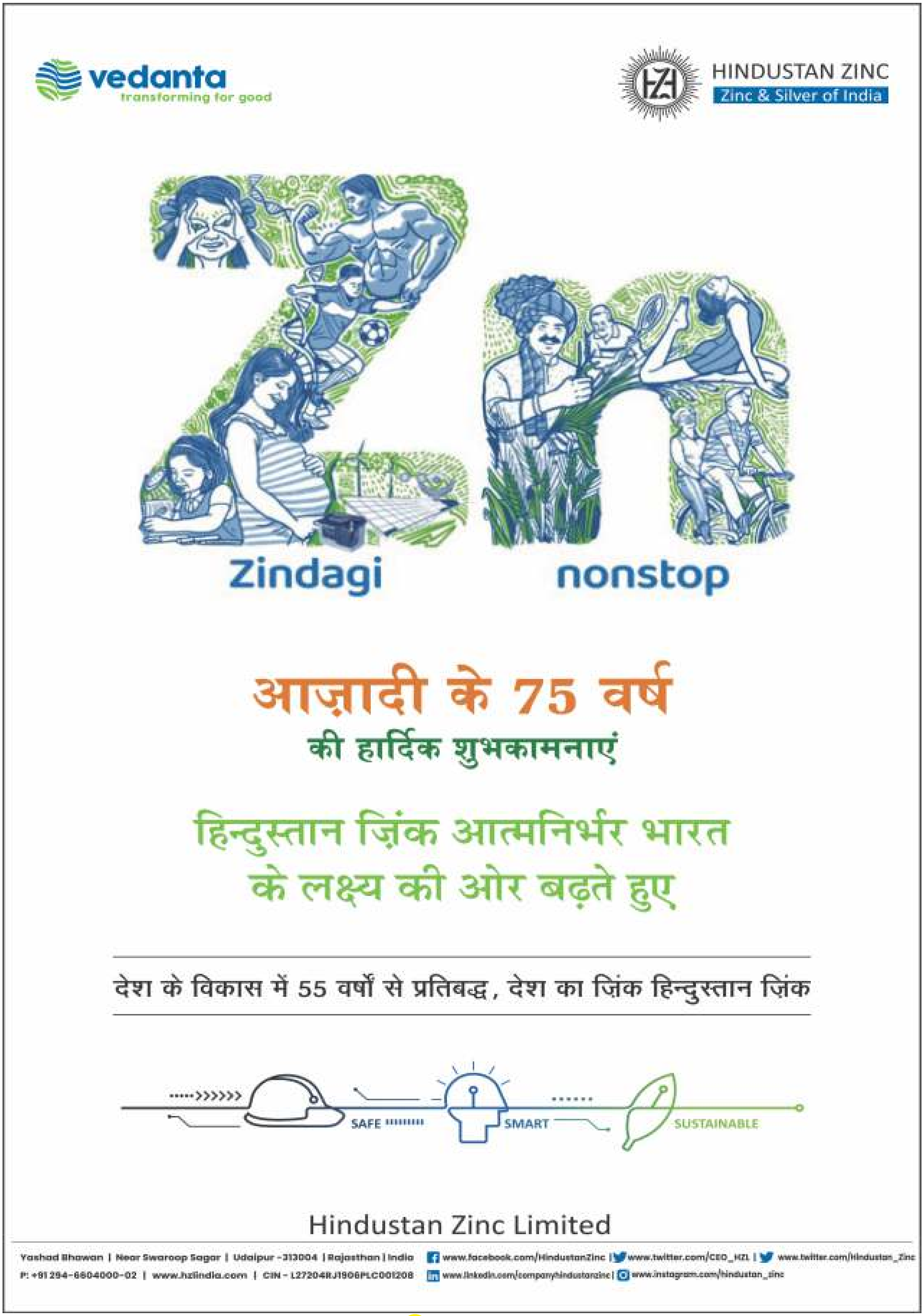
vedanta
transforming for good
HINDUSTAN ZINC
Zinc & Silver of India
Zindagi
nonstop
आज़ादी के 75 वर्ष
की हार्दिक शुभकामनाएं
हिन्दुस्तान ज़िंक आत्मनिर्भर भारत
के लक्ष्य की ओर बढ़ते हुए
देश के विकास में 55 वर्षों से प्रतिबद्ध, देश का ज़िंक हिन्दुस्तान ज़िंक
SAFE
SMART
SUSTAINABLE
Hindustan Zinc Limited
Yashad Bhawan | Near Swaroop Sagar | Udaipur -313004 | Rajasthan | India
P: +91 294-6604000-02 | www.hzlindia.com | CIN - L27204RJ1966PLC001208
www.facebook.com/HindustanZinc | www.twitter.com/CEO_HZL | www.twitter.com/Hindustan_Zinc
www.linkedin.com/company/hindustanzinc | www.instagram.com/hindustan_zinc

Rajasthan State Mines and Minerals Limited, Udaipur, India

(A Premier PSU of Government of Rajasthan)

CIN U14109RJ1949SGC000505 GSTIN 08AAACR7857H1Z0

- India's only producer of SMS grade Limestone and also the largest producer of natural Gypsum and Rock Phosphate.
- Mining Operations: Rock Phosphate (Udaipur), Lignite (Nagaur & Barmer), Limestone (Jaisalmer) and Gypsum in western Rajasthan.
- Green Energy: 106.3 MW Wind Power Project at Jaisalmer & 5 MW Solar Power Plant near Gajner in Bikaner district.
- First PSU in India to earn foreign exchange by trading Carbon Credit in international market.
- RSPCL, a subsidiary of RSMML has been formed for development of Oil & Petroleum sector in Rajasthan.
- RSGL, a JV company with GAIL (India) Ltd. has been formed for developing City Gas Distribution network in Rajasthan.

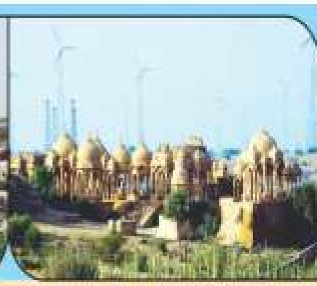

CORPORATE OFFICE

4, Meera Marg, Udaipur - 313 004, Tel. : +91-294-2428763-67, Fax : +91-294-2428770, 2428739, e-mail: info.rsmml@rajasthan.gov.in

REGISTERED OFFICE

C-89/90, Janpath, Lal Kothi Scheme, Jaipur - 302 015, Tel. : 0141-2743734, Fax : 0141-2743735

Visit us at www. rsmm. com